ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

अक्तूबर, 2021

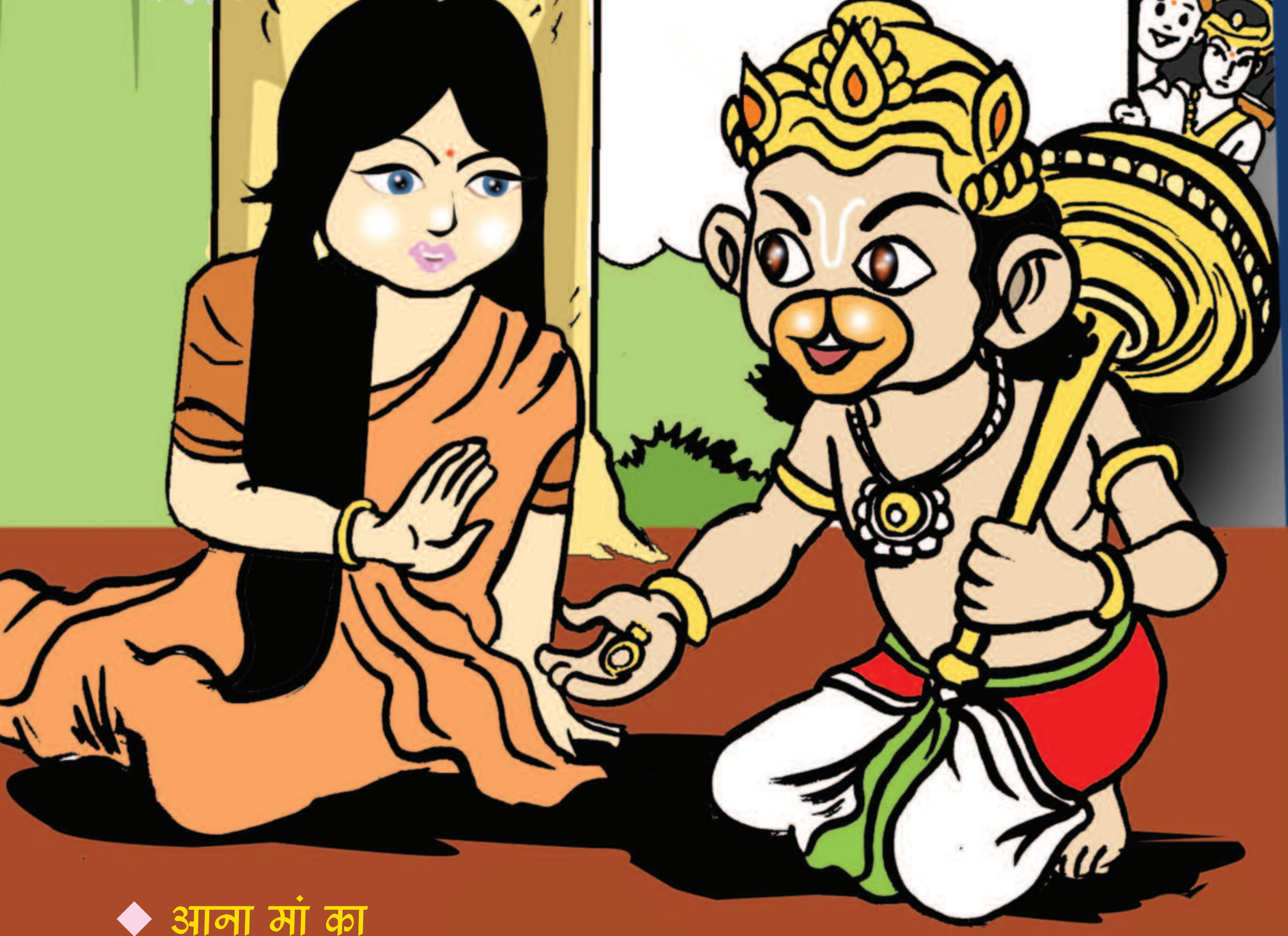

- आना मां का
- दशहरा
- रावण नहीं, राम
- सपनों की मीठी दुनिया
- कुदरत की दोस्ती
- बुज़ुर्गों का सम्मान करें
- डाकिया डाक लाया...

सहयोग राशि
₹ 20/ मात्र

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

अक्तूबर 2021
वर्ष : 1, अंक : 10

इस अंक की रचनाएं

स्पेशल स्टोरीज

बुजुर्गों का सम्मान करें	6
जीवन से दूर रखें हिंसा	14
पशुओ को भी प्यार दें	23
देश के सजग पहरेदार	26
डाकिया डाक लाया...	30
लड़कियां नहीं हैं कम	34
वर्ल्ड फूड डे	40
संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस	43
बाघिन से सामना	45

अन्य

चित्रकथा	44
ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट विश्वकप	50
पुस्तक परिचय	62

बाल मंच

चित्र : 56-58 वन्या चनाना, पूर्वांशी ध्यानी, अयाना ओमर, आंचल, लिली यादव, हुमैद अहमद ,

चिट्ठी : स्विट्जरलैंड से पायस के पाठक अंतरिक्ष की चिट्ठी आई है 59,

कहानी : चिड़ियों की सोसाइटी : वरेण्य 60

स्पेशल टेलेंट : अंकित विश्वकर्मा, भूमि सिंह : 61

कहानियां

अनिल जायसवाल	: आना मां का	8
अकुज	: झूठ बोलना मना है	12
सुमन बाजपेयी	: रावण नहीं, राम	16
अखिलेश श्रीवास्तव चमन	: चमचम खुश है	19
कल्पना कुलश्रेष्ठ	: आधी रात का खेल	24
ज्ञानदेव मुकेश	: कुदरत की दोस्ती	28
रेनू सैनी	: सबसे कठिन काम	32
डॉ. दर्शन सिंह 'आशट'	: मानव को सवाल	36
डॉ. लता अग्रवाल	: पंख टूट गए	38
प्रभा पारीक	: तितली परी	42
मंजुरानी जैन	: अम्मी का साथ	48
मधु गोयल	: देर आए दुरूस्त आए	52
पूरन सरमा	: पतंग के खेल में	54

कविताएं

घमंडीलाल अग्रवाल	: दशहरा	5
डॉ. सुरेन्द्र विक्रम	: सपनों की मीठी दुनिया	11
राम करन	: खीरा-ककड़ी	18
डॉ. पूजा गुप्ता	: अच्छी सेहत खुशियाँ लाए	22
डॉ. अलका अग्रवाल	: चांदी के बाल	27
डॉ. राकेश चक्र	: धरती माता बड़ी उदार	31
डॉ. जियाउर रहमान जाफरी	: बाहर की मत चीज़ें खाओ	35
वसीम अहमद नगरामी	: रसगुल्ले ओ रसगुल्ले	41

त्योहारों का मौसम और हम

भारत में त्योहारों का मौसम शुरू हो चुका है। और यकीनन सबसे ज्यादा खुश आप बच्चे ही होंगे। आपकी खुशी तो दुगनी हो गई है क्योंकि कोरोना के डर के साये से आगे निकलकर अब स्कूल-कॉलेज खोल दिए गए हैं।

स्कूल खुलना कई मामलों में स्वागत योग्य है। स्कूली जीवन पूरी जिंदगी याद रहता है। ऐसे में बच्चों की जिंदगी से दो साल का स्कूली जीवन छीन लिया जाना बहुत कष्टकारी था। खैर अब मान लेना चाहिए कि दुख भरे दिन बीते रे....।

अक्तूबर से नान स्टॉप पूजा-पाठ और एंटरटेनमेंट का सीजन शुरू हो रहा है। नवरात्रि, रामलीला, दशहरा, काली पूजा, दीपावली, छठ से होते हुए दिसंबर में क्रिसमस और न्यू ईयर इव तक मजे ही मजे।

पर इस मजे में अपनी पढ़ाई की स्थिति को भी तोल लेना बच्चो। डेढ़ साल से ऑनलाइन पढ़ाई के झुनझुने ने बहुत बच्चों और उनके पेरेंट्स के मन में यह यह बैठा दिया है कि यह सिस्टम सबसे बढ़िया है। पर हकीकत किसे नहीं पता? किताब-टैब कंप्यूटर खोलकर बच्चों को पढ़ाते कुकुरमुत्तों की तरह उगे नए टीचर और आधुनिक गैजेट्स के सहारे कभी-कभी पेपर देकर अच्छे अंक पाकर आत्मविश्वास के गुब्बारे से भरे बच्चे। जब यह बुलबुला फूटेगा, तो सबको तकलीफ होगी। हकीकत की पढ़ाई ही फिलहाल सबसे बढ़िया पढ़ाई है और सब में समता का भाव लाने में सक्षम है।

इस महीने बहुत सारे इंटरनेशनल डे हैं। पहली तारीख को ही 'इंटरनेशनल डे फॉर ओल्डर पर्सन्स' है। हम सब जानते हैं कि आम घरों में बुजुर्गों की क्या हालत होती है। जबकि उनके अनुभव के सामने सारी दुनिया छोटी पड़ जाए। बुजुर्गों का सम्मान तो रामायण काल से हो रहा है। रावण से युद्ध जीतने में हनुमान जी का बड़ा हाथ था, तो उन्हें उनकी शक्ति का अहसास दिलाने वाले राम जी की सेना के सबसे बुजुर्ग जामवंत ही थे। आज भी अधिकांश बड़े पदों पर बुजुर्ग ही होते हैं और एक तरफ हम हैं कि अपने घरों में बुजुर्गों को सम्मान भरा जीवन नहीं दे पाते।

यह मानवता के लिए धब्बा है कि हमें आज इक्कीसवीं सदी में भी 'इंटरनेशनल डे फॉर ओल्डर पर्सन्स', 'इंटरनेशनल डे फॉर गर्ल चाइल्ड' और जानवरों को बचाने के लिए 'वर्ल्ड एनिमल डे' मनाकर लोगों को इनके बारे में बताने की जरूरत पड़ती है। क्या हम सब सच में इतने सेल्फ सेंटर्ड और पत्थरदिल हो गए हैं कि यह सब खुद अपने जीवन में नहीं कर सकते?

बस बच्चों, तुम लोग सबको सम्मान देना और अपने जीवन और समाज को उस ऊंचाई पर ले जाना कि हम तथाकथित बड़ों को अपने बनाए इस दम्भी समाज और नकली जीवन पर कुछ तो शर्म आए।

अनिल जायसवाल

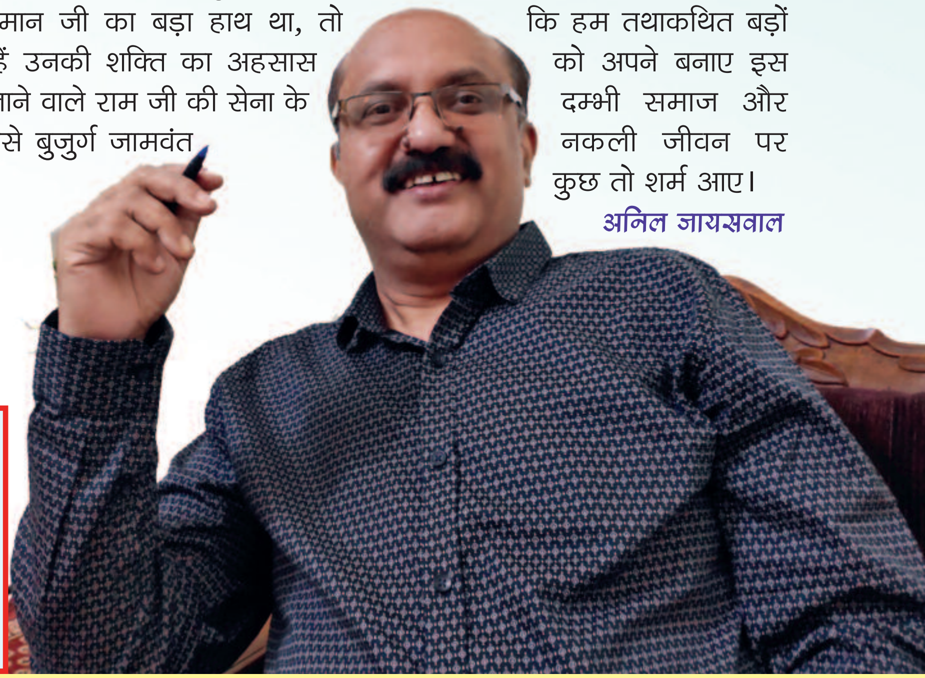

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो कृपया पढ़ने के बाद इसका 20 रुपए शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका पायस

संपादक : अनिल जायसवाल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

- लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
- ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : PAYAS MAGAZINE
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। अब पायस का नया अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. मोनिका अग्रवाल
2. दीप्ति मित्तल
3. जयप्रकाश सिंह बंधु
4. डॉ. प्रीति प्रवीण खरे
5. डॉ. प्रभा खन्ना
6. डॉ. मो. अरशद खान

एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

भुगतान करना चाहें, तो

1 प्रति : 20 रुपए, एक वर्ष : 240 रुपए

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA

Anil Kumar Jaiswal

S/A no- 20155811729

Ifsc code SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609

PHONEPE : 9810556533

GOOGLE PAY : 9810556533

ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email : **payasmagazine@gmail.com**

दशहरा

मुसकाता हर बार दशहरा,
है आता हर बार दशहरा।
बच्चों के मन में ख़ुशियों को,
भर लाता हर बार दशहरा।
बम, पटाखे, आतिशबाज़ी,
छुड़वाता हर बार दशहरा।
जगह-जगह रावण के पुतले,
जलवाता हर बार दशहरा।
सच्चाई को विजय मिली है,
बतलाता हर बार दशहरा।
झूठों का मुँह काला होता,
दोहराता हर बार दशहरा।
आदर्शों को तुम अपनाओ,
सिखलाता हर बार दशहरा।
बात पते की कहकर टा-टा,
कर जाता हर बार दशहरा।

अपने लेखक को जानिए

घमंडीलाल अग्रवाल : सेवानिवृत्त अध्यापक। 1970 से लेखन। पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन। दूरदर्शन व आकाशवाणी से प्रसारण। पाठ्यक्रम में बाल रचनाएं शामिल। 108 पुस्तकें प्रकाशित। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत।

1 अक्तूबर : इंटरनेशनल डे फॉर ओल्डर पर्सन्स

बुजुर्गों का सम्मान करें

दुनिया बदल रही है। समय के साथ हर तरह की सुविधाओं का विस्तार हो रहा है। चाहे चिकित्सा की सुविधा हो या खानपान की, इसका सबसे ज्यादा फायदा हुआ है हमारे बुजुर्गों को। इनकी उम्र पहले से बढ़ गई है। अब वे पहले से स्वस्थ होकर अपने जीवन गुजारते हैं।

समाज में बुजुर्गों की अहमियत हमेशा रहेगी और वही समाज अच्छा और जीवंत माना जाता है, जो अपने बुजुर्गों का सम्मान करता है। जहां यह एक अच्छी बात है, वहीं बुजुर्गों की तादाद बढ़ने से उनके जीवन पर कष्ट के साए बढ़ रहे हैं। आज भी दुनिया के अधिकांश देश या तो गरीब हैं या विकासशील। इन देशों में जब बच्चों और युवाओं का ही जीवन सुखी नहीं है, तो बुजुर्गों के जीवन सुखी होने की उम्मीद हम कैसे करें।

आज आधुनिक सुख-सुविधाओं ने बुजुर्गों की उम्र तो बढ़ा दी, परंतु उनके खुश रहकर अपना जीवन पूर्ण करने के साधनों में कमी आई है। इस कारण बहुत सारे देशों में बुजुर्गों का जीवन बहुत ही कष्टमय है।

विश्व में बुजुर्गों के प्रति होने वाले दुर्व्यवहार और अन्याय को रोकने और लोगों में जागरुकता फैलाने के लिए 14 दिसंबर 1990 को यह निर्णय लिया गया कि 1 अक्तूबर को 'इंटरनेशनल डे फॉर ओल्डर पर्सन्स' मनाया जाएगा। 1982 के 'वियना इंटरनेशनल प्लान ऑफ एक्शन ऑन एजिंग' में हुई चर्चा के अनुसार बुजुर्गों की देखभाल और उनके प्रति लोगों को जागरूक करने के लिए यह दिन निश्चित किया गया।

हाल के वर्षों में दुनिया में वृद्धों की तादाद बहुत बढ़ी है। सन 2019 में पूरी दुनिया में करीब 70 करोड़ से ज्यादा ऐसे बुजुर्ग थे, जिनकी उम्र 65 साल से ज्यादा थी। इनमें से करीब आधे एशिया के थे और एशिया आमतौर पर विकासशील या गरीब महाद्वीप है। इतने ही नहीं, जीने के बेहतर अवसर के कारण सन 2050 तक बुजुर्गों की संख्या एक अरब 50 करोड़ तक पहुंचने की संभावना है।

इस तरह लोगों की बढ़ती हुई उम्र भी अब एक वैश्विक समस्या का रूप ले रही हैं। कारण यह है कि पृथ्वी पर रहने की जगह और खाना सीमित है, परंतु लोगों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है। बहुत सारे देशों में बुजुर्गों को नकारा या घर में बैठने लायक माना जाता है। खास तौर पर भारत जैसे देश में 60 साल की उम्र के बाद सारे बूढ़ों को रिटायर्ड मान लिया जाता है। ना उनके लिए बाजार में नौकरी के अवसर हैं, ना

अपना काम करने के लिए उनके पास धन है और ना ही इन्हें काम देने के लिए लोगों के पास मन है। ऐसे में ये बुजुर्ग या तो अपनी पहले की कमाई पर जीवन को जीते हैं अथवा अपने बच्चों पर आश्रित हो जाते हैं। ऐसे में घर में मन-मुटाव बढ़ने की पूरी संभावना होती है।

आज जरूरत है कि जिस तरह हम तुम जैसे बच्चों की देखभाल करते हैं, तुम्हारे स्वर्णिम भविष्य के लिए तुम पर अपना सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार रहते हैं, उसी तरह का रवैया हम लोग बुजुर्गों के प्रति भी अपनाएं। बुजुर्ग हमारे लिए बोझ ना बनें। हम उन्हें एहसास दिलाएं कि उनकी उम्र हुई है, तो उनके पास अनुभव का भी खजाना है, तो उस खजाने का लाभ परिवार के साथ साथ देश को भी उठाना चाहिए। और अब ऐसा निजी क्षेत्रों के साथ सरकारी बड़े पदों पर हो भी रहा है। बड़े-बड़े पदों पर अब रिटायर्ड, पर अपने क्षेत्र के माहिर बुजुर्गों को सम्मान के साथ नौकरी पर रखा जा रहा है।

सबसे बड़ी आवश्यकता यह है कि हम बुजुर्गों के मन में हम यह बात ना आने दें कि अब वे बुजुर्ग होकर घर के लिए एक बोझ बन गए हैं। उनका व्यापक अनुभव कई क्षेत्रों में आज भी युवाओं को मात देता है। आज जरूरत यह है कि हम यह देखें कि किस तरह हम उनका अनुभव का लाभ उठा सकते हैं, जिससे

संबंधित घर को आमदनी भी हो और देश को उनके अनुभव का लाभ भी मिले।

तुम बच्चों की भी जिम्मेदारी है

बच्चों, दादा-दादी, नाना-नानी का प्यार हर किसी को नहीं मिल पाता। अगर तुम इतने खुशनसीब हो, तो अपने दादा-दादी, नाना-नानी का घर में खूब खयाल रखो, उनके साथ जीवन बिताओ, उनके साथ खेलो, घूमो। उनके किस्से सुनो। तुम्हें बहुत अच्छा लगेगा। अगर तुम्हारे मम्मी-डैडी व्यस्त रहते हैं, तो तुम दादा-दादी, नाना-नानी को अकेलापन महसूस न होने दो। उन्हें इस उम्र में प्यार और देखभाल की ही जरूरत होती है। और यह काम तुम से अच्छा कौन कर सकता है।

क्या आप जानते हैं

- आज दुनिया में 60 साल से अधिक उम्र के लोगों की संख्या 5 साल से कम उम्र के बच्चों से ज्यादा है।
- 2050 तक दुनिया भर में बुजुर्गों की संख्या 150 करोड़ से अधिक हो जाएगी और इनमें से 80% प्रतिशत बुजुर्ग गरीब या अविकसित देशों के होंगे।
- गरीब और अशिक्षित देशों में स्वास्थ्य संबंधी सुविधाएं कम होती हैं अतः यहां के हर 2 में से एक बुजुर्ग को गंभीर बीमारी के खतरे हैं।

2021 का थीम

आने वाला समय पूरी तरह डिजिटल होगा। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र संघ ने घोषणा की है कि 2021 का साल बुजुर्गों के लिए 'डिजिटल इक्विटी फॉर ऑल एज' के नाम से मनाया जाएगा।

आज भी बहुत सारे देश डिजिटली पिछड़े हुए हैं। संयुक्त राष्ट्र चाहता है कि इन देशों में डिजिटल क्रांति हो और साथ ही हर बुजुर्ग को डिजिटल रूप से आत्मनिर्भर बनाया जाए।

इसका फायदा यह होगा कि वे पूरी दुनिया से जुड़ेंगे और घर बैठे अपने बहुत सारे काम निपटा सकेंगे। उनके लिए रोजगार के अवसर भी खुलेंगे।

आना मां का

अनिल जायसवाल

बड़े दिनों बाद हर्ष के दादा और दादी जी उसके पास कोलकाता रहने आए थे। दादा जी शुरू से कोलकाता में ही रहे थे। पर नौकरी के सिलसिले में वह कोलकाता छोड़कर दिल्ली जा बसे, तो फिर कोलकाता छूट गया।

अब हर्ष के पापा की नौकरी कोलकाता में ही लग गई थी। हर्ष को कोलकाता आए चार साल हो गए थे, पर दादा जी पहली बार उनके पास आए थे।

हर्ष बहुत खुश था, वह बार-बार दादाजी से अपने स्कूल और कोलकाता की दुर्गा पूजा की बातें शेयर कर रहा था। दादा जी मुसकराते हुए सुन रहे थे।

"और पता है, दादा जी, पिछले साल मैं अपने सभी दोस्तों के साथ पूरी रात पंडालों में घूमता रहा। हम सुबह घर लौटे थे।" हर्ष ने बड़े उत्साह से बताया।

"अरे वाह, मेरा पोता तो बड़ा समझदार हो गया है। पर तुम्हें डर नहीं लगा, कहीं दोस्तों से बिछड़ जाते तो?" दादी जी ने पूछा।

"यह स्मार्ट फीचर फोन कब काम आता?" हर्ष ने उत्साह से अपना फोन दिखाया।

"अच्छा दादा जी, आप कभी अपने दोस्तों के साथ ऐसे घूमे थे?" अचानक हर्ष पूछ बैठा।

"हां पापा, आपका भी तो बचपन कोलकाता में गुजरा है।" हर्ष के पापा ने भी अपने पिता से कहा।

हर्ष के दादा जी यादों में खो गए। फिर बोले, "वो जमाना अजब था। न सेलफोन, न ई-वॉलेट न प्रीपेड टैक्सी। फिर भी हम कितना खुश होकर दुर्गा पूजा मनाते थे। एक दुर्गा पूजा तो भूले न भूलता है। तब मुझे मां मिली थीं। साक्षात मां।"

"क्या हुआ था पापा जी? बताइए ना।" हर्ष की मम्मी उत्सुकता से बोलीं। दादी भी बैठकर सुन रही थीं।

तो सुनो, बच्चो। कहते हुए दादा जी यादों की दरिया में गोता लगाने लगे।

यह बात है 1975 के आसपास की। मैं रहा होऊंगा करीब 8 या 9 साल का। हमारे कोलकाता में नवरात्रि के बदले दुर्गा पूजा नाम प्रचलित है।

चित्र : इंदिरा

वहां मुख्य त्योहार सप्तमी, अष्टमी और नवमी होता है। दशमी को मां दुर्गा को विदा करते हैं। प्रतिमाओं को इस दिन जल समाधि दी जाती है।

तुम सब तो अब जानते ही हो, कोलकाता में हर गली-मोहल्ले, अधिकतर पार्क और मुख्य सड़कों पर भव्य पंडाल बनाए जाते हैं। वहां होड़ होती है, बढ़िया पंडाल बनाने और शानदार प्रतिमा लाने की। वहां प्रतिमाएं मुख्य रूप से पुआल और उस पर मिट्टी का लेप करके बनाए जाते हैं। पर उन दिनों प्रतिमा में अनोखापन दिखाने के लिए दाल, चावल, बटन, सीप इत्यादि से भी प्रतिमाओं का निर्माण होता था।

मैं कालीघाट में रहता था। स्कूल से आकर मैं घंटो वहां के कुमारटोली में खड़े होकर बन रही प्रतिमाओं को निहारता था। वहां बनने वाली प्रतिमाएं विश्वविख्यात हैं। कब मैं उन प्रतिमाओं को निहारते-निहारते माता का भक्त बन गया, मुझे पता ही नहीं चला। कई बार अनायास ही वहां के कलाकारों की सहायता करने लगता। मेरी सब से अच्छी जान-पहचान हो गई।

एक बार दुर्गा पूजा पर वहां के एक कलाकार ने मुझे माता की छोटी सी मूर्ति भेंट की। मैं डर के मारे मूर्ति को घर लेकर नहीं गया कि पिता जी जब जानेंगे कि मैं मूर्ति बनते देखने जाता हूं, तो बहुत डांट पड़ेगी। मैंने अपने मोहल्ले के पंडाल में ही मूर्ति की स्थापना करा दी।

हम पांच या छह बच्चों का समूह था, जो शाम को 7 बजे के आसपास घर से निकलता था। हम पूरी रात घूमते थे। भूख लगी, तो समोसा और पूरी-सब्जी जिसे बंगाल में सिंगाड़ा और लुची-आलूदम कहते हैं, हमारा आहार होता था। एक पंडाल से दूसरे, दूसरे से तीसरे, करते-करते हम दसियों किलोमीटर दूर चले जाते थे।

सबसे ज्यादा ध्यान रखना होता था, ग्रुप से न बिछड़ने पर। जो बिछड़ा, उसके लिए उत्सव वहीं समाप्त हो जाता था। कारण यह था कि इतनी भीड़ होती थी कि एक दूसरे को ढूंढ़ना असंभव हो जाता था। फिर अकेले घूमने की हिम्मत नहीं होती थी।

उस साल मेरे साथ ऐसा ही हुआ। कुछ देर साथ घूमने के बाद एक पंडाल में भीड़ का रेला बेकाबू हुआ और अचानक एंट्री रोक दी गई। मेरे साथी पीछे रह गए और मुझे भीड़ के साथ आगे बढ़ना पड़ा। प्रतिमा दर्शन

के बाद मैं बाहर निकलकर दोस्तों का इंतजार करता रहा। पर दो घंटे बाद भी कोई न दिखा। कारण मैं उन्हें एग्जिट गेट पर ढूंढ़ रहा था और वे मुझे एंट्री गेट पर तलाश रहे थे।

मैं घबरा गया। घर कैसे जाऊंगा, समझ नहीं आ रहा था। मैं फिर पंडाल में घुस गया और मुंह लटकाकर एक कोने में बैठ गया।

“अरे अमोल। यहां मुंह लटकाए क्यों बैठे हो? घर नहीं जाना तुम्हें?” अचानक एक लड़की के मुंह से अपने नाम के साथ सवाल सुनकर मैं चौंक गया।

सामने एक मेरी ही उम्र की लड़की खड़ी थी।

“तुम मुझे जानती हो?” मैंने आश्चर्य से पूछा।

“हां, मैं भी तो कालीघाट ही रहती हूं। तुम्हें मूर्तिवालों के पास कई बार देखा है।” उस लड़की ने हंसते हुए बताया।

“मैं अपने दोस्तों से बिछड़ गया हूं। घर कैसे जाऊं, समझ नहीं आता।” मैं चिंतित स्वर में बोला।

“बस! मुझे रास्ता मालूम है। मैं तो घर ही जा रही हूं। मेरे साथ चलो।” कहकर वह लड़की चल पड़ी।

पता नहीं क्या हुआ, मैं उसके पीछे-पीछे चल पड़ा। वह मुझे देखकर मुसकाई। फिर हम बातें करते-करते कब घर तक पहुंच गए, मुझे पता भी नहीं चला।

घर के पास के पंडाल पर आकर वह रुक गई। फिर बोली, “अब तुम घर जाओ।” कहकर वह तेजी से पंडाल में चली गई। मैं घर चला आया।

सुबह जब दोस्त मुंह लटकाए लौटे, तो मुझे देखकर उन्हें तसल्ली मिली।

अगले दिन हम सबने फिर घूमने का प्रोग्राम बनाया। शाम को निकलने से पहले मैं अपने पंडाल में गया। वहां दर्शन के बाद मैंने अपनी प्रतिमा के दर्शन किए। उस पर निगाह पड़ते ही मैं सन्न रह गया। उस प्रतिमा की सूरत बिल्कुल उस लड़की से मिलती थी, जिसने मुझे घर पहुंचाया था।”

“क्या!” सब के मुंह खुले के खुले रह गए।

“हां, देखकर मैं वहीं मां की चरणों में गिर पड़ा। मुझे यह सोचकर रोमांच हो रहा था कि अपने भक्त को घर पहुंचाने खुद देवी मां आई थीं।” दादा जी गर्व से बोले।

“फिर क्या हुआ?” सब आगे की बात जानने को उत्सुक थे।

“अब मेरी मां के प्रति श्रद्धा और बढ़ गई। मैं अब हर दूसरे दिन मूर्तियों को बनते देखने जाने लगा।”

"अब आगे की कहानी मैं सुनाती हूं।" कहते हुए दादी मुसकाईं, "ये ऐसे ही एक दिन मूर्ति वालों के पास खड़े थे कि इन्हें फिर वही लड़की वहां दिखाई दी। तुम्हारे दादाजी तो उसे देखते ही श्रद्धा से वहीं जमीन पर लोट गए। यह देख लड़की भागकर एक घर में घुस गई। इन्हें जमीन पर पड़े देखकर वहां के मूर्तिकार गणेश ने आकर इन्हें उठाया। इनकी तो आंखों से झर-झर आंसू बह रहे थे।

गणेश के पूछने पर इन्होंने पूजा की रात वाली घटना बताई।

सुनकर गणेश मूर्तिकार बोला, "तुम्हारी दुर्गा मां के तो मैं रोज दर्शन करता हूं। ठहरो, अभी तुम्हें मिलवाता हूं।" कहकर गणेश ने आवाज लगाई, तो वही लड़की शरमाती हुई झोंपड़ी से बाहर निकली।

गणेश बोला, "यह मेरी बिटिया दुर्गा है। इसीलिए मेरी प्रतिमाओं में कई बार इसका चेहरा बन जाता है।"

लड़की शरमाती हुई खड़ी रही और तुम्हारे दादा जी झेंपते हुए खड़े रहे। फिर वह घर लौटे।

"अरे..., मतलब दुर्गा मां नहीं, दुर्गा नाम की लड़की ने दादा जी की सहायता की थी।" हर्ष निराश होकर बोला।

"पापा, आप फिर उस लड़की दुर्गा से कभी मिले ?" बहू ने उत्सुकता से पूछा।

"बेटे, दुर्गा नाम ही ऐसा है कि वह कभी भी अपने भक्तों को नहीं छोड़तीं।" कहते हुए दादा जी ने दादी की तरफ देखते हुए बहू से पूछा, "तुम्हारी सास का नाम क्या है ?"

जवाब हर्ष ने दिया, "दादी का नाम तो दुर्गावती...ओ माई गॉड, यानी वह लड़की दादी थीं ?" कहते हुए हर्ष आश्चर्य से चिल्लाया।

"हां। वह लड़की मैं ही थी।" कहते हुए दादी लजाईं। फिर धीरे से बोलीं, "पर इस पूरी कहानी का सबसे एडवेंचरस पार्ट तो बाकी है।"

"वो क्या मां ?" इस बार हर्ष के पापा ने उत्सुकता से पूछा।

"वो ये बेटा कि इन्होंने मुझे देखा, मेरे साथ घर लौटे। सुनकर मैं अपने पिता गणेश और मां के साथ खूब हंसी थी।"

"क्यों मम्मी ?" बहू ने आश्चर्य से पूछा।

"क्योंकि उस रात तुम्हारी मम्मी जी घूमने गई ही नहीं थीं। वह तो अपने घर में बीमार पड़ी थीं।" दादा जी ने बताया।

"तो... तो...।" हर्ष ने कुछ कहना चाहा, पर उसकी आवाज नहीं निकली।

"बेटा, यह सब चमत्कार नहीं, केवल आस्था का विषय है। जब मन में किसी के प्रति गहन आस्था हो, तो सब रास्ते निकल आते हैं और हम ऊपर वाले को धन्यवाद देते हैं। किसी ने तो घर पहुंचने में मेरी सहायता की थी। अब वह साक्षात दुर्गा खुद थीं या मैं अपनी सहायता करने वाली में दुर्गा मां का स्वरूप देख रहा था, कह नहीं सकता।"

कहते हुए दादा जी ने मां दुर्गा की तसवीर की ओर देखते हुए हाथ जोड़े। बाकियों ने भी श्रद्धा से हाथ जोड़ लिए।

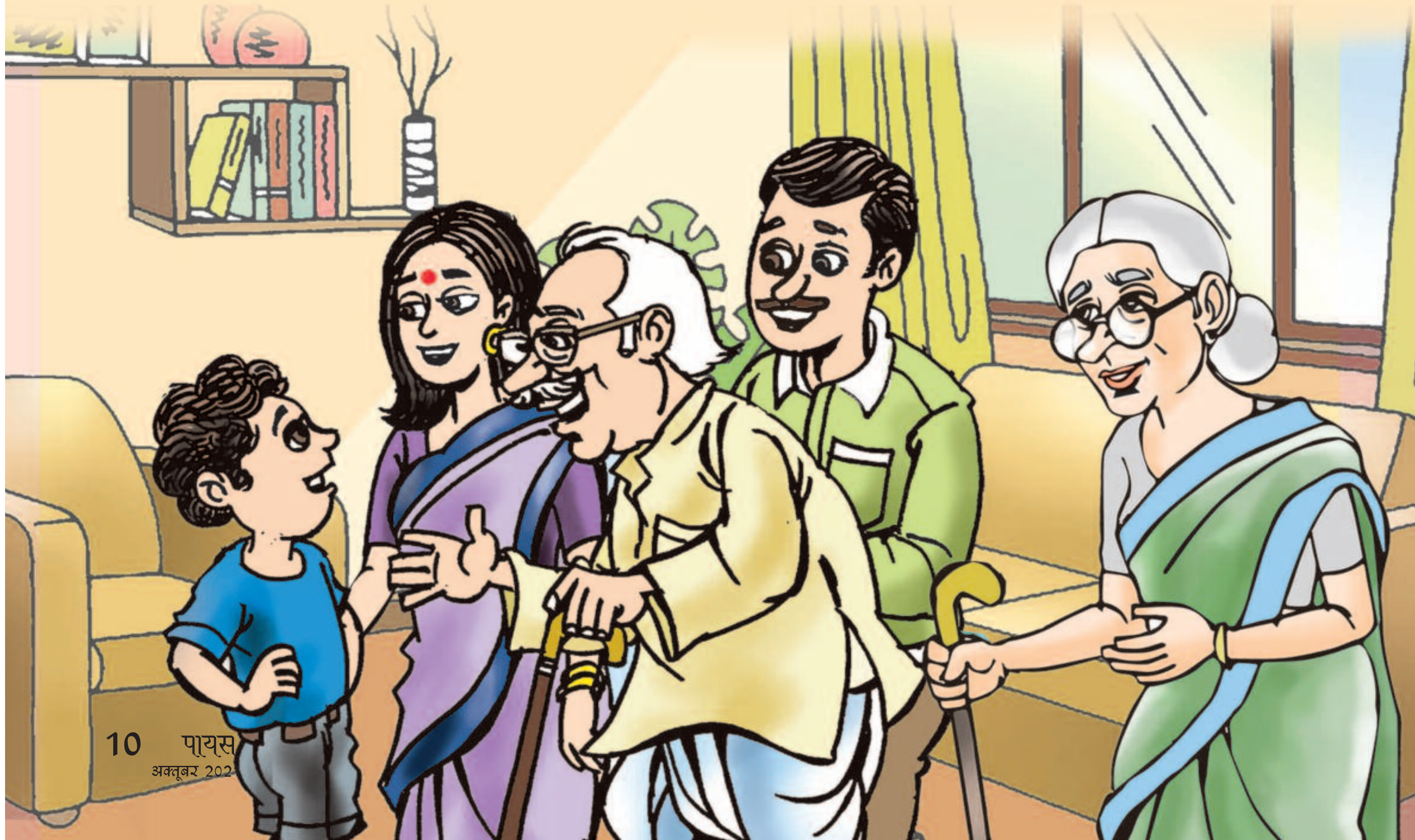

सपनों की मीठी दुनिया

खा लेता मैं वो सब चीजें
जो-जो मम्मी देती हैं।
केला खा पानी पीने पर
खबर हमारी लेती हैं।
आठ बजे मैं ब्रश कर लेता
बिस्कुट खाकर पीता दूध।
लंचबाक्स में भरकर देतीं
नानी मुझको चीजें खूब।
रिक्शेवाले भैया आकर
जब आवाज लगाते हैं।

मैं रहता तैयार समय से
विद्यालय वे पहुँचाते हैं।
विद्यालय से वापस आकर
भिण्डी के संग फुल्के खाता।
चावल दाल मिलाकर खाने
में भी मुझे मजा है आता।
कभी-कभी नानी माँ हलवा
भी देती हैं खाने को।
जाड़े में उबाल कर रखतीं
ढेर मटर के दाने को।

रोज रात में पूछा करतीं
क्या खाओगे आयु बेटा।
मैं जो कहता वही बनातीं
मैं रहता हूँ पलंग पर लेटा।
खा पीकर मम्मी जी के संग
बिस्तर में मैं सो जाता हूँ।
रंग-बिरंगे सपनों की
मीठी दुनिया में खो जाता हूँ।

चित्र : सुशील दोषी

अपने लेखक को जानिए

डा. सुरेन्द्र विक्रम : विगत 40 वर्षों से बाल साहित्य सृजन। अब तक 24 पुस्तकें प्रकाशित, एनसीईआरटी सहित अनेक प्रकाशकों की पाठ्य-पुस्तकों में कविताएं संकलित। संप्रति : एसो. प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज, लखनऊ (उ.प्र.)

झूठ बोलना मना है

अकुज

जब भी महात्मा गांधी जी को मौका मिलता था, वह अपने साबरमती आश्रम में रहने आ जाते थे। रोज कोई न कोई उनसे मिलने आश्रम में आता रहता था। कुछ लोग उनसे मिलकर चले जाते थे, तो कुछ आश्रम में रहकर ही गांधी से प्रेरणा पाते और आश्रमवासियों की सेवा करते।

ऐसे ही एक बार एक नवयुवक गांधी जी से मिलने आया। थोड़े दिनों पहले ही उसने कॉलेज की परीक्षा पास की थी। नौकरी में जाने से पहले उसने सोचा कि बापू से आशीर्वाद प्राप्त किया जाए और भविष्य के लिए कुछ प्रेरणा ली जाए।

गांधीजी उस युवक से मिले। उनसे मिलकर युवक बहुत प्रभावित हुआ। उसे आश्रम इतना पसंद आया कि उसने गांधी जी से आज्ञा मांगी, "कुछ दिन मैं इस आश्रम में रहकर लोगों की सेवा करना चाहता हूं। मुझे यह रहने की अनुमति दे दीजिए।"

सुनकर गांधी जी को अच्छा लगा, फिर वह गंभीर हो गए। उन्होंने युवक को समझाया, "इस आश्रम में रहना किसी तपस्या से कम नहीं। यहां सादा भोजन, नियम में बंधा जीवन और झूठ और फरेब से दूर सच्चे अर्थों में तपस्वी जीवन जीना पड़ता है। क्या तुम ऐसा कर पाओगे?"

युवक ने कुछ गर्व और अभिमान से भरकर कहा," क्यों नहीं, अब मैं आपका शिष्य हूं। आपको मुझसे कभी कोई शिकायत नहीं होगी।"

गांधी जी ने कुछ नहीं कहा और

चित्र : सुशील दोषी

उसे आश्रम में रहने की आज्ञा दे दी।

अब युवक आश्रम में ही रहने लगा और सबके साथ मिलकर आश्रम हर काम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता। आश्रम में हर उम्र के लोग रहते थे। उनके साथ बच्चे भी होते थे और उन बच्चों की चहल-पहल से आश्रम आबाद रहता था।

आश्रम में युवक ने एक बालिका को देखा। वह हमेशा खुश रहती और हंसी-खुशी सारे काम करती, समय से प्रार्थना सभा में भाग लेती। सब उस बच्ची की तारीफ करते।

एक दिन युवक आश्रम का काम कर रहा था। तभी वह लड़की आ गई। उस समय युवक के हाथ में एक नीबू था। बालिका की इच्छा नीबू पानी पीने की थी। उसने युवक से नीबू मांगा।

अब आश्रम के नियम के हिसाब से भला वह निजी प्रयोग के लिए उस बालिका को नीबू कैसे देता? वह आनाकानी करने लगा। बच्ची तो बच्ची ठहरी, वह नीबू लेने पर अड़ गई व कूद-कूदकर उसके हाथ से नीबू छीनने का प्रयास करने लगी।

दरअसल वह युवक आश्रम के एक मरीज के लिए नीबू लेकर जा रहा था, इसलिए चाहते हुए भी वह उस बच्ची की इच्छा पूरी नहीं कर सकता था।

अब नीबू ना पाने से बच्ची रोने लगी। बच्ची को बहलाने के लिए युवक ने जादूगर की तरह हाथ घुमाया और बोला, "अरे, नीबू तो मैंने नदी में फेंक दिया।" जबकि वास्तव में उसने हाथ की सफाई से नीबू को अपनी जेब में रख लिया था।

भोली-भाली लड़की ने उसकी बात को सच माना क्योंकि आश्रम में कभी कोई झूठ नहीं बोलता था। नीबू ना रहने पर वह लड़की शांत हो गई और फिर से खेलने-कूदने लगी।

अब युवक को उस मरीज की याद आई, तो वह आश्रम के अंदर उसे नीबू देने जाने लगा। लड़की भी उसके पीछे-पीछे थी।

गरमी के दिन थे और युवक को पसीना आ रहा था। परेशान होकर उसने पसीना पोछने के लिए अपनी जेब से रुमाल निकाला। उसके दुर्भाग्य से रुमाल के साथ नीबू भी बाहर निकलकर जमीन पर गिर पड़ा।

लड़की ने नीबू को देखा, तो खुश होने के बदले नाराज हो गई। वह बोली, "तुमने मुझसे झूठ बोला था कि नीबू नदी में गिर गया। आश्रम में रहकर भी तुम झूठ बोलते हो। मैं बापू से कहूंगी कि तुम झूठे हो।" सुनकर युवक शर्मिंदा हो गया

शाम की प्रार्थना से पहले लड़की ने सचमुच गांधी जी को सारी घटना बता दी। प्रार्थना सभा खत्म हुई, तो गांधी जी ने युवक को बुलाया और घटना के बारे में पूछा। युवक ने जो हुआ था, सब सच-सच उन्हें बता दिया।

गांधीजी की समझ में सारी बात आ गई कि युवक ने उस लड़की की जिद से पीछा छुड़ाने के लिए झूठ बोला था। परंतु झूठ तो झूठ है।

गांधी जी ने उस युवक को डांटा और बोले, "चाहे कैसी भी परिस्थिति हो, तुम्हें झूठ का सहारा नहीं लेना चाहिए। तुमने मजाक में ही सही, झूठ बोला और झूठ बोलना इस आश्रम में मना है। हंसी-मजाक में झूठ बोलते-बोलते एक दिन झूठ बोलना आदत में शामिल हो सकता हैं। इसलिए हमेशा सच बोलो। सामने वाले का दिल थोड़ी देर के लिए दुखेगा, परंतु तुम्हारा दिल साफ रहेगा।"

युवक की समझ में अपनी गलती आ गई। उसने बापू से वही माफी मांगी और वादा किया कि चाहे जो हो, अब वह कभी झूठ नहीं बोलेगा ✪

अपना योगदान दें

पायस बच्चों को ध्यान में रखकर पायस का प्रकाशन रंगीन चित्रों के साथ आप सबके सहयोग से हो पा रहा है।

रचना ही नहीं,
आर्थिक योगदान देकर भी
इस प्रयास में सहयोगी बनें

2 अक्तूबर : अहिंसा दिवस

जीवन से दूर रखें हिंसा

2 अक्तूबर गांधी जी का जन्मदिन है। उस गांधी जी का, जिन्होंने पूरी उम्र हिंसा का विरोध किया। भारत जैसे विशाल देश को अंग्रेजों की गुलामी से छुड़ाने में उन्होंने किसी प्रकार की हिंसा का समर्थन नहीं किया। उनकी अहिंसा की नीति से भारत को आजादी मिली।

पर सबसे बड़ी त्रासदी यह है कि अहिंसा के पुजारी की हत्या हुई। जिस महान इंसान ने पूरी जिंदगी हथियार नहीं उठाया, उसका शरीर गोलियों से छलनी कर दिया गया।

इसी महान आत्मा की याद में संयुक्त राष्ट्र संघ ने 2 अक्तूबर को पूरी दुनिया के लिए 'से नो टू वॉयलेंस' मतलब 'हिंसा को ना कहिए' दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया। हालांकि यह फैसला लेने बहुत देर लगी। 15 जून 2007 को यह प्रस्ताव पास किया गया।

इस दिन को मनाने का मुख्य उद्देश्य इंसान को हिंसा न करने के लिए समझाना तो है ही, साथ में यह भी है कि कोई अगर कोई आप से हिंसा करता है, तो भी उसका जवाब हिंसा से ना देकर अहिंसा से ही दें। उसका विरोध कर उसे बदलने पर मजबूर करें, जो गांधी जी करते थे।

आज सारा विश्व हिंसा की चपेट में है। शायद ही कोई देश हो, जो अभी हिंसा का शिकार ना हो। हालांकि हिंसा का इतिहास बहुत पुराना है।

शायद जब से मानव जाति अस्तित्व में आई, तभी से दूसरों पर अपना आधिपत्य जताने के लिए लोगों ने हिंसा का रास्ता अपनाना सीख लिया। जबरन किसी की जमीन पर कब्जा करना, किसी की कोई वस्तु छीनना सब हिंसा का ही रूप है।

जब भी किसी तरह की हिंसा होती है, तो उसका सबसे ज्यादा असर स्त्रियों और बच्चों पर पड़ता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण हम अपने पड़ोसी देश अफगानिस्तान में देख सकते हैं। वहां तालिबानी शासन होने के बाद स्त्रियों को बंदूक की नोक पर काम करने से रोक दिया गया। पहले स्कूल बंद कर दिए। फिर जब स्कूल खुले, तो केवल लड़कों को स्कूल जाने की अनुमति दी गई। लड़कियों की शिक्षा रोक दी गई।

इसके दूरगामी परिणाम होंगे। भविष्य में अफगानिस्तान की एक बड़ी आबादी अनपढ़ रह जाएगी और दिमागी तौर पर उनका खुलापन कम

हो जाएगा। वहां की महिलाएं दुनिया की अन्य महिलाओं के साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चल पाएंगी। इस तरह किसी को जबरन पीछे धकेलना भी हिंसा का एक रूप है।

अब हिंसा परोक्ष रूप से या अपरोक्ष रूप से, दोनों ही मानवता के लिए एक धब्बा है। बहुत सारे देश खुलेआम हिंसा का रूप अपनाते हैं। इनमें इजराइल जैसे देश शामिल हैं, जो जरा सी बात पर अपने पड़ोसी देशों पर हमला कर देता है। बिना यह सोचे हुए कि उसके हमले से कितने लोगों की जान जाएगी, कितने बच्चे अनाथ होंगे या कितनी मां अपने बच्चों से दूर हो जाएंगी।

इसके मुकाबले पाकिस्तान जैसे कुछ देश हैं, जो ताकत में तो कम है, परंतु अपरोक्ष रूप से हिंसा का समर्थन करता है। अपने पड़ोसी देशों में हिंसा उकसाने के लिए हर तरह के हथकंडे अपनाता है और उसके लिए खूब धन खर्च करता हैं पड़ोसी देश अफगानिस्तान में वह तालिबान को समर्थन दे रहा है। तालिबान जैसी ताकत का समर्थन करना भी एक तरह से हिंसा का समर्थन करना है।

हिंसा के रूप

अब हिंसा केवल मानवता के प्रति ही नहीं होती। हम अगर अपनी पृथ्वी को बर्बाद करते हैं, तो यह भी हिंसा का ही एक रूप है। पेड़-पौधों को काटना इसके वातावरण को दूषित करना भी एक प्रकार की हिंसा है। इससे पृथ्वी का संतुलन बिगड़ रहा है। मौसम का चक्र खराब हो रहा है, जिसका असर घूम-फिरकर मनुष्य पर ही पड़ता है।

हम जब अपने रहने के लिए जंगल के जंगल काट लेते हैं, दलदली इलाकों को भरकर, नदी-नालों को पाटकर अपने रहने के लिए घर बनाने पर उतारू हो जाते हैं, तब हम बड़े खुश होते हैं परंतु जब हम जंगल काटते हैं, तो यह एक प्रकार से जंगल के निवासी जानवरों और चिड़ियों पर हिंसा का ही एक रूप है। जब हम जानवरों से उनका निवास स्थान छीन लेते हैं तो वह शहरों की ओर रुख करते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि जंगलों के सीमावर्ती गांव में जंगली जानवरों का आतंक बढ़ जाता है। हमारे इस हिंसक रूप का शिकार होकर चीता, डोडो इत्यादि कई जीव-जंतु इस दुनिया से लोप हो गए।

हम इनसान धरती तो धरती, समुद्रों को भी नहीं छोड़ रहे हैं। आज समुद्र में हमने इतना कचरा डाल दिया है, कि समुद्री जीव-जंतुओं के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह खड़ा हो गया है। अनेक प्रजातियां विलुप्त हो गई हैं और उनका नामोनिशान मिट गया।

सच तो यह है कि हिंसा किसी भी रूप में हो, वह स्वीकार नहीं किया जा सकता। बच्चों और स्त्रियों को हिंसा से बचाने के लिए तरह-तरह के कानून बनाए गए। परंतु कानून की एक सीमा होती है। हमें अपने को बदलना होगा ताकि हम मनुष्यता को जीवित रख सकें और या साबित करें इस धरती पर जो भी आया है, सब का इस धरती पर समान अधिकार हैं। सबको समान रूप से जीने का हक है और किसी भी प्रकार की हिंसा स्वीकार्य नहीं है। ✪

रावण नहीं, राम

"नहीं, मुझे ही राम की भूमिका निभानी है। देखो मैं कितना सुंदर हूं, पढ़ाई में भी अच्छा हूं।" अभय चिल्लाते हुए बोला।

अभय को इस बात की भी परवाह नहीं थी कि उसके मम्मी-पापा के साथ वहां सोसाइटी के कितने लोग खड़े हैं। चिंकी के दादा-दादी थे, नूपुर के चाचा थे, मलय के पापा थे, उसके स्कूल की शालू मैम भी थीं, जो उन्हीं की सोसाइटी में रहती थीं।

अभय के इस व्यवहार पर हालांकि कोई अचंभित नहीं हुआ, क्योंकि सब जानते थे कि वह बहुत गुस्से वाला है और किसी का अपमान करने में उसे पल भर भी नहीं लगता है। वह सुंदर है और उसके पापा अमीर हैं, इस बात का भी उसे घमंड था।

"देखो बेटा, राम के संवाद पंकज ज्यादा बेहतर ढंग से बोल पा रहा है। इसलिए वही उपयुक्त है इस भूमिका को निभाने के लिए।" उसकी मम्मी ने समझाया।

"लेकिन वह तो मेरी तरह सुंदर नहीं है। उसके दादाजी के पास हमारी तरह बहुत सारे पैसे भी नहीं हैं। उसके तो मम्मी-पापा भी नहीं हैं, वह कैसे राम बन सकता है? मेरे पापा ने इस रामलीला के लिए कितना डोनेशन दिया है। मुझे नहीं बनना हनुमान, मैं तो राम ही बनूंगा। मैं क्या बंदर जैसा दिखता हूं? पंकज बंदर जैसा दिखता है, तो उसे हनुमान क्यों नहीं बनाते? और इसे तो कोरोना भी हो चुका है, फिर यह राम कैसे बन सकता है।" कहते हुए अभय ने पंकज को धक्का दिया।

इतना सब होने पर भी पंकज शांत खड़ा रहा। हालांकि वह उदास हो गया था। वह सुंदर नहीं है, उसके माता-पिता की एक दुर्घटना में मृत्यु हो गई थी और दादाजी जैसे-तैसे उसकी देखभाल कर रहे हैं, तो इसमें उसकी क्या गलती है?

'क्या इस तरह से अच्छा अभिनय करने के बावजूद मुझे राम की भूमिका करने से वंचित कर दिया जाएगा।' पंकज ने सोचा।

अभय की मां उसे खींचते हुए घर ले गईं। वह बहुत शर्मिंदा थीं। उन्हें लग रहा था कि उन्हीं के लाड़-प्यार ने बच्चे को इतना बददिमाग बना दिया था। 'कितना सुंदर है मेरा बेटा' वह कहते हुए नहीं थकती थीं। वह ही क्या, जो भी अभय को देखता, उसकी सुंदरता पर मोहित होकर 'कितना प्यारा है' कह उसे अपने से चिपटा लेता था। यह तारीफ अब अभय के व्यवहार को खराब करने लगा था।

उस दिन सबका मन उखड़ गया और बिना रिहर्सल किए सब घर लौट गए। कोरोना की वजह से वैसे ही सब घर पर ही रहने के लिए मजबूर थे। स्कूल बंद थे, जगह-जगह होने वाली रामलीलाओं, जो शहर की रौनक हुआ करती थीं, पर प्रतिबंध लग गया था, ताकि भीड़ ना एकत्र हो। इसीलिए कोरोना नियमों का पालन करते हुए सोसाइटी के लोगों ने सोसाइटी के लॉन में ही छोटे स्तर पर रामलीला का आयोजन करने का निर्णय लिया था। यह भी तय किया गया था कि प्रदूषण मुक्त उत्सव मनाने के तौर पर दशहरे के दिन रावण, कुंभकरण और मेघनाद के पुतले नहीं जलाएंगे। वरन दशहरे पर हर व्यक्ति संकल्प करेगा कि वह अपने भीतर की किसी बुराई को हवन करने के दौरान प्रज्ज्वलित अग्नि में भस्म करेगा।

पंकज घर जाकर काम में दादाजी की मदद करने लगा। उसकी यही कोशिश रहती थी कि दादाजी को जितना संभव हो सके, आराम दे सके। वह अभी सातवीं में ही था, आर्थिक रूप से दादा जी की सहायता कैसे करे, वह समझ नहीं पा रहा था।

शालू मैम थोड़ी देर बाद घर आईं तो बोलीं, "अभय की बातों का बुरा मत मानना, वह तो कुछ भी बोल देता है। रंग या रूप किसी इनसान की विशेषताओं या गुणों का निर्धारण नहीं करता है। उसका स्वभाव, आदतें और दूसरों के प्रति व्यवहार

अपने लेखक को जानिए

सुमन बाजपेयी : पिछले 33 वर्षों से कहानी, कविता, महिला विषयों व बाल-लेखन व अनुवाद में संलग्न। पांच कहानी संग्रह समेत अन्य विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित।

चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट में बतौर संपादक कार्य व जागरण सखी, मेरी संगिनी, फोर्थ डी वूमेन नामक पत्रिकाओं में विभिन्न संपादकीय पदों पर कार्य। संप्रति : स्वतंत्र लेखन

और परिस्थितियों का सामना करने की सहनशीलता ही इंसान के गुण-दोषों का आकलन करती है। रावण इतना बलशाली था, सुदर्शन था, विद्वान था, इतने बड़े साम्राज्य का स्वामी था, लेकिन उसका क्या हुआ? अपने अहंकार की वजह से वह मारा गया। बुराई चाहे किसी भी रूप में क्यों न हो, उसका अंत होता ही है। तुम दुखी मत हो। हो सकता है, अभय भी अपनी कमियों को समझ उन्हें दूर करने की कोशिश करे, इस बार। केवल अभिनय करना ही काफी नही होता, जो मंचित किया जा रहा है, उसे जीवन में उतारना भी जरूरी है। राम की भूमिका तुम ही करोगे।"

उनकी बात सुन पंकज का मन थोड़ा हलका हुआ। वह बोला, "मैम, मुझे कोई आपत्ति नहीं है। अभय को राम बना दीजिए, मैं हनुमान बन जाऊंगा। हनुमान ने तो पूरी लंका में आग लगाकर रावण के अहंकार को स्वाहा कर दिया था। और उन्हें तो बंदर माना जाता था, अगर वह यह सब सोचते, तो कभी भी राम भक्त नहीं बन पाते। अपनी भक्ति से उन्होंने प्रभु राम के हृदय में हमेशा के लिए स्थान पा लिया।"

इधर अभय को किसी तरह समझा लिया गया। लेकिन वह लगातार यही सोचता रहा कि पंकज को मजा चखा कर ही रहेगा। वैसे भी अपनी पूंछ से वह कुछ भी कर सकता था। लंका के साथ-साथ अगर पंकज भी जल जाए तो कितना अच्छा हो, उसकी वजह से ही वह राम नहीं बन पाया। अभय यह भी जानना चाहता था कि उसकी पूंछ में सच में आग लगेगी या केवल पीले रंग का कागज बांधा जाएगा और प्रतीकात्मक रूप से लंका को जलते दिखाया जाएगा। गुस्से और अहंकार में वह अपने ज्ञान को भी नजरअंदाज कर रहा था।

चित्र : सुशील दोषी

उस दिन लंका दहन वाले दृश्य का मंचन था। चिंकी सीता बनी थी। अशोक वाटिका वाला दृश्य चल रहा था। जब हनुमान बना अभय वाटिका में उनसे मिलने गया, सीता बनी चिंकी ने उसे राम की अंगूठी दी।

उसके बाद लंका दहन का दृश्य था। अभय ने लंका में प्रतीकात्मक आग लगाई और मंच के कोने में खड़े पंकज की ओर लपका और जोर-जोर से यह सोचकर पूंछ से उसे मारने लगा कि अब तो यह भी जल जाएगा।

चारों तरफ हड़बड़ी मच गई। अचानक हुए इस हमले के कारण पंकज नीचे गिर गया। अभय अपनी धुन में यह नहीं देख पाया कि वह पूंछ फटकारते हुए, पंकज के ऊपर ही खड़ा हो गया है।

अभय को किसी तरह से काबू कर मंच से नीचे लाया गया। रामलीला को उस दिन स्थगित कर दिया गया। पंकज को उसके दादा जी अस्पताल ले गए। वह बेहोश हो गया था और चोटें भी आई थीं।

अभय जब गुस्से के आवेश से बाहर निकला, तो पहले तो उसे लगा अच्छा हुआ कि पंकज अस्पताल पहुंच गया। फिर जब उसने सब को घूरते देखा, तो उसे महसूस हुआ कि उससे बहुत बड़ी गलती हो गई है। उसे किसी ने कुछ नहीं कहा।

अगले कुछ दिन मम्मी-पापा ने उससे बात भी नहीं की। दशहरे पर हवन में पहनने के लिए उसके लिए जो नया कुरता-पाजामा खरीदा गया था, उसे तक मम्मी ने उसे पहनने को नहीं दिया। यहां तक कि हवन में उसे साथ चलने के लिए भी एक बार भी नहीं कहा।

आज हवन की अग्नि जल रही थी। सब मास्क लगाए दूरी बनाए बैठे थे। एक-एक कर सब उठते और कोई संकल्प कर अपनी किसी एक बुराई को, कमी को उसमें स्वाहा कर देते। अभय दूर खड़ा देख रहा था। क्या करे वह?

अचानक अभय आगे बढ़ा और हवन सामग्री हाथ में ले, वह अग्नि में डाल जोर से बोला, "मैं आज अपने गुस्से और अहंकार को इस हवन कुंड में भस्म करता हूं। मैं सुंदर हूं, मेरे पापा के पास धन है, मैं पढ़ाई में अच्छा हूं तो क्या हुआ, पर मैं सच में राम बनने लायक नहीं हूं। लेकिन मैं सबसे वादा करता हूं कि आज के बाद मैं सब के साथ अच्छा व्यवहार करने की कोशिश करूंगा। मैं अच्छा बनूंगा, रावण नहीं राम बनूंगा।"

अग्नि में से निकलती लपटें अभय के चेहरे को खूब दीप्त कर रही थीं।

कविता

खीरा-ककड़ी

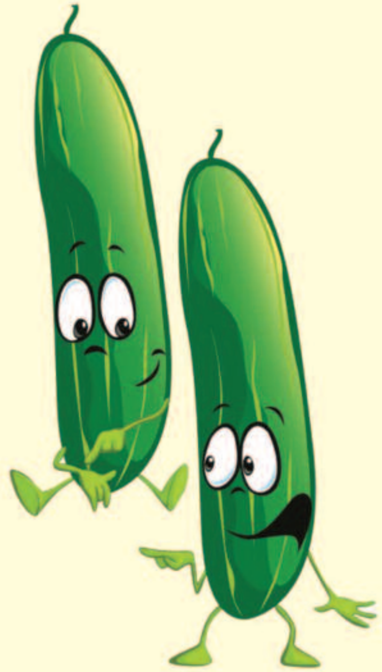

कल खीरे से,
बोली ककड़ी।
कद्दू की बतिया,
खा गयी बकरी।

खीरा बोला,
क्यूँ रे ककड़ी!
देखी थी तो,
क्यों न पकड़ी।

अपने लेखक को जानिए

राम करन : वायु सेना से सेवा निवृत्ति के बाद फिलहाल अध्यापन। कई कहानियां, कविताएं प्रकाशित। डॉक्टर परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार 2018 का तृतीय पुरस्कार।

चमचम खुश है

चुलबुल गौरैया का नन्हा सा, प्यारा सा बेटा चमचम अब उड़ने लायक हो गया था। उसके पंख जब तक मजबूत और उड़ने के लायक नहीं हुए थे, तब तक बाहर की दुनिया से अनजान वह चुपचाप अपने घोंसले में पड़ा रहता था। उसकी मां बाहर निकलती तो अपनी चोंच में दबाकर दाना ले आती और उसे खिला देती थी। लेकिन जैसे ही उसके पंख थोड़े मजबूत हुए और वह उड़ने लायक हुआ, उसकी मां ने उसके लिए दाना ले आना बंद कर दिया।

"बेटे चमचम, अब तुम बड़े हो गए हो, इसलिए उड़ने की कोशिश करो और बाहर निकलो। अपने लिए भोजन की तलाश स्वयं करो और बाहर की दुनिया को देखो, समझो।" एक दिन चमचम की मां ने कहा।

अपनी मां की बात सुनकर चमचम की खुशी का ठिकाना न रहा। वह तो न जाने कब से अपने घोंसले से बाहर निकलने और बाहर की चीजों को देखने, जानने के लिए तरस रहा था। लेकिन जब भी वह बाहर जाने की बात करता, उसकी मां मना कर देती थी। कहती थी कि जब तक तुम्हारे पंख हवा का दबाव बर्दाश्त करने के लायक नहीं हो जाते, तब तक तुम्हें बाहर नहीं निकलना है।

जिस शाम मां ने अनुमति दी उसके अगले ही दिन से चमचम बाहर निकलने लगा और छोटी-छोटी उड़ानें भरने लगा। पंख फैलाए हवा में उड़ने और ऊपर उड़ते हुए नीचे की दुनिया को देखने में उसे बहुत आनंद आता था।

शुरू के कुछ दिनों तक तो उसकी मां भी उसके साथ रहती थी लेकिन बाद में वह अकेले ही जाने लगा।

चमचम की मां ने उसे समझा रखा था कि कहीं भी दाना या खाने-पीने की कोई चीज देखकर एकदम से लालच में नहीं पड़ जाना। लालच का परिणाम हमेशा बुरा होता है। कई बार ऐसा भी होता है कि जाल में फंसाने के लिए बहेलिए दाने बिखेर देते हैं और दाने के पास बैठते ही पंछी जाल में फंस जाया करते हैं। इसलिए बहुत देखभाल और सावधानी के बाद ही दाने अथवा किसी भी खाने की चीज के पास जाना। साथ ही सांप, नेवले, बिल्ली और कुत्ते जैसे जानवरों तथा बाज और चील जैसे शिकारी पक्षियों से भी हर समय सावधान रहना। दाना चुगते समय हमेशा अपने आसपास से चौकन्ना रहना।

मां की सिखाई बातों को गांठ बांधकर चमचम इधर-उधर उड़ान भरने लगा। जब तक घोंसले में था, चमचम को बाहर की परेशानियों और खतरों का आभास नहीं था। बाहर निकलने पर उसे पता चला कि बाहर मौज-मस्ती तो है, लेकिन उसके साथ-साथ खतरे भी बहुत हैं। और

चित्र : इंदिरा

भोजन पा लेना उतना आसान नहीं है जितना कि वह समझता था। उसके लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है।

अब वह सारे दिन यहां-वहां उड़ते-उड़ते थक जाता था, तब कहीं जाकर उसे पेट भर खाने को मिल पाता था। तेज धूप हो या कड़ी ठंड, भाग-दौड़ किए बगैर भोजन नहीं मिल सकता था। इसके अतिरिक्त जमीन पर बैठो तो सांप, बिल्ली, कुत्तों का और पेड़ पर रहो तो बाज, चील आदि से खतरा बना रहता था। बहेलिए की जाल में फंसने का भय अलग से हर समय परेशान किए रहता था।

चमचम कुछ दिनों में ही परेशान हो गया। यह रोज सुबह से शाम तक की भाग-दौड़ और हर समय डर-डर कर जीना उसे जरा भी अच्छा नहीं लगता था। अब वह मन ही मन दुखी रहने लगा था।

एक दिन की बात है। चमचम भोजन की तलाश में एक बस्ती में पहुंचा हुआ था। उसने देखा कि जंजीर से बंधा एक बड़ा सा कुत्ता एक घर के बरामदे में आराम से लेटा ऊंघ रहा था। तभी घर के अंदर से एक महिला कटोरे में खाना लेकर आई और उसके सामने रखकर चली गई। कुत्ता अपने कान झटककर उठा और सामने रखा खाना खाने लगा। खाना खाने के बाद उसने पास ही रखे बरतन में भरा पानी पीकर जम्हाई ली और फिर से वहीं पसर गया।

कुत्ते की ठाट देखकर चमचम के मन में उसके प्रति ईर्ष्या हो आई। वह कुत्ते के पास गया और बोला, "वाह भाई वाह। सचमुच तुम्हारी तो बहुत मौज है। तुम्हें तो बगैर हाथ-पांव हिलाए आराम से पड़े-पड़े खाना मिल रहा है, पानी मिल रहा है। काश! हमारा भाग्य भी ऐसा ही होता। मुझे देखो, सुबह से शाम तक भोजन की तलाश में यहां-वहां दौड़ते-दौड़ते पस्त हो जाना पड़ता है। उड़ान भरते-भरते पंख थक जाते हैं। तमाम तरह के खतरे उठाने पड़ते हैं। तब जाकर कहीं कुछ खाने के लिए मिल पाता है।"

"भाई, यदि तुम यह समझते हो कि मैं बहुत मजे में हूं, तो यह तुम्हारी भूल है। इस दुनिया में बगैर स्वार्थ के खाना खिलाना तो दूर, कोई अपने दरवाजे पर बैठने भी नहीं देता है। इस थोड़े से खाने के बदले मुझे कितनी मेहनत और गुलामी करनी पड़ती है यह भला तुम क्या जानो। जाड़ा, गरमी, बरसात बारहों महीने सारी-सारी रात जागकर मुझे चौकीदारी करनी पड़ती है। जिस समय तुम अपने घोंसले में चैन की नींद सो रहे होते हो, उस समय मैं हर आहट पर कान लगाए जागता रहता हूं। यह देख रहे हो न मेरे गले में लोहे की जंजीर बंधी है। यह गुलामी की जंजीर है। मैं अपनी मर्जी से कहीं आ-जा भी नहीं सकता। यदि पहरेदारी में मुझसे जरा सी भी लापरवाही हो जाए तो खाना देना तो दूर, लोग डंडा मार-मार कर मेरी जान ले लेंगे।" कुत्ते ने अपना दुखड़ा सुनाया।

"क्या सचमुच ऐसा है? तुम अपनी मर्जी से कहीं आ, जा भी नहीं सकते? फिर तो तुम से अच्छा मैं ही हूं। कम से कम अपनी मर्जी का मालिक तो हूं। जब मन होता है उड़ान भरता हूं, मन नहीं होता तो आराम करता हूं। न किसी की गुलामी न किसी पर निर्भरता। मेरा छोटा सा पेट है। उसे भरने के लिए कुछ न कुछ मिल ही जाता है।" चमचम ने कहा और फुर्र से उड़ गया।

चमचम वहां से उड़ा, तो गांव के बाहर खेतों की ओर निकल

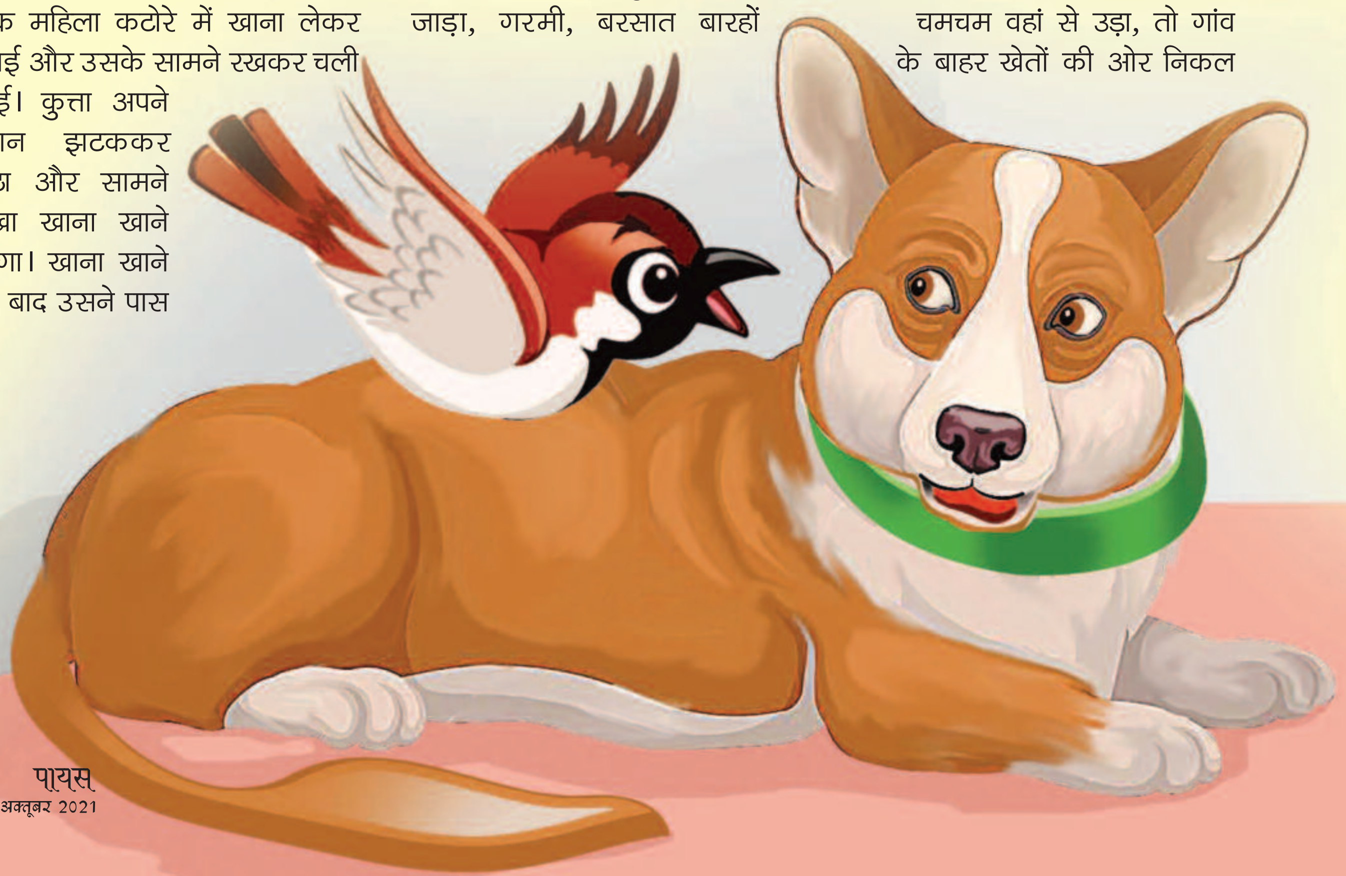

गया। उसने उड़ते-उड़ते देखा कि एक मोटा, ताजा बकरा खेत की मेड़ पर मजे से घास चर रहा था। चमचम को लगा कि बकरा उससे ज्यादा सुखी है। उससे बात करने के लिए वह नीचे उतर आया।

"बकरा चाचा ! सच कहूं तो सबसे मजे में तुम ही हो। तुम्हें खाने की कोई कमी है नहीं। चारों तरफ घास ही घास है। जब मन हो जी भर कर खाओ और जहां चाहो वहां पड़ कर सो रहो। तुम्हें न तो किसी की गुलामी करनी है न किसी बाज, बहेलिए द्वारा पकड़े जाने का डर है और न ही भोजन ढूंढ़ने की कोई चिंता।" चमचम ने घास चर रहे बकरे के निकट एक झाड़ी पर बैठने के बाद कहा।

"क्या कहा तुमने? मैं सबसे मजे में हूं? बेटा चमचम, फिर तो तुम्हें कुछ भी नहीं पता। सच बात तो यह है कि मैं इस संसार का सबसे दुखी और निरीह प्राणी हूं। मुझे तो यह भी नहीं पता कि अभी घंटे भर बाद मेरी क्या हालत होगी। कोई निश्चित नहीं कि मैं जीवित भी रहूंगा या नहीं। वो सामने देखो, उस पेड़ के नीचे मेरा मालिक बैठा हुआ है। वह सवेरे मुझे लाकर इधर चरने के लिए छोड़ देता है और शाम के समय ले जाकर अपने दरवाजे पर बांध देता है। मैं उसकी आमदनी का साधन हूं। जिस समय भी उसका मन होगा, वह मुझे किसी कसाई के हाथ बेच देगा। कसाई मुझे मार डालेगा और मांसाहारी लोग मुझे पकाकर खा जाएंगे। बस, मेरी कहानी खतम। भैया, मैं तो हर समय डर-डर कर जीता हूं कि पता नहीं, कब मेरे गले पर कसाई का गड़ासा चल जाए। अब बताओ, भला ऐसी जिंदगी जहां अगले पल का भी भरोसा नहीं, उसको तुम मजे की जिंदगी कहते हो।"

"ऐसी बात है? छिः छिः छिः। तब तो बकरा चाचू, तुमसे मजे में मैं ही हूं। कहीं जान को जरा सा भी खतरा दिखा नहीं कि फुर्र हो जाता हूं।" चमचम ने बकरे से कहा और पंख खोल कर उड़ गया।

वहां से उड़ा चमचम सीधे जंगल की तरफ निकल गया। वहां उसने देखा कि एक शेर पेड़ की छांव में पैर पसारे लेटा आराम कर रहा था।

"शेर महाराज ! आप के तो मजे ही मजे हैं। सचमुच आप संसार के सबसे सुखी प्राणी हैं। आप ठहरे जंगल के राजा। आप को न किसी का डर है न कोई चिंता। सारे दिन आराम से पड़े रहते हैं और जब भी भूख लगे, किसी जानवर को मार कर खा लेते हैं। क्यों सच है न।" पेड़ की डाल पर बैठने के बाद चमचम ने शेर से कहा।

"अरे बेटे, तुम मेरी परेशानी नहीं समझ सकते। ठीक है कि मैं जंगल का राजा हूं, ताकतवर भी हूं, लेकिन जिंदा रहने के लिए मुझे संघर्ष भी तो बहुत अधिक करना पड़ता है। बाकी जानवरों के साथ तो यह सुविधा है कि वे अन्न, फल या घास-पात खा कर जीवित रह लेते हैं, लेकिन मेरे साथ मजबूरी है कि मैं मांस के अलावा और कुछ खा नहीं सकता। फिर मेरी खुराक भी इतनी अधिक है कि थोड़े से भोजन पेट नहीं भरता। तुम तो जानते ही हो कि छोटे, बड़े हर प्राणी को अपनी जान प्यारी होती है। कोई खुशी से तो मेरे पास भोजन बन कर आता नहीं। मुझे देखते ही सभी जानवर भाग जाते हैं। इधर-उधर जहां जगह मिली, छुप जाते हैं। इसलिए पेट भरने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है मुझको। कभी-कभी तो कई-कई दिनों तक मुझे भूखे ही रह जाना पड़ता है। अभी देखो, पिछले दो दिनों से कोई शिकार हाथ नहीं लगा है। दो दिनों से मैंने कुछ भी नहीं खाया। यहां लेटे प्रतीक्षा कर रहा हूं कि शिकार हाथ आए।" शेर ने बहुत दुखी स्वर में कहा।

"इतना बड़ा शरीर और ढेर सारी ताकत वाले होकर भी तुम दुखी हो। तब तो इसका मतलब यह हुआ शेर महाराज कि दुनिया का सबसे सुखी और सबसे आजाद प्राणी मैं ही हूं।" चमचम ने कहा और वापस अपने घोंसले में आ गया।

"अपनी जरा सी परेशानी से मैं बेकार ही दुखी हो रहा था। बाकी सारे तो मुझसे भी अधिक दुखी हैं। मुझे ज्यादे की जरूरत नहीं होती। थोड़े से अन्न से मेरा पेट भर जाता है। फिर उसके बाद जहां चाहूं उड़ता फिरूं या अपने घोंसले में पड़ा आराम करूं या जो मन चाहे, सो करूं।" चमचम ने अपने आप से कहा और अपने घोंसले में खुशी से सो गया।

अपने लेखक को जानिए

अखिलेश श्रीवास्तव चमन : उ.प्र. सरकार में एडीशनल आई. जी. (रजि.) के पद से सेवानिवृत्त। बाल उपन्यास, बालकहानी संकलन, बालकविता संकलन, एक बाल एकांकी संकलन, समीक्षात्मक लेखों तथा यात्रा संस्मरण की कुल 29 पुस्तकें प्रकाशित। भारतेन्दु हरिश्चंद्र पुरस्कार सहित दो दर्जन पुरस्कारों से सम्मानित। 'समकालीन त्रिवेणी' का संपादन।

अच्छी सेहत खुशियाँ लाए

आलू, प्याज, बैंगन, टमाटर,
गाजर, मूली, गोभी, मटर,
पालक, मेथी, हरी सब्जिआँ
खाओ खूब जी भर।

पिज्जा, बर्गर और नूडल्स,
इनमें न कोई गुण भरा,
छोड़ो आज ही 'जंकफ़ूड',
खाओ खाना सेहत भरा

सुस्ती छोड़ो, जल्दी उठकर,
रोज़ करो थोड़ा व्यायाम,
खेलो-कूदो, भागो-दौड़ो,
योगा करो सुबह-शाम

पोषण से भरपूर भोजन,
जो हम रोज़ खाएँगे,
अच्छी सेहत, स्वस्थ्य तन-मन,
खुशहाल जीवन पाएँगे

अपने लेखक को जानिए

डॉ. पूजा गुप्ता : दिल्ली विश्वविद्यालय में वनस्पति विज्ञान की सहायक प्रोफेसर।

कविता लेखन में बचपन से ही रुचि है। विशेषकर बच्चों के लिए रोचक कविताएं लिखना अच्छा लगता है। कई कविताएं जानी-मानी पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।

पशुओं को भी प्यार दें

4 अक्तूबर : विश्व पशु दिवस

प्रत्येक वर्ष 4 अक्तूबर को विश्व पशु दिवस मनाया जाता है इसका मुख्य उद्देश्य पशुओं के प्रति इनसान की संवेदना को इस स्तर पर लाना है कि वह पशुओं को अपना गुलाम न समझकर अपना साथी समझे और यह माने कि जितना मनुष्य का इस धरती पर हक है इतना ही हक पशु-पक्षियों का है। अतः उनके प्रति हिंसा को त्यागे उनके घर ना उजाड़े और उन्हें ऐसा माहौल दें कि वे ख़ुशी-ख़ुशी अपनी दुनिया में रह सकें।

विश्व पशु दिवस सबसे पहले हेनरिक जिम्मेमान ने मनाया था। उन्होंने पहली बार 24 मार्च 1925 को बर्लिन में पशु दिवस मनाया था। उस समय भी करीब 5000 लोगों ने इस दिवस पर भाग लिया था। बाद में इसे पशुओं के लिए समर्पित सन फ्रांसिस ऑफ़ असीसी की याद में 4 अक्टूबर को मनाया जाने लगा।

पहली बार 1929 में 4 अक्तूबर को विश्व पशु दिवस मनाया गया। आरंभ में यह यूरोप के कुछ देशों में ही मनाया जाता था, परंतु 1931 में यह फैसला किया गया कि इसे पूरे विश्व में मनाया जाएगा और तब से यह दिन पूरे विश्व में पशुओं के प्रति आदर दिखाने के लिए पूरे विश्व में मनाया जाता है ।

हम मनुष्य आमतौर पर खुद को श्रेष्ठ समझकर पशुओं को अपना पालतू समझते हैं या जो जंगलों में रहते हैं उन्हें जंगली जानवर कहकर उनके प्रति अपनी भड़ास निकालते हैं। आज से कुछ साल पहले तक जंगल में जाकर जानवरों का शिकार करना एक खेल माना जाता था। बाद में कई देशों की सरकार ने शिकार पर प्रतिबंध लगाया, तब जानवरों के प्रति हमारी इस हिंसा का अंत हुआ।

परंतु आज भी कई देशों में शिकार करने के लिए लोगों को लाइसेंस दिए जाते हैं। पशुओं का पूरी दुनिया में आज भी गैरकानूनी तरीके से खूब शिकार होता है। कभी उनके नाखून के लिए, कभी उनके दांत के लिए, तो कभी उनकी चमड़ी के लिए उन्हें बड़ी बेदर्दी से मारा जाता है।

यह दिन हमें यह मौका देता है कि हम पशुओं के प्रति अपनी क्रूरता छोड़ें और उन्हें भी प्यार दे

आधी रात का खेल

रात के ग्यारह बज गए थे। अदिति ने करवट बदली और आधी आंख खोलकर दीदी के पलंग की ओर देखा। वह किताब सीने पर टिकाए पढ़ती-पढ़ती सो गई थीं। उनका स्मार्टफ़ोन पास ही मेज पर रखा था। अदिति चुपके से उठी और मेज से फ़ोन उठा लिया। दीदी का पासवर्ड उसे पता था।

जब से उसकी सहेली ने एक नए गेम के बारे में बताया था, अदिति उसे खेलने को उतावली हो उठी थी। कुछ पल बाद उसने झुंझलाते हुए फ़ोन वापस रख दिया। दीदी ने पासवर्ड बदल दिया था।

अचानक उसे किसी के धीमे-धीमे हंसने की आवाजें सुनाई दी। पहले तो वह डरी, पर फिर हिम्मत कर खिड़की पर आकर खड़ी हो गई। सामने पार्क में उसे चलती-फिरती-दौड़ती आकृतियां दिखाई दीं। हालांकि रात काफी हो चुकी थी और अंधेरा था। परंतु पार्क में जगह-जगह लैम्प लगे हुए थे। उनकी हलकी रोशनी में उसने देखा कि वे कुछ बच्चे थे जो खेल रहे थे। पर इतनी रात में? शायद घर से छिपकर आते होंगे। उसने देखा कि उन बच्चों के हाथ में कुछ था जिससे रोशनी के रंग-बिरंगे सितारे से बिखर रहे थे। बिल्कुल दीवाली के पटाखों जैसे। लेकिन धुआं नहीं निकल रहा था। कोरोना वाइरस के कारण मां पार्क में बच्चों के साथ खेलने नहीं देती थीं। अदिति ऊब गई थी घर में बैठे-बैठे। अदिति का मन ललचा गया। उसने अपना मास्क मुंह पर ठीक से लगाया और बाहर निकल आई ।

"मैं भी खेलूंगी तुम्हारे साथ।" अदिति एकदम से उनके पीछे जाकर बोली। वे सब चौंक गए। वे तीन लड़कियां थीं और एक लड़का। उनकी पोशाकें बहुत सुंदर थीं।

"चोर पुलिस खेलें? मैं पुलिस बनूंगी।" अदिति ने कहा ।

"ठीक है, पकड़ो हमें। शोर नहीं करना, वरना सब जाग जाएंगे।" वे फौरन मान गए।

"एक, दो।" उसने आंखें बंद कर लीं और गिनने लगी। पांच तक गिनने के बाद उसने आंखें खोलीं। वे

चित्र : इंदिरा

सब गायब थे। अदिति इधर-उधर भाग-भागकर देखने लगी।

"लो पकड़ो हमें।" पेड़ की ऊंची टहनी से आवाज आई। अदिति हैरान हुई। तभी कुछ आवाजें उसके सिर के ऊपर से आईं। उसने ऊपर देखा। वे आसमान में मंडरा रहे थे। उनके चमकीले सुंदर पंख फड़फड़ा रहे थे।

अदिति ने आंखें मलीं। वह सपने में थी क्या! वे हाथ में थमी छड़ियों को लहराते हुए दाएं-बाएं, ऊपर-नीचे उड़ रहे थे। छड़ियों से झड़ते रोशनी के फूल देखते हुए अदिति चिल्लाई, "तुम सच में होते हो?"

"हां बिल्कुल सच में। पर इसमें इतना चौंकने वाली बात तो नहीं है। हम पहले भी पृथ्वी पर आते रहे हैं।"

"हां, मैंने नानी मां से तुम्हारे बारे में सुना था। कहां रहते हो तुम?"

"ब्रह्मांड के अनेक ग्रहों में जीवन है। एक प्यारा सा ग्रह हमारा भी है, जिसे मनुष्य परीलोक कहते हैं। हालांकि यह सही नाम नहीं है।"

"परियों ने पृथ्वी पर आना बंद क्यों कर दिया? अब हमारी कहानियों में, किस्सों में, किताबों में तुम कहीं नहीं हो।" अदिति सोच में थी।

"शुद्ध हवा, हरियाली, पशु-पक्षी, पहाड़, नदियां और वन! पृथ्वी कितनी सुंदर थी। हम यहां घूमने आते रहते थे। पर फिर मनुष्य ने इतना प्रदूषण फैलाया कि यहां हमारा दम घुटने लगा। हमने आना छोड़ दिया। वैसे भी तुम सब अपने फ़ोन में व्यस्त रहते हो।" एक परी कहने लगी।

"तो फिर अब क्यों आए?"

"कोरोना के कारण।"

"क्या? कोरोना के कारण?"

"हां, जब कोरोना विषाणु के कारण दुनिया भर में लॉकडाउन लगा, तो पृथ्वी पर प्रदूषण कम हो गया। बस हमें अच्छा मौका मिल गया यहां घूमने का।" गुलाबी पंखों वाला लड़का मुसकराया।

"यह जादू की छड़ी है क्या?"

"धत बुद्धू। ये छड़ी और पंख हमारे डिवाइस हैं। छड़ी हमारी कमर में बंधे पंखों को कंट्रोल करती है। ताकि हम ठीक से उड़ सकें।"

"ऐसे ही उड़कर अपने ग्रह तक जाते हो क्या?"

"अरे नहीं, ऊपर हमारा अंतरिक्ष यान है। इन पंखों से तो हम थोड़ी-बहुत उड़ान ही भर सकते हैं। तुम्हारे हेलीकॉप्टर की तरह।"

"तो तुम एलियन परियां हो।"

"हां, वैसे हमारी बनावट बिल्कुल तुम मनुष्यों जैसी है। पर अक्ल और तकनीक में तुमसे बहुत आगे हैं।"

"अक्ल में?" अदिति बुरा मान गई।

"और क्या! कोई ऐसे भी अपने घर को बर्बाद करता है क्या, जैसे मनुष्य करते हैं? पृथ्वी तुम्हारा घर ही तो है।" पीली परी ने ताना मारा।

अदिति ने बेमन से सिर हिलाया। परी सही कह रही थी ।

"अब मान भी लो कि तुम हमें नहीं पकड़ सकतीं।" पीली परी अभी भी सता रही थी।

"देखते हैं। अच्छा क्या तुम अपने दाएं पैर को घड़ी की दिशा में घुमा सकते हो?" अदिति ने पूछा।

"क्यों नहीं, आसान है।?" वे उड़ते हुए दाईं टांग घुमाने लगे।

"अब टांग घुमाते-घुमाते दाएं हाथ से हवा में 6 का अंक भी बनाओ।"

परियों ने कोशिश की पर गड़बड़ होने लगी। टांग उलटी दिशा में घूमने लगती। वे परेशान होकर नीचे अदिति के पास उतर आए।

"यह क्यों नहीं हुआ?" उनकी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि अदिति ने जल्दी से सबको धप्पा लगाकर आउट कर दिया।

"इसे कोई नहीं कर सकता, पर तुम तो इस बहाने पकड़े गए ना।" वह ताली बजाने लगी।

अपने लेखक को जानिए

कल्पना कुलश्रेष्ठ : शिक्षक होने के साथ-साथ साहित्यकार। 27 सालों से लेखन में सक्रिय। विज्ञान कथाओं के लिए प्रसिद्ध। हर बड़ी पत्रिका में कहानियां प्रकाशित। कई कहानियों का भारतीय भाषाओं में भी अनुवाद हुआ। 'उस सदी की बात' और 'भविष्य की सैर' सहित कई पुस्तकें प्रकाशित हैं।

"मानना पड़ेगा कि तुम बड़ी होशियार और चतुर हो।" वे सब हंसने लगे।

"अब हमें चलना चाहिए।" सुनकर अदिति उदास हो गई।

"फिर कब आओगे?"

"एक बात कहूं! हमारा परीलोक भी सुंदर है पर पृथ्वी की बात ही और है। सबसे प्यारी, सबसे अनोखी। इसे हमेशा स्वच्छ और सुंदर बनाए रखना, पर कोरोना के बहाने नहीं। फिर हम मिलने-घूमने आते रहेंगे।" पीली परी ने कहा।

"तुम्हारे साथ खेलकर बड़ा आनंद आया। परंतु हमें अपनी पहचान छुपानी पड़ती है। हमारे ग्रह का यही नियम है। मुझे तुम्हारी याद को सपने में बदलना होगा।" लाल परी ने अपनी छड़ी की दिशा अदिति की ओर कर दी।

"मैमोरी कन्वर्टर ऑन...।" उसने कमांड दी। छड़ी से नीली चमक निकली। अदिति चुपचाप मुड़कर वापस चली गई।

"आठ बज रहे हैं। कब तक सोएगी? उठ, आलसी कहीं की।" दीदी उसे जगा रही थीं।

अदिति हड़बड़ाकर उठ बैठी। बाप रे कैसा सपना था! एकदम असली जैसा। ✪

8 अक्तूबर : भारतीय वायुसेना दिवस

देश के सजग पहरेदार

हर साल 8 अक्तूबर को इंडियन 'एयर फोर्स डे' मनाया जाता है आजादी से पहले जब भारत पर अंग्रेजों का अधिकार था, तब उनके रॉयल एयर फोर्स की सहायता करने के लिए भारत में एयरफोर्स का निर्माण किया गया था। सन 1935 में पहली बार इस एयरफोर्स में जहाज की तैनाती की गई थी।

द्वितीय विश्व युद्ध में इस एयरफोर्स में भाग लिया और युद्ध खत्म होने के बाद इसे 'रॉयल इंडियन एयरपोर्ट फोर्स' नाम दिया गया।

स्वतंत्रता के बाद इस नाम में से रॉयल शब्द को हटा दिया गया और नया नाम हुआ 'इंडियन एयरफोर्स'। 1950 से अब तक इंडियन एयरफोर्स ने 4 बड़े युद्ध में भाग लिया है।

इंडियन एयर फोर्स के सुप्रीम कमांडर भारत के वर्तमान राष्ट्रपति होते हैं। एयरफोर्स के चीफ को 'चीफ ऑफ एयर स्टाफ' या 'एयर चीफ मार्शल' कहा जाता है। 30 सितंबर 2021 को ही एयर चीफ मार्शल राकेश कुमार सिंह भदोरिया के बदले विवेक राम चौधरी एयर चीफ मार्शल बने हैं।

सन 2002 में भारतीय वायु सेना के पूर्व चीफ अर्जन सिंह को 'मार्शल ऑफ इंडियन फोर्स' का रैंक दिया गया। यह रैंक पाने वाले वह इंडियन एयरफोर्स के पहले और अब तक के आखिरी व्यक्ति हैं।

आज भारतीय वायुसेना को दुनिया के सर्वश्रेष्ठ वायु सेनाओं में से एक माना जाता है।

एयर चीफ मार्शल विवेक राम चौधरी

चांदी के बाल

मेरी प्यारी दादीजी हैं,
उनके चांदी जैसे बाल।
एक नहीं है काला उनमें,
सबके सब सफेद हैं बाल।

मेरे कितने काले बाल,
मेरे कितने सारे बाल।
भैया-दीदी,पापा-मम्मी,
सबके काले-काले बाल।

मैने दादीजी से एक दिन,
पूछा अपना यही सवाल।
भला बताओ दादी-अम्मा,
क्यों न तुम्हारे काले बाल।

दादी हँस कर बोलीं, बेटा,
किया है तुमने सही सवाल।
मेरी उम्र अधिक तुम सबसे,
नहीं धूप में पके हैं बाल।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. अलका अग्रवाल : सेवानिवृत्त प्राचार्य, कुल 21 पुस्तकें प्रकाशित, अनेक साझा संकलनों में कविता, कहानी, आलोचना प्रकाशित। बाल साहित्य की 15 पुस्तकें प्रकाशित

चित्र : सुशील दोषी

कुदरत की दोस्ती

निक्कू खरगोश बेहद कमजोर हो गया था. डॉक्टर थिम्पू हाथी ने उसकी जांच की। उसने कहा, "तुम्हारी खुराक सही है। मगर उसमें विटामिन डी की कमी है। तुम्हें विटामिन डी का अतिरिक्त खुराक चाहिए।

निक्कू ने पूछा, "यह कहां मिलेगा?"

डॉक्टर ने कहा, "दूध, अंडा और धूप में।"

निक्कू ने हैरानी से पूछा, "दूध और अंडा तो ठीक है, मगर मैं भला धूप कैसे खा सकता हूं?"

डॉक्टर ने समझाया, "रोज तेज धूप में दो घंटे खुले बदन बैठा करो। विटामिन डी खुद-ब-खुद तुम्हारे बदन में चला जाएगा।"

निक्कू घर आ गया। उसने भोजन में अंडे और दूध की खुराक बढ़ा दी। अगले दिन दोपहर के वक्त जब धूप तेज हो गई, तो वह खाली बदन घर से निकल पड़ा। घर से थोड़ी

चित्र : सुशील दोषी

दूर जाने के बाद उसे एक खुली जगह मिली। वह वहीं पर आसन जमाकर नीचे बैठ गया। उसने पालथी मार ली और आंखें बंद कर लीं। वह महसूस करने लगा कि सूर्य की तेज किरणें विटामिन डी की शक्ल में उसके बदन में प्रवेश कर रही हैं। उसे यकीन होने लगा कि उसकी कमजोरी अब जल्दी ही दूर हो जाएगी। वह मंद-मंद मुसकराने लगा।

लेकिन अभी कुछ ही पल हुआ था कि निक्कू का बदन तपने लगा। कुछ ही देर में उसके बदन से पसीने की धार भी फूटने लगी। निक्कू बेचैन होने लगा। आसपास कहीं छांव नहीं थी। निक्कू परेशान होने लगा।

तभी निक्कू को बाईं छोर पर बरगद का एक पेड़ दिखा। वह उस तरफ दौड़ पड़ा और पेड़ के नीचे छांव में आकर उसने राहत की सांस ली। उसने सोचा, शाम होते ही वह सीधे घर चला जाएगा।

तभी निक्कू को याद आया कि डॉक्टर ने उसे धूप में दो घंटे बैठने के लिए कहा था। वह छांव से निकलकर पास ही धूप में बैठ गया। अब जैसे ही उसका बदन तपता और पसीने आते वह छांव की शरण ले लेता।

इस तरह निक्कू ने दो घंटे का समय पूरा कर लिया। उसने सूरज और बरगद को धन्यवाद दिया और घर आ गया।

अगले दिन निक्कू उसी स्थान पर फिर आया। मगर यह क्या? बरगद की सभी डालियां काट डाली गई थीं। वे नीचे बिखरी पड़ी थीं। छांव का कहीं नामोनिशान नहीं था। निक्कू समझ गया कि रात दुष्ट मनुष्यों की टोली आई होगी और उन्होंने बरगद को खत्म कर दिया।

निक्कू दुखी हो गया। उसने दुखी मन से वहीं आसन जमाया और धूप का सेवन करने लगा। थोड़ी ही देर में उसका बदन तपने लगा और पसीना बहना शुरू हो गया। अब वह क्या करें? एक पेड़ था, मगर वह बहुत दूर था। निक्कू आलस के कारण वहीं बैठा रहा।

तभी उसे लगा, किसी ने उसके ऊपर छांव कर दी हो। वह चकराया।. उसने ऊपर की तरफ सर उठाया. आश्चर्य! बादल का एक टुकड़ा उसके ऊपर आकर ठहर गया था।

निक्कू बड़ा खुश हुआ। फिर तो धूप-छांव होती रही और दो घंटे कैसे बीत गए, निक्कू को पता ही नहीं चला। आज उसने सूरज के साथ-साथ बादल को भी धन्यवाद कहा और घर आ गया।

अगले दिन निक्कू फिर उसी

जगह पर आया और पालथी मारकर बैठ गया। आज भी बादल ने धूप-छांव लगा रखी थी। निक्कू को बड़ा मजा आ रहा था। अभी दो घंटे पूरे होने ही वाले थे कि तभी जोरदार बारिश शुरू हो गई।

यह देख निक्कू बादल पर नाराज होने लगा। उसने बादल से कहा, "बादल अंकल, यह क्या ? आपने बारिश क्यों शुरू कर दी?"

अपने लेखक को जानिए

ज्ञानदेव मुकेश : मूलतः एक बाल लेखक तथा लघु कथा लेखक। विभिन्न राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में बाल कहानियां प्रकाशित। 4 लघुकथा संग्रह और सात बाल कहानी संग्रह प्रकाशित। लघुकथा संग्रह भेड़िया जिंदा है को श्री परमेश्वर गोयल लघुकथा शिखर सम्मान 2009 मिला।

इतना सुनकर बादल नीचे उतर आया और उसने निक्कू से कहा, "यह बारिश जरूरी है।"

निक्कू ने पूछा, "क्यों भला?"

बादल ने कहा, "जब तुम्हारे बदन से पसीना आता है, तो कुछ गंदगी भी बाहर आ जाती है। साथ ही, आसपास के धूल भी तुम्हारे बदन से चिपक जाते हैं। तुमने धूप सेवन के बाद दो दिन से नहीं नहाया, तो मैंने सोचा, मैं ही आज तुम्हें नहला दूं।"

निक्कू झेंप गया। उसने बादल से कहा, "ठीक है। मैं अब इस बात का ध्यान रखूंगा।"

बादल ने आगे कहा, "मैं रोज-रोज तुम्हारी सहायता के लिए नहीं आ पाऊंगा। मुझे दूसरे जंगल में भी छांव और बारिश करनी है। तुम किसी दूसरे पेड़ की तलाश कर लो।"

निक्कू ने बड़े भोलेपन से कहा, "मगर मुझे तो पता ही नहीं है कि बरगद का दूसरा पेड़ कहां है।"

बादल ने कहा, "तुम्हारे घर के दक्षिण दिशा में बरगद का दूसरा पेड़ है। तुम वहीं चले जाया करो।"

निक्कू बड़ा खुश हुआ। उसने बादल को पूरे मन से धन्यवाद कहा और घर की ओर चल पड़ा। ✪

९ अक्तूबर : विश्व डाक दिवस

डाकिया डाक लाया...

आज डिजिटल युग है जिसके कारण संचार के क्षेत्र में भी क्रांति हो गई है। जिसे हम डाक सेवा कहते हैं, वह अब करीब-करीब लुप्तप्राय है।

आमतौर पर पहले जब न इंटरनेट की सुविधा थी, ना ईमेल होता था , न घरों में तार वाले टेलीफोन होते थे और ना ही आज की तरह हर हाथ में मोबाइल होता था, तब एक-दूसरे से जुड़ने के लिए लोग पूरी तरह से डाक सेवा पर ही निर्भर करते थे। चाहे गांव से शहर या शहर से गांव अपने घर तक अपनी खबर भेजनी हो, पैसे भिजवाने हो, लोग पोस्ट ऑफिस की ओर भागते थे। 15 पैसे के पोस्टकार्ड से लोग अपना हाल-चाल अपने लोगों तक पहुंचा पाते थे। मनीआर्डर के द्वारा शहर में कमाकर गरीब आदमी अपने गांव पैसे भेज देता था। उस जमाने में ना तो ढेर सारे बैंक थे और ना ही अधिकांश लोगों के अकाउंट होते थे। अतः पैसे भेजने का सबसे सरल साधन डाक व्यवस्था के अंतर्गत मनीऑर्डर ही होता था।

आज भले ही इंटरनेट सुविधा के कारण हम डाक व्यवस्था का ज्यादा फायदा नहीं उठा रहे हैं। फिर भी आज भी किसी न किसी रूप में डाक सेवा जिंदा है। आमतौर पर लोग डाक सेवा का मतलब सरकारी पोस्टल सर्विस को ही मानते हैं, पर ऐसा नहीं है। आज जो कूरियर सर्विस है, यह भी डाक व्यवस्था का ही अंग है भले ही निजी है।

दुनिया भर में 9 अक्टूबर को वर्ल्ड पोस्ट डे यानी डाक दिवस के रूप में मनाया जाता है। दरअसल इसी दिन 1874 में स्विट्जरलैंड की राजधानी बर्न में यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन ने की स्थापना हुई थी। कारण यह था कि पहले एक देश से दूसरे देश में डाक भेजने पर रास्ते में पड़ने वाले सारे देशों में उसके लिए शुल्क देना पड़ता था, उसी तरह जिस तरह आज हम टोल टैक्स देते हैं। इससे डाक से कुछ भेजना बहुत महंगा पड़ता था । इसी परेशानी को दूर करने के लिए यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन की स्थापना की गई। सन 1969 में जापान के टोक्यो में इस यूनियन के बैठक में यह निर्णय लिया गया इस दिन को विश्व डाक दिवस के रुप में मनाया जाए।

भारत में डाक व्यवस्था की शुरुआत 17 वीं सदी के अंत में हुआ। भारत के वायसराय वारेन हेस्टिंग्स ने 1774 में कोलकाता में पहला जीपीओ यानी जनरल पोस्ट ऑफिस की स्थापना की। भारत 1 जुलाई 1876 को यूनियन पोस्टल यूनियन का सदस्य बना। उस वक्त भारत एशिया का पहला ऐसा देश था, जो इस यूनियन का सदस्य बना था। सही समय से सही जगह पर डाक पहुंचे, इसके लिए 1972 में पोस्टल इंडेक्स नंबर यानी पिन कोड की शुरुआत की गई।

आज के इस डिजिटल युग में भी, जब लोग आमतौर पर चिट्टियां नहीं लिखते, तब भी भारत में डेढ़ लाख से ज्यादा डाकघर अभी भी चल रहे हैं। इनमें से 90% प्रतिशत डाकघर गांवों में हैं।✪

क्या आप जानते हैं

◆ हिमाचल प्रदेश में हिक्किम नामक एक गांव है। यहां दुनिया का सबसे ऊंचा डाकघर है। करीब 14000 फीट की ऊंचाई पर, जहां पर सांस लेना भी दूभर है, डाकिया सन 1983 से यहां के दुर्गम गांव तक चिट्ठियां पहुंचा रहा है।

◆ कश्मीर के मशहूर डल झील में फ्लोटिंग पोस्ट ऑफिस भी है। यहां सामान्य पोस्ट ऑफिस की तरह सारे काम होते हैं।

◆ देश के बाहर भारतीय डाकघर सन 1983 में अंटार्कटिका के दक्षिणी गंगोत्री में स्थापित हुआ था

धरती माता बड़ी उदार

धरती माता तुम हम सबको
जाने कितना सुख हैं देतीं।
फूल-फलों से वृक्ष लदे हैं
ओषधियाँ दे दुख हर लेतीं।।

कितने सारे अन्न उगातीं
गेहूँ, मकई, बाजरा, ज्वार।
चावल, दालें तरह-तरह की
मटर, चना अनगिन उपहार।
सरसों, राई , तिल औह्र तिलहन
भर देतीं सबका भंडार।।

भूख मिटातीं सब जीवों की
सबकी नैया तुम हो खेतीं।

मीठे, खट्टे फल उपजातीं
केला, चीकू, सेव, अनार।
लीची, आड़ू, बेर, संतरा
नारियल का अनुपम उपहार।।
तरह-तरह के आम, सपड़ियाँ
हर ऋतु में अनुपम अम्बार।।

स्वाद निराले बड़े सलोने
चलतीं धरती सदा अगेतीं।।

तुम ही देतीं हरी सब्जियां
रहें विटामिन से भरपूर।
खनिज अन्य पोषक तत्वों की
तन को शक्ति मिलती पूर।
पालक, मूली, मेथी उत्तम
धनी, पुदीना संग जरूर।।

लौकी और तरोई, बैंगन
जाने क्या-क्या तुम हो देतीं।।

सेम, टमाटर भी तो देतीं
तुम देतीं गोभी का फूल।
तुम ही देतीं अदरक, लहसुन
जिससे लिवर रहे अनुकूल।
लाल चुकंदर, गाजर देतीं
खाकर आँखें रहतीं कूल।।

चौलाई, मशरूम, ब्रोकली
मानव की झोली भर देतीं।।

तुम ही देतीं फूल सुगंधित
चंपा, बेला, ऋतु की रानी।
हरसिंगार खिले रात्रि में
सुबह सेज पर लिखे कहानी।
गेंदा, गुलाब खिलें बाग में
महकी खुशबू लगे सुहानी।।

चंदन को महकातीं अनुपम
देना ही धरती की खेती।।

सबको अपनी ओर खींचती
गुरुत्वाकर्षण की शक्ति से।
सूर्य, चन्द्रमा, तारामण्डल
प्रेम दिखाएँ भक्ति से।
रोज रात और दिन हो जाते
सूर्य परिक्रमा प्रकृति से।।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. राकेश चक्र : भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार से कई बार सम्मानित एवं पुरस्कृत। नौ दर्जन से अधिक मौलिक पुस्तकें प्रकाशित। छह दर्जन बाल साहित्य में गद्य और पद्य की मौलिक पुस्तकें।

देख चकित हम
ईश्वर से तुम क्या-क्या लेतीं।।

क्षमाशील हो धैर्यवान भी
धरती माता बड़ी उदार।
सबका बोझ सहा करती हैं
बाँटें पूरे जग को प्यार।
मौन रहो तुम आदिकाल से
प्यास बुझाती जल की धार ।।

नदियाँ, पर्वत बसे हृदय में
जल का तुम संचन कर लेतीं।।

सबसे कठिन काम

"मां, ये पढ़ाई लिखाई मेरे वश की बात नहीं है। दुनिया का सबसे कठिन काम है पढ़ना।" आर्यन झल्लाकर किताब फेंकते हुए बोला।

"मैंने तुम्हें कितनी बार कहा है कि किताबों को ऐसे नहीं फेंकते। पर तुम हो कि एक कान से सुनते हो और दूसरे से निकाल देते हो।" अंजलि गुस्से से बोली।

"तो मैं क्या करूं? आप तो बस घर में रहती हो। स्कूल जाकर पढ़ना पड़े, तो आपको भी नानी याद आ जाए।"

आर्यन अंजलि से ऐसे बात कर ही रहा था कि तभी दादी ने उसके इन शब्दों को सुन लिया।

दादी उसका कान खींचते हुए बोलीं, "मां से ऐसे बात करते हैं। तुम बहुत बिगड़ गए हो। मेरे लाड़-प्यार ने ही तुम्हें इतना बिगाड़ दिया है। और जो तुम अंजलि से यह कह रहे हो न कि अगर उसे स्कूल जाकर पढ़ना पढ़े, तो नानी याद आ जाए। तो कान खोलकर सुन लो, अंजलि ने एमएससी गणित किया हुआ है। तभी तो वह तुम्हें पढ़ा पाती है।"

दादी की डांट सुनकर आर्यन चुप हो गया। वह सिर झुकाकर अपने कमरे में चला गया।

अंजलि आर्यन को लेकर बहुत परेशान थी। ऐसा नहीं है कि उसे केवल पढ़ाई को लेकर ही कोई समस्या थी, अपितु उसे हर काम में कठिनाई नजर आती थी।

दुकान पर कोई सामान लेने जाना हो, अपना कमरा ठीक करना हो, दूध पीना हो, अपनी यूनिफॉर्म ठीक से तह करके रखनी हो, इन कामों में भी उसे बहुत परेशानी होती थी।

उस दिन रविवार था। आर्यन देर से सोकर उठा। बाथरूम में जाकर देखा, तो पाया कि कहीं भी पानी न था। वह चिल्लाकर बोला, "मां, नल में पानी क्यों नहीं आ रहा? मुझे नहाना है। गरमी से बुरा हाल है।"

अंजलि बोली, "बेटा, पाइप लाइन खराब होने के कारण आज पानी नहीं आएगा।"

यह सुनकर आर्यन बोला, "तो,

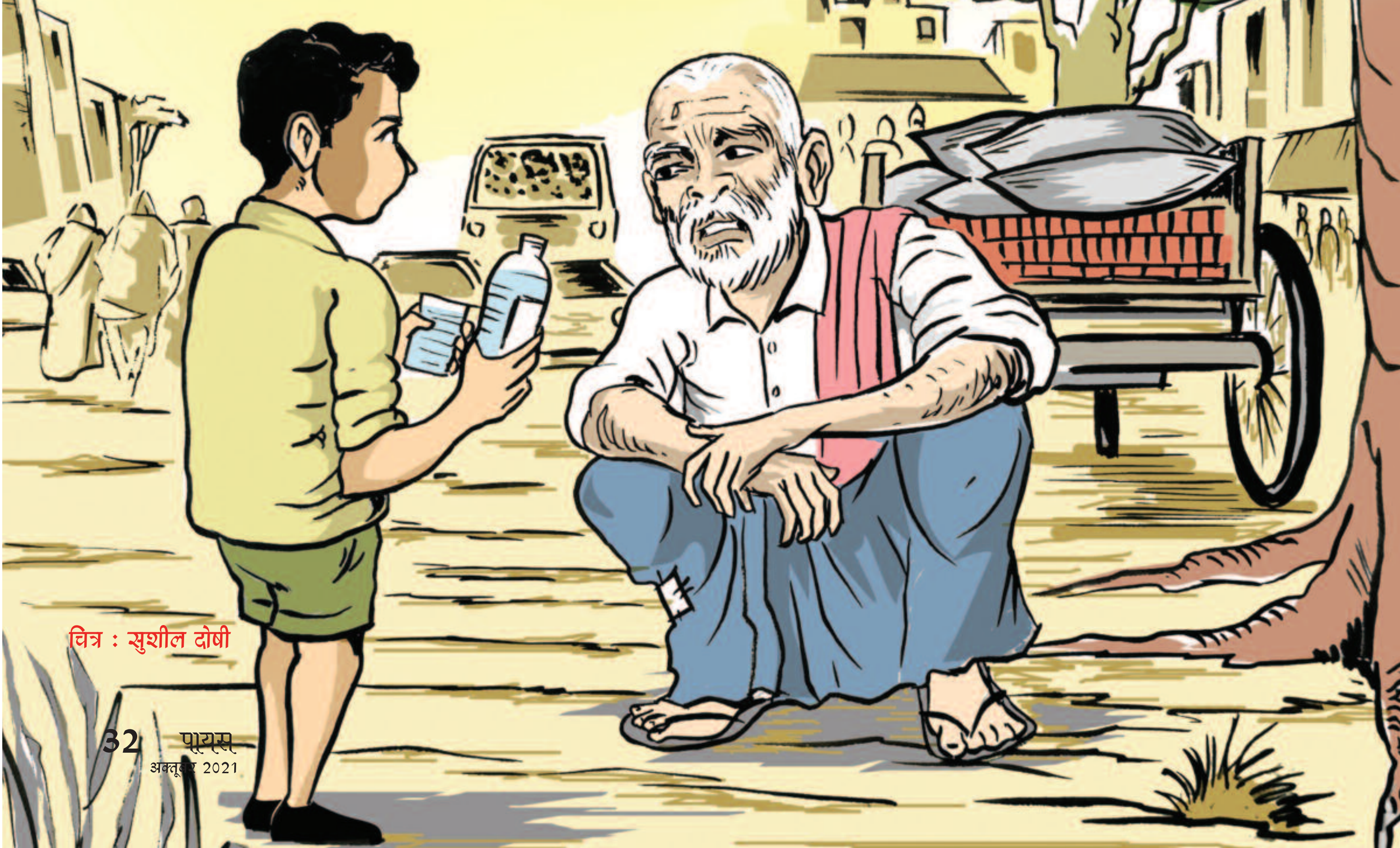

चित्र : सुशील दोषी

इतनी गरमी में मैं कैसे नहाऊं?"

अंजलि आर्यन को एक बालटी थमाते हुए बोली, "सार्वजनिक नल पास में ही है । वहां से दो-तीन बालटी पानी ले आओ। तुम नहा लेना और बाकी का काम भी हो जाएगा।"

अवसर की नजाकत को समझते हुए आर्यन बुरा सा मुंह बनाकर बालटी उठाकर बाहर चला गया। पानी से भरी बालटी लेकर वह घर में घुसा तो हांफते-हांफते उसका बुरा हाल था। मां को देखते ही खीझकर उसने गुस्से में बालटी को पटक मारा जिससे सारा पानी जमीन पर गिर गया।

यह देखकर अंजलि सकते में आ गई। दादी भी बाहर निकल कर आई और उसे हैरानी से एकटकर देखती रही। आर्यन दादी को देखते ही बोला, "क्या दादी, ऐसे घूरकर क्यों देख रही हो? पानी से भरी बालटी लाने में मेरी जान निकल गई। ऐसे में बालटी मेरे हाथ से छूट गई।"

शाम को समीर ऑफिस से आकर बोले, "कल मुझे अपने शहर के कुछ स्थानों पर जाकर लोगों की राय लेनी है। हमारी कंपनी कुछ नया करना चाह रही है। उसके लिए स्थान आदि का चयन करने से पहले लोगों की राय बहुत जरूरी है।

अगले दिन समीर अपना सामान लेकर निकलने ही वाले थे कि अचानक आर्यन को जाने क्या सूझी, वह बोला, "पिताजी, अगर कोई समस्या न हो, तो मुझे साथ ले चलिए । मैं यहां घर में पड़ा-पड़ा बोर होता रहूंगा।"

समीर आर्यन को तैयार कर अपने साथ ले गए। वे एक बिल्डिंग के सामने उतरे। उन्होंने आर्यन से कहा कि वह बाहर कुर्सी पर बैठकर उनका इंतजार करे। उन्हें अंदर मीटिंग में जाना है।

समीर के मीटिंग में जाने के बाद आर्यन इधर उधर घूमने लगा। अचानक उसकी नजर खिड़की पर गई, तो वह यह देखकर दंग रह गया कि दो व्यक्ति रस्सी के झूले पर झूलते हुए बारहवें माले की सफेदी करने में जुटे हुए थे जैसे ही ब्रश दीवारों को छूता, वैसे ही रस्सी हिलती और आर्यन की जान गले में अटक जाती। वह वहीं खड़ा-खड़ा सफेदी करने वाले व्यक्तियों को देखता रहा कि खतरे से बेखबर वे किस तरह अपने काम में जुटे थे।

समीर के आवाज लगाने पर आर्यन की तंद्रा भंग हुई ।

"क्या हुआ? कहां खो गए? कब से आवाज लगा रहा हूं।"

पिता को देखकर आर्यन पलकें झपकाता हुआ बोला, "कुछ नहीं। बस ऐसे ही।"

इसके बाद वह पिता के साथ गाड़ी में बैठकर चल दिया। आगे रास्ता बंद था। समीर बाहर निकलकर देखने के लिए सड़क पर आ गए। कुछ देर में आर्यन भी निकल आया। उसके पिता ऊपर देख रहे थे। अचानक आर्यन की नजर आसमान में गई। दो बिजली कर्मचारी इलेक्ट्रॉनिक तारों को ठीक कर रहे थे। एक व्यक्ति का संतुलन बिगड़ा और वह नीचे लटक गया था। उसने बड़ी मुश्किल से तारों को पकड़ा हुआ था। उसे हवा में लहराते हुए देखकर रास्ता जाम हो गया था। जल्दी से सुरक्षाकर्मियों को बुलाया गया और जाल की सहायता से उस कर्मी की जान बचाई गई।

आर्यन का गला सूख गया। समीर ने उसे पानी पिलाया और कहा, "बेटा, जीवन में रोजी-रोटी के लिए लोगों को अपनी जान से भी जूझना पड़ता है।"

कुछ देर बाद ट्रैफिक सामान्य हो गया। अचानक सड़क पर आर्यन की नजर एक बूढ़े व्यक्ति पर पड़ी। वह सीमेंट और ईंटों से भरी गाड़ी को बामुश्किल खींच पा रहा था। बुढ़ापे और थकान के कारण वह बार-बार हांफ जाता और माथे से पसीना पोंछने लगता।

आर्यन से यह देखा नहीं गया। वह दौड़कर बूढ़े के समीप गया और गाड़ी को खींचने में उनकी मदद करने लगा। आर्यन को देखकर बूढ़े बाबा बोले, "बेटा, अगर मैं पढ़ा-लिखा होता, तो आज यह काम नहीं कर रहा होता। दुनिया में सबसे सरल काम पढ़ाई करना है। पढ़-लिखकर व्यक्ति हर कठिनाई का हल ढूंढ़ सकता है। जो पढ़ता लिखता नहीं, उसके लिए सरल काम भी कठिन बन जाता है।"

बूढ़े बाबा की बात सुनकर आर्यन की आंखों से आंसू निकल निकल आए। समीर ने बूढ़े बाबा को खाना खिलाया।

रास्ते भर आर्यन गहन मंत्रणा में डूबा रहा। समीर और वे जब घर लौटे, तो आर्यन सीधा अपने कमरे में चला गया। आर्यन को चुपचाप देखकर अंजलि और दादी हैरानी से बोलीं, "इसे क्या हो गया है?"

समीर बिना किसी भाव के बोले, "आज यह जान गया है कि कठिन काम क्या होता है?" ✪

अपने लेखक को जानिए

रेनू सैनी : विगत 20 वर्षों से देश के विभिन्न समाचार पत्र एवं पत्रिकाओं में लगभग पांच हजार से अधिक लेख, कहानियां आदि प्रकाशित । अभी तक 25 पुस्तकें प्रकाशित। अनेक पुस्तकों का अंग्रेजी एवं मराठी में अनुवाद। भारतीय हरिशचन्द्र पुरस्कार के साथ ही अनेक पुरस्कार से सम्मानित।

11 अक्तूबर : बालिका दिवस

लड़कियां नहीं हैं कम

यह दुनिया सबके लिए है। लेकिन अगर हम सच्चाई देखें, तो इस दुनिया में जितना भेदभाव महिलाओं के साथ हुआ है, किसी के साथ नहीं हुआ। भेदभाव का इतना जहर शायद जानवरों को भी नहीं पीना पड़ा, जो महिलाओं को पिलाया गया।

आज हम इनसानों ने इतनी तरक्की कर ली है कि मंगल पर जाने की तैयारी कर रहे हैं, तब भी पता नहीं क्यों हम महिलाओं को उनका हक नहीं देना चाहते हैं। हम नहीं चाहते कि वह पढ़-लिखकर पुरुषों के बराबर आ सकें।

इस साल का थीम

इस बार थीम रखा गया है 'माय वॉइस आवर इक्वल फ्यूचर' अर्थ अर्थात 'मेरा कहना है कि हम सब का भविष्य समान होना चाहिए' और यह बात जगजाहिर है कि अगर सच में इस दुनिया में समानता होने लगे, तो अधिकांश समस्याएं खत्म हो जाएंगी

हर देश की सरकार के साथ संयुक्त राष्ट्र में दुनिया में महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए प्रयासों में लगा हुआ है। इन्हीं प्रयासों के तहत 11 अक्टूबर को 'इंटरनेशनल डे ऑफ गर्ल चाइल्ड' के रूप में मनाया जाता है क्योंकि अगर इन्हें हम अब बराबरी का दर्जा देंगे, तो अपने ही भविष्य को संवारेंगे।

सन 1995 में चीन के बीजिंग शहर में कई देशों की बैठक हुई, जिसमें बच्चियों के लिए ज्यादा अधिकार की बात की गई। इसके बाद 19 दिसंबर 2011 को संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेंबली ने हर साल 11 अक्टूबर को 'इंटरनेशनल डे ऑफ द गर्ल चाइल्ड' के रूप में मनाने की बात पर मुहर लगा दी।

आज भी महिलाओं पर अत्याचार की शुरुआत आमतौर पर बच्चियों से ही होती है। इनका हर तरह से शोषण किया जाता है। इस दिवस का मुख्य उद्देश्य यही है कि लोगों को जागृत किया जाए कि महिलाओं का सम्मान तो करना ही है, उससे पहले हम बच्चों के प्रति अपने विचारों को बदलें और उन्हें स्वस्थ वातावरण में रहने और विकास करने दें।

आज कई विकसित देशों में बड़े-बड़े पदों पर पहुंचकर महिलाओं ने साबित भी किया है कि अगर उन्हें मौका दिया जाए, तो वे कहीं से भी पुरुषों से कम साबित नहीं होंगी ✪

तुम क्या कर सकते हो

महिलाओं का सम्मान करना तुम बचपन से ही सीख सकते हो और यह शुरुआत तुम स्कूल में अपनी दोस्त लड़कियों का सम्मान करके कर सकते हो। तुम्हारे साथ की जो भी लड़कियां हैं, उनके साथ खेल में किसी तरह के भेदभाव मत करो। उनकी बातों पर भी वैसे ही ध्यान दो जैसा तुम अपने लड़के दोस्तों की बातों पर ध्यान देते हो। भरोसा रखो कि यह लड़कियां तुम्हारे लड़के दोस्तों से ज्यादा ध्यान रखने वाली और सहायता करने वाले सिद्ध होंगी। घर में अपनी मम्मी, बहन आदि महिलाओं का सम्मान करो और खुद को कभी उनसे श्रेष्ठ मत समझो। एक बार अगर तुम यह करना सीख जाओगे, तो भविष्य में तुम्हें कभी कोई परेशानी नहीं आएगी

बाहर की मत चीज़ें खाओ

चित्र : सुशील दोषी

न इतनी भी ज़िद में आओ
बाहर की मत चीज़ें खाओ।
ये जो है दिखने में प्यारी
करती बस नुकसान हमारी।
जिस्म को ये बीमार बना दे
और सच में लाचार बना दे।
नहीं ज़रा भी इसमें ताक़त
लग जाती है बुरी ये आदत।
घर का खाना सबसे आला
बिल्कुल साफ-सफाई वाला

रोटी, चावल, सब्ज़ी, पूरी
ये खाना है बड़ा जरूरी।
सेब, आम, अमरुद और केला
मटर, टमाटर, सेम करेला।
काजू, किसमिस और मखाना
दूध, दही और घी भी खाना।
खान-पान जो ठीक रखेंगे
कभी नहीं बीमार पड़ेंगे।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. जियाउर रहमान जाफरी : हिन्दी से एम ए, बीएड, पत्रकारिता, यू जी सी नेट और पीएचडी हिन्दी। बाल साहित्य की दो, 'चाँद हमारी मुट्ठी में है', और 'मैं आपी से नहीं बोलती' पुस्तक प्रकाशित। आलोचना और हिन्दी ग़ज़ल की पुस्तकों का भी प्रकाशन। बिहार शताब्दी सम्मान से पुरस्कृत।

मानव को सवाल

एक दिन जंगल में कुछ पशु-पक्षी मिलकर बैठे थे। उन्होंने देखा, दूर से बंदर लंबी छलांगे लगाता हुआ उनकी तरफ ही आ रहा है। आते ही वह बोला, "अरे तुम यहां क्या कर रहे हो? मेरे साथ शहर चलो। जंगल में क्या रखा है? शहर की जिंदगी बड़ी मजेदार है।"

मैना ने पूछा, "बंदर भाई, बताओ तो शहर में क्या-क्या है ? हमें भी तो पता चले कुछ।"

बंदर ने शहर की जिंदगी की बातें इतनी बढ़ा-चढ़ाकर कहीं कि मैना एकदम तैयार हो गई और बोली, "फिर तो मैं भी शहर जाकर रहूंगी।"

बगुला बोला, "मैना बहन! मेरी एक बात कान खोलकर सुन लो। शहर में हमारे जंगल जैसी ताजी हवा के लिए तरसकर रह जाओगी। जंगल छोड़कर शहर जाना अच्छी बात नहीं।"

"नहीं भाई नहीं। जंगल से मेरा मन उक्ता गया है। अब मैं बंदर भैया के साथ शहर जाऊंगी और फिर शहर की जिंदगी का खूब आनंद लूंगी। शहरी लोगों की

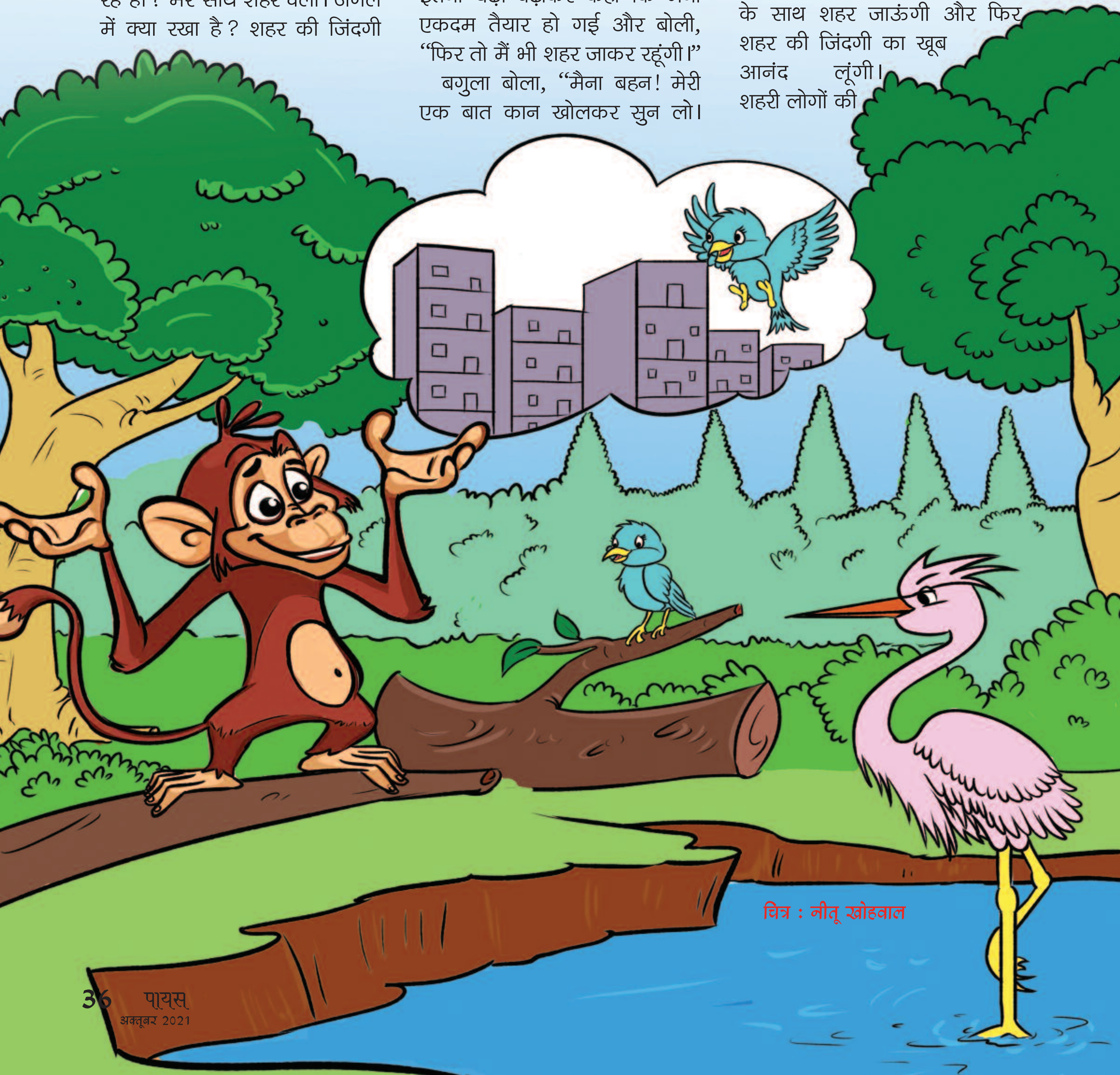

चित्र : नीतू खोहवाल

तरह ही बोलूंगी और उन जैसी ही अपनी जीवन-शैली बनाऊंगी। फिर तुम मुझे नहीं पहचान सकोगे। अब मैं चली।" यह कहकर मैना बंदर के साथ शहर की तरफ रवाना हो गई।

बगुले ने जोरदार आवाज दी, "तुम जंगल को छोड़कर बड़ी गलती कर रही हो। मेरी बात याद रखना। शहर अब पहले जैसे नहीं रहे। अब भी मान जाओ वर्ना पछताओगी।"

लेकिन मैना ने किसी की न मानी और उड़ती-उड़ती आंखों से ओझल हो गई। शाम तक वह शहर आ पहुंची।

जगमग-जगमग करता शहर देखते ही मैना के मुंह से निकला, "वाह !" वह रात काटने के लिए बस स्टैंड के पास सड़क के किनारे एक खंभे पर आ बैठी। खंभे के नीचे सड़क पर ट्रैफिक की खूब भीड़ थी।

"यहां तो लोग रात को भी आराम नहीं करते। क्या इन्हें आराम की जरुरत नहीं ?" मैना ने सोचा।

मैना काफी थकी हुई थी और सोने का प्रयत्न कर रही थी, लेकिन बसों, कारों-ट्रकों के जोरदार भोंपू ने उसे सोने नहीं दिया। उसे लगा, जैसे तेज आवाज में बज रहे भोंपू उसके कानों के पर्दे ही फाड़ डालेंगे। अभी मैना को खंभे पर बैठे थोड़ी ही देर हुई थी कि उसकी आंखों में वाहनों के धुएं से जलन होने लगी। वह बार-बार आंखों को मसलती हुई परेशान हो गई। उसने बेचैनी से वहां रात गुजारी।

सुबह हो गई। मैना कुछ खाने-पीने की तलाश में इधर-उधर उड़ने लगी। एक आटे की चक्की के बाहर उसे कुछ दाने पड़े दिखाई दिए। इस से पहले कि वह दाना चुगती, एक शरारती लड़के ने एक बड़ा कंकर उठाकर उसकी तरफ फेंका। वह मुश्किल से बची।

"धत् तेरे की।" यह कहकर मैना वहां से उड़ गई।

मैना अब शहर के बाजार देखने के लिए पहुंची। वह एक ऐसी जगह आ गई, जहां एक ठेले वाला छोले-भटूरे बेच रहा था। छोले-भटूरे बेचने वाले के पास गरीब मजदूरनुमा लोगों की बड़ी भीड़ जमा थी। ठेले के आसपास खूब मक्खियां भिनक रहीं थीं। सफाई का नामो-निशान नहीं था। बर्तन धोने वाला लड़का जूठे बर्तनों को पानी की एक छोटी सी बालटी में बार-बार डालकर बाहर निकाल रहा था। फिर उन्हें एक मैले कुचैले छोटे से कपड़े के साथ साफ करके ठेले पर रख रहा था।

'छी छी। यहां तो बिल्कुल भी सफाई नहीं है। ये तो सरेआम बीमारी मोल ली जा रही है।' मैना ने सोचा। उसका मन फिर खराब हो गया। वह वहां से उड़ी और एक बड़ी फैक्ट्री की इमारत पर जा बैठी। उसे थोड़ा बहुत खाने के लिए मिल गया था। फिर उसने नीचे नजर डाली। फैक्ट्री की नाली में पानी बह रहा था। फैक्ट्री से निकलने वाला यह पानी साफ और निर्मल दिखाई दे रहा था। जब वह पानी पीने के लिए नीचे आई और पानी की एक घूंट पी, तो उसके मुंह का स्वाद एकदम कड़वा सा हो गया। उसने एकदम सिर झटक दिया।

"क्यों बहन, पानी अच्छा नहीं लगा ?" पास ही छोटे से वृक्ष पर बैठे मरियल से तोते ने व्यंग्य से पूछा।

"यह पानी इतना कड़वा क्यों है ? लगता है, ऐसा पानी पी कर तो मर जाऊंगी।' मैना ने कहा।

"यह पानी कैमीकल वाला है। केवल यहां का पानी ही नहीं, बल्कि शहर का पानी भी जहरीला हो चुका है। इसे पीकर मनुष्य ही नहीं, हम पक्षी भी बीमार पड़ते जा रहे हैं। मेरी मजबूरी यह है कि बूढ़ा के कारण मैं अब दूर तक उड़कर नहीं जा सकता।" तोते ने कहा।

यह सुनकर मैना को दुख हुआ। बिना पानी पीए वह वहां से उड़ी और एक पार्क में जा पहुंची। वहां का माहौल उसे इसलिए बुरा लगा क्योंकि पार्क में गंदगी के ढेर लगे थे और उन सूअर और आवारा कुत्ते मुंह मार रहे थे।

"ओह ! क्या पार्क इसे कहते हैं ? यहां तो मेरा दम घुटता है।" यह कह कर मैना ने उड़ान भर ली। उड़ते-उड़ते उसने एक मैरिज पैलेस में यह सोचकर एकदम नीचे आ गई कि उसकी भूख वहां पर मिटेगी। वह वहां पर ज्यादा देर न टिक सकी क्योंकि ऑरकेस्ट्रा वालों के हुड़दंग और ऊंची आवाज में बज रहे गानों ने उसे परेशान कर दिया।

"तौबा-तौबा ! मैं तो ऐसे शहर में दो दिन भी नहीं रह सकती। मैं चली अपने घर । मेरा जंगल तो शहर से सौ दर्जे बेहतर है।"

यह सोचकर मैना जंगल की ओर उड़ गई और मनुष्य के लिए कई सवाल छोड़ गई। ✪

अपने लेखक को जानिए

डॉ. दर्शन सिंह 'आशट' : शिक्षा : एम. ए . पंजाबी और उर्दू। पंजाबी बाल कहानियों का आलोचनात्मक अध्ययन' विषय पर पीएचडी। बच्चों के लिए पंजाबी, हिंदी, . और अन्य भारतीय भाषाओं में 110 पुस्तकें प्रकाशित। पंजाबी बाल साहित्य का इतिहास भी लिखा। साहित्य अकादेमी बाल साहित्य पुरस्कार विजेता।

पंख टूट गए

बड़े प्यार से मां ने उसका नाम रानी रखा था मगर उसे रोज सुबह अपनी मां के साथ लोगों के घर काम करने जाना पड़ता थी। मां जब तक घरों में बर्तन, कपड़े करती, रानी और कामों को कर देती। इस तरह वह मां की सहायता करती। पैसे से रानी भले ही गरीब थी किंतु अपनी मां के लिए तो वह रानी ही थी। बहुत प्यार करती थी मां अपनी रानी को।

त्योहार का समय थ, मालिकों के घरों में सफाई अभियान चला हुआ था। घर के पुराने, टूटे- फूटे सामानों को घर से बाहर फेंका जा रहा था। अचानक रानी की नजर एक खिलौने पर पड़ी। उसका मन उस ओर खिंचता चला गया।

"मां! मालकिन से पूछ ना कि मैं वह खिलौना ले लूं?"

रानी की आवाज मालकिन तक पहुंच गई, बोलीं, "ले लो, मगर वह तो ट्विंकल की टूटी हुई परी है। उसका एक पंख टूट गया है।"

"मैं जोड़ लूंगी मालकिन।...क्या मैं ले लूं वह परी।"

"हां-हां ले लो, मुझे कोई आपत्ति नहीं।"

रानी उस परी को घर ले आई। देखने में बहुत प्यारी थी परी। रानी ने देखा, शायद कई दिनों से कूड़े में पड़े होने से उसके चेहरे पर धूल लग गई थी। रानी ने परी को पानी से साफ किया तो उसका चेहरा ऐसे चमक उठा, मानो अभी बोल पड़ेगी।

रानी मां से बोली, "मां! देख न परी का एक पंख टूटा है, अगर तू एक नया पंख इसे चिपका दे, तो यह एकदम नई हो जाएगी। फिर मैं अपनी सहेलियों को बताऊंगी मेरे पास परी है।"

मां ने मिलते रंग के कपड़े से परी का दूसरा पंख बना दिया। रानी ऐसी

सुंदर परी को पाकर फूली न समाई। रात को वह परी को अपने साथ लेकर सो गई।

नींद में उसे लगा, परी मानो जीवित हो उससे कह रही है, "धन्यवाद रानी! तुमने मुझे मेरा टूटा पंख लौटा दिया। अब मैं पहले की तरह आकाश में उड़ सकती हूं। अपने साथियों से मिल सकती हूं।"

"तो क्या परी तुम मुझे छोड़कर चली जाओगी?" रानी ने पूछा।

"ऐसे कैसे हो सकता है रानी। तुमने मुझे फिर से नया जीवन दिया है। मैं तुम्हें अपने देश घुमाऊंगी।"

"मगर मां कहती है, परियों का देश तो बहुत ऊपर होता है, आसमान में।" रानी बोली।

"हां, तो क्या हुआ, मैं तुम्हें अपने साथ आसमान पर अपने देश घुमाने ले जाऊंगी..., अपने दोस्तों से मिलाऊंगी।"

"तुम! मगर तुम तो नन्ही सी हो, मुझे कैसे अपने पंख पर बैठाओगी?"

"चिंता मत करो रानी, मेरे पास जादू की छड़ी जो है।" परी ने हाथ घुमाते हुए कहा।

"चकु नकु मकु बूम।" देखते ही उसके हाथ में छड़ी आ गई। अब परी ने फिर वही शब्द कहे और छड़ी घुमाई।

छड़ी घुमाते ही उड़न खटोला आ गया। परी अब रानी को अपने देश की सैर करा रही थी। वहां बड़े-बड़े टॉफियों के पेड़ थे। पंछियों के रंग भी सुनहरे थे। शीशे सा चम-चम चमकता महल, मानो, हीरे का पहाड़ हो, दूध सी सफेद धार बहाते झरने। दुनिया ही न्यारी थी वहां की।

"परी, तुम्हारा देश कितना सुंदर है, यहां तो सब कुछ बहुत अच्छा है। मगर मेरे पास तो इतनी सुविधा नहीं...। क्या तुम मेरे साथ नहीं रहोगी...? बोलो न परी... क्या तुम मुझे भूल जाओगी?...बोलो न परी चुप क्यों हो?" रानी सच में नींद में बड़बड़ा रही थी। तभी मां ने उसे जगाया,

"रानी! क्या हुआ? परी, कहीं नहीं गई, यहीं है तुम्हारे पास।"

रानी ने आंखें खोलीं। अपने पास परी को पाकर झट उसे सीने से लगा लिया। ✪

अपने लेखक को जानिए

डॉ. लता अग्रवाल : डॉ. लता अग्रवाल, भोपाल, शिक्षा एवम साहित्य पर अनेक पुस्तकों का प्रकाशन। बाल साहित्य पर 7 पुस्तकें। स्कूल स्तर से लेकर महाविद्यालय स्तर पर रचनाएं पाठ्यक्रम में शामिल। चार अंतरराष्ट्रीय व अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार। 15 राज्यों से उत्कृष्ट लेखन हेतु सम्मानित।

अपने भीतर के लेखक को उड़ने के लिए खुला आसमान दें

◆ अपनी रचना को दूसरों के सामने लाने के लिए, अपनी कहानी, कविता या लेख को पी.डी एफ. फार्मेट में किताब या पत्रिका के रूप में दुनिया के सामने लाएं।

◆ आप केवल लिखें। बाकी सब हम पर छोड़ दें।

◆ ब्लैक एंड ह्वाइट या रंगीन चित्र भी बनवाने की सुविधा है।

◆ संपादन में 25 वर्षों का अनुभव

संपर्क करें

अनिल जायसवाल
9810556533 7982014609
akjaiswal2592@gmail.com

ANIL JAISWAL
Jais Features
akjaiswal2592@gmail.com
9810556533
7982014609

हिंदी में किसी भी प्रकार की, खास तौर पर बच्चों के लिए प्रकाशन सामग्री या कार्य के लिए संपर्क करें. प्रूफ रीडिंग, संपादन, संकलन, टाइपिंग, मैगजीन सेटिंग, डिजाइनिंग, पी.डी. फार्मेट में पत्रिका या ई. पत्रिका निकालने की सुविधा भी उपलब्ध है.

नंदन बाल पत्रिका में संपादन का 25 वर्षों का अनुभव

11 अक्तूबर

वर्ल्ड फूड डे

वर्ल्ड फूड डे की स्थापना कुछ मित्र देशों ने नवंबर 1979 में की। हंगरी के एक मंत्री ने इसकी स्थापना में मुख्य भूमिका निभाई थी।

16 अक्तूबर का दिन चुनने का कारण था कि सन 1945 में 16 अक्तूबर के ही दिन 42 देशों ने कनाडा में संयुक्त राष्ट्र के अंतर्गत फूड एंड एग्रीकल्चर ऑर्गेनाइजेशन की स्थापना की थी। इसी दिन की याद में 16 अक्तूबर को 'विश्व खाद्य दिवस' मनाया जाता है

दुनिया की आबादी में से करीब 9 प्रतिशत लोग भुखमरी के शिकार हैं। यानी करीब 70 करोड़ लोगों के पास खाना नहीं है और हर साल एक करोड़ और लोग भुखमरी के शिकार लोगों की लिस्ट में शामिल हो जाते हैं। इनमें से 38 करोड़ लोग एशिया से है। उसके बाद 25 करोड़ लोग अफ्रीका से हैं।

करीब 14 करोड़ बच्चे जिनकी उम्र 5 साल से कम है, वे भूख के कारण किसी ने किसी बीमारी की चपेट में हैं।

आज भले ही दुनिया तरक्की कर रही हो, लेकिन दुनिया में भुखमरी बढ़ती जा रही है और इसका शिकार हर तबके के लोग हो रहे हैं। ऐसा नहीं कि सब परेशानी इसलिए है कि दुनिया में अन्न या खाने की कमी है। माना जाता है कि गलत रख-रखाव और लापरवाही के कारण हर साल करीब 150 करोड़ टन भोजन बर्बाद हो जाता है। जब खाना बर्बाद होता है, तो इसको उगाने में जो श्रम लगा, जो लागत आई, जो बिजली-पानी खर्च हुआ, वह सब बर्बाद हो जाता है। इस कारण संसार में खाने की वस्तुओं की कीमत बढ़ती है और गरीब आदमी की पहुंच से दूर हो जाती है।

कई बड़े देश अनाज की कीमत ना घटे, यह सोचकर भी अपने यहां उगाए हुए अन्न को जान-बूझकर बर्बाद कर देते हैं, परंतु उसे गरीबों तक नहीं पहुंचने नहीं देते। ठीक से भंडारण ना होने के कारण भी करीब 15 प्रतिशत खाने की वस्तुएं बर्बाद हो जाती हैं।

आज करीब 150 देश इस मुहिम से जुड़े हुए हैं। हर साल एक नारा दिया जाता है। इस साल का स्लोगन है–'स्वस्थ कल के लिए भोजन को सुरक्षित रखें।'

अपने शानदार प्रयास के लिए वर्ल्ड फूड प्रोग्राम को 2010 में नोबल शांति पुरस्कार भी दिया गया।

रसगुल्ले ओ रसगुल्ले

रसगुल्ले ओ रसगुल्ले।
सब मित्रों से मिलजुल ले।।
जितनी बार करे मन तेरा,
और कड़ाही में घुल ले।

दूर तुझे ले जाना है,
घंटों समय बिताना है।
मोह न रखना छाया से,
दिन भर धूप ही खाना है।

अपने मन की सबको सुना,
सबके मन की तू सुन ले।
रसगुल्ले ओ रसगुल्ले।।

आतुर हैं सब खाने को,
स्वाद का लुत्फ़ उठाने को।
नाम ही तेरा काफी है,
मुंह में पानी लाने को।

आया वक़्त बिछड़ने का,
गले साथियों से मिल ले।
रसगुल्ले ओ रसगुल्ले।

अपने लेखक को जानिए

वसीम अहमद नगरामी : अध्यापन के साथ-साथ विगत तीन दशकों से देश के प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में कविता, कहानी, व्यंग्य, पहेलियों आदि का प्रकाशन। नंदन, बच्चों का देश, बाल भास्कर, बालभूमि, बालवाणी, बाल भारती आदि में लेखन। एक पुस्तक प्रकाशित।

तितली परी

सुनयना की उम्र पांच छ साल की रही होगी। उस रात सूर्योदय में अभी कई घंटे बाकी थे। सुनयना ने पाया कि वह फूलों की सुंदर घाटी में पहुच गई है। वहां प्यारे-प्यारे महकते फूल मन को मोह रहे थे।

सुनयना फूलों की एक-एक डाली को घ्यान से देख रही थी। कुछ फूलों पर तो तितलियां बैठी थीं। लगा जैसे फूलों को चूम रही हैं फूलों भी खुश नजर आ रहे थे।

तभी सुनयना ने देखा कि एक तितली सुंदर परी बन गई और उसने उसकी ओर बढ़कर पूछा, "क्या देख रही हो?"

सुनयना ने कहा, "मुझे फूल बहुत प्यारे लगते है, पर आप कौन हैं? और यहां के फूल इतने सुंदर क्यों है?"

परी ने उसे अपने साथ चलने को कहा वह बोली, "जहां हम जा रहे है वहां तुम्हें सुंदर-सुंदर फूल और परियां मिलेगी। मैं तुम्हे परीलोक में ले चलती हूं। वहां, तुम्हें सुंदर चीजें व परियां भी मिलेंगी। वे तुम्हें सब कुछ बताएंगी।"

सुनयना ने अपनी चिंता उसे बताते हुए कहा, "मेरे माता पिता मुझे यहां न पाकर चिंता करने लगेगें।"

तब भोली परी ने उसे आश्वस्त किया, "मैं तुम्हारे माता-पिता को पता चलने से पहले ही तुम्हे वापस तुम्हारे घर ले छोड़ दूंगी।"

परी अह सुनयना को अपने पंखों पर बैठा कर परी लोक में अपनी रानी के पास ले गई। परियों की रानी ने पहले तो सुनयना को अच्छी-अच्छी स्वादिष्ट चीजें खिलाई, फिर प्यार से दुलारा और अन्य परियों को आदेश

चित्र : नीतू खोहवाल

दिया कि उसे परी लोक की सैर पर ले जाए। वहां चारों और नदी तालाब, छोटे-बड़े, जलाशय व सुंदर नजारे थे। इतने सुंदर पक्षी व फूल उसने कभी नहीं देखे थे।

वहीं पर परियां सुंदर नृत्य व गीत गा रही थीं। पकवान बना रही थीं, जिधर भी वह गई, कोई ना कोई काम तो सब कर ही रही थीं।

सभी को काम करते देख सुनयना को वहां की व्यवस्था व सुंदरता का राज समझ आया। सभी छोटी-बड़ी परियां आपस में प्रेम से रह रही थीं। सुनयना विचार करने लगी, 'हम तो आपस में बात-बात में ही झगड़ पड़ते हैं और आपस में बोलना भी बंद कर देते है। और ये परियां तो आपस में कितने प्यार से रह रही हैं और कितना परिश्रम कर रही हैं।'

वह सोचने लगी कि हम धरती वासी भी यदि अपना काम मन लगा कर करें, मेहनत से न घबराएं, अपने समय का सही उपयोग करें तो हम भी वहां का वातावरण और भी सुंदर बना सकते हैं।

परियों का दिया हुआ नाश्ता करने के बाद सुनयना को वही परी वापस धरती पर ले आई। अपने पंखों से नीचे उतारती हुई बोली, "सुनयना, जब भी तुम्हारी इच्छा हो, तुम मुझे याद कर लेना। मै तुम्हें परी लोक की सैर करा लाऊंगी।"

सुनयना ने भी दोनों हाथ जोड़ कर परी का आभार माना।

तभी सुनयना को मां ने झकझोर कर उठा दिया, क्योंकि सुबह हो गई थी। वह बोलीं, "तुम किसे नमस्ते कर रही हो? किसका आभार मान रही हो। उठो सुबह हो गई है।

सुनयना भी सुबह का स्वागत करने के लिए नए संकल्प के साथ तैयार थी।

अपने लेखक को जानिए

प्रभा पारीक : प्रभा पारीक : मूलतः राजस्थान की, पर गत चालीस वर्षों से गुजरात में निवास। लेखिका, स्वतंत्र पत्रकार, बाल साहित्यकार, बाल साहित्य हेतु निरंतर प्रयासरत। अनेक समाचार पत्र-पत्रिकाओं में सतत् लेखन। तीन उपन्यास, तीन कहानी संग्रह प्रकाशित। आकाशवाणी जयपुर व भरूच स्थानीय टीवी चैनल से अनेक कथावार्ता प्रसारित।

24 अक्तूबर : संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस

द्वितीय विश्वयुद्ध में बहुत जान-माल की हानि हुई। यहां तक कि जापान जैसे देश पर परमाणु बम का भी प्रयोग किया गया, जिसका असर आज भी दिखाई देता है।

इस युद्ध के बाद यह सोचा गया कि भविष्य में ऐसा विकट युद्ध न हो, इसके लिए एक ऐसी संस्था की जरूरत है, जो सभी देशों को मान्य हो और वह त्वरित निर्णय लेकर युद्ध जैसी स्थिति को टाल सके।

इसी भावना के अनुरूप 26 जून 1945 को 50 देशों ने मिलकर एक पत्र पर हस्ताक्षर किए, जिनमें भारत भी शामिल था। बाद में उनके साथ पोलैंड ने भी हस्ताक्षर किए, तो संयुक्त राष्ट्र की स्थापना में 51 देशों की भूमिका मानी गई।

24 अक्टूबर 1945 को आधिकारिक रूप से संयुक्त राष्ट्र का अस्तित्त्व सामने आया। इसके लिए

जो संयुक्त राष्ट्र शब्द का प्रयोग किया गया, उसे अमेरिका के राष्ट्रपति फ्रेंकलिन डी. रूजवेल्ट ने विश्व युद्ध के दौरान किया था।

दरअसल पहले भी ऐसे संगठन के गठन का प्रयास हुआ था। सन 1929 में प्रथम विश्व युद्ध के बाद राष्ट्र संघ का गठन हुआ था। परंतु यह बहुत कमजोर संगठन था। उसके पास कोई भी ताकत नहीं थी।

आज तकरीबन विश्व के सारे देश इस संगठन के सदस्य हैं इनमें से पांच देश इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस, रूस, चीन सबसे शक्तिशाली देश हैं और इनकी सहमति के बिना कोई भी प्रस्ताव पास नहीं हो पाता।

संयुक्त राष्ट्र को यह हक है कि वह अपने मित्र देशों से सेना लेकर किसी प्रभावित देश में भेज सकता है, ताकि वहां शांति स्थापित की जा सके।

इसका मुख्यालय अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर में है। इसकी अन्य संस्थाओं के मुख्यालय जिनेवा सहित अन्य देशों में भी है।

इसकी एक महत्त्वपूर्ण संस्था का नाम है, 'संयुक्त राष्ट्र बाल कोष' जिसे हम 'यूनिसेफ' के नाम से जानते हैं। यह संस्था बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा और सुरक्षा पर ध्यान देती है और पूरी तरीके से बाल विकास के प्रति समर्पित है।

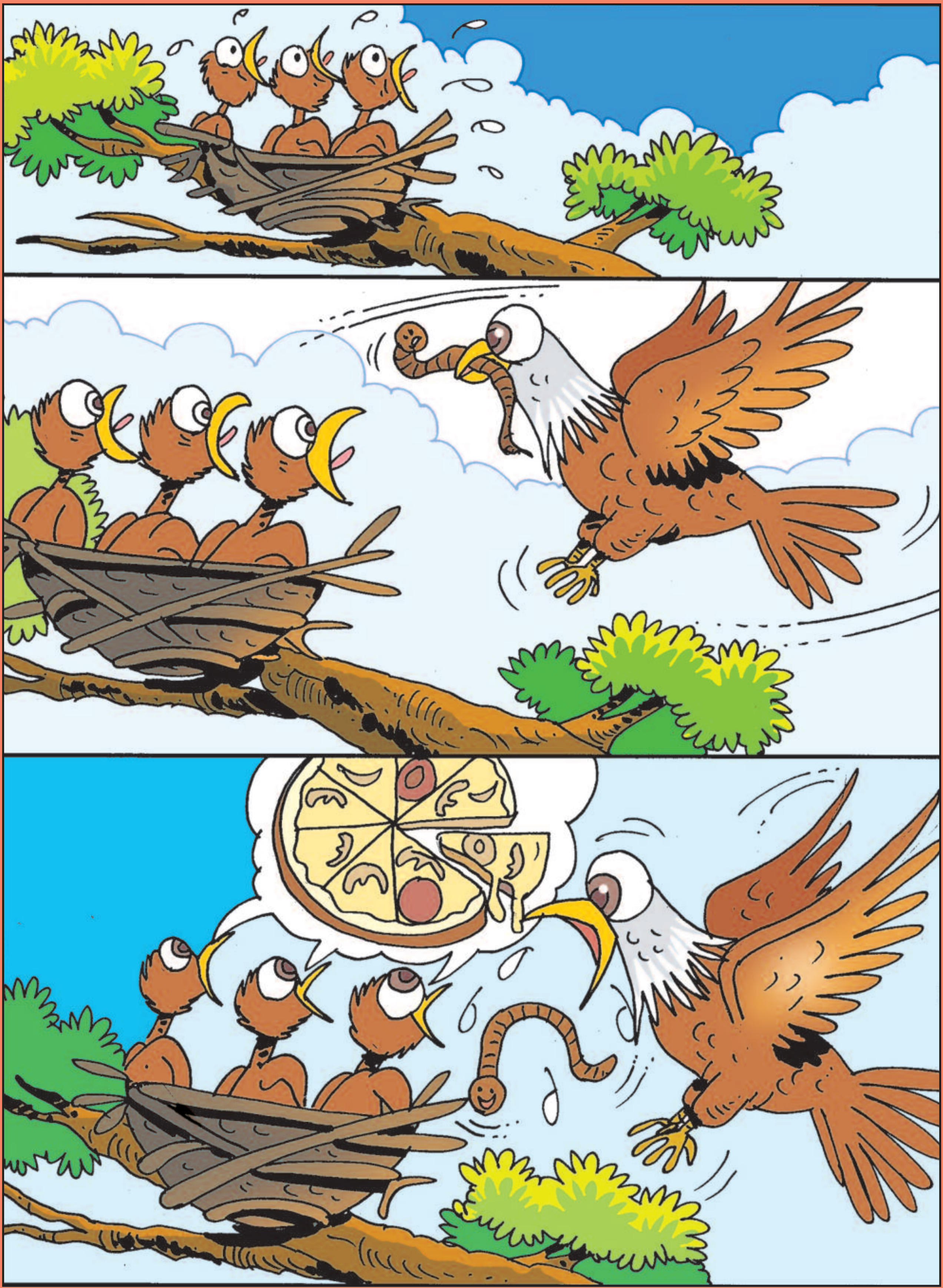

बाघिन से सामना

मार्च 2018 में बड़े भैया का फोन आया, "अनिल, कभी हम दोनों भाई एक साथ अकेले कहीं बाहर नहीं गए हैं। मैंने ताडोबा टाइगर रिज़र्व का प्रोग्राम बनाया है। तुम चलोगे?"

बड़े भैया कोलकाता में रहते हैं। पिता नहीं हैं, तो वही घर के बड़े हुए। बड़े भाई के आग्रह और आदेश में कोई फर्क नहीं होता। ना कहने का न सवाल था और न मन। फट से सहमति का सर्टिफिकेट मैंने दे दिया। तय हुआ कि नागपुर में 26 को मिलेंगे, वहां से चंद्रपुर चला जाएगा, जहां से ताडोबा नजदीक है।

हम दोनों भाई नागपुर पहुंचे। वहां हमारी गाड़ी तैयार खड़ी थी। वहां से हम दोनों ताडोबा के पास बम्बू फारेस्ट रिसोर्ट पहुंचे, जहां ठहरने की व्यवस्था थी। कमाल की बात यह है कि जिस गांव में रहते हुए हम शर्मिंदगी महसूस करते हैं, वैसा ही वातावरण शहर के रेसार्ट में जब उपलब्ध करवाया जाता है, तो हम बहुत खुश होते हैं।

अगले दिन से हमारा टूर शुरू हुआ। हम ताडोबा अंधारी टाइगर रिज़र्व में सुबह की सफारी पर गए। इसमें हमें कोर यानी बीच के हिस्से की बुकिंग नहीं मिली। हमें बफर जोन में जाना पड़ा। यह जंगल काफी बड़ा था और खास बात यह थी कि यहां अधिकांश वृक्ष बांस के थे। जंगल बेहद सुंदर और रास्ते बेहद साफ थे। कुछ देर तो हम निराश हुए, पर जब यह सूचना मिली कि इस इलाके की रानी जूनाबाई आसपास ही घूम रही है, तो मन को कुछ शांति मिली। आखिर कई जानवरों से मिलने के बाद उस इलाके की रानी बाघिन जूनाबाई के बच्चे से मुलाकात हुई। फिर जंगली कुत्तों को एक जंगली सुअर का शिकार करते अपनी आंखों से देखा। हिरन, सांभर स्पॉटेड डियर, जंगली भैंसा और नील गाय आदि के भी आसानी से दर्शन हुए। खास बात यह है कि हम इनसानों को देखकर ये जानवर अब भागते नहीं। उन्हें पता है, हम उन्हें देखने आए हैं। इसलिए हमें अनदेखा कर वे चरते रहते हैं या अपनी राह चले जाते हैं। खैर, प्रथम दौर में हमें यही कुछ देखने को मिला।

उसी दिन दोपहर को कोर क्षेत्र की बुकिंग थी। इस बार हमारा मन बल्लियों उछल रहा था, क्योंकि

गाइड के अनुसार इस बार हमें उस क्षेत्र के बाघिन के परिवार को देखने का मौका मिलने वाला था।

वही हुआ। पहले हम उस क्षेत्र की महारानी बाघिन माया के दो बच्चों से मिले। दोनों भाइयों को आपस में दुलार से लड़ते-खेलते देखा। फिर आगे बढ़ने पर उनके पिता बाघ मटकासुर को देखा। लौटते समय माया को अपने बच्चों के साथ झील के पानी में अठखेलियां करते देखना का सुख मिला।

असली मजा तो बाकी था। अगले दिन सुबह हम फिर कोर क्षेत्र में गए। पर गाइड से कहकर इलाका बदलवाया। हम पहुंचे बाघिन शबनम के क्षेत्र में। उसके भी दो बच्चे हैं। जब हम विशाल झील के किनारे पहुंचे, पता चला, शबनम पानी पीकर जा चुकी है। गाइड ने भरोसा दिलाया कि वह लौटेगी। यही हुआ और क्या गजब हुआ। हमारी खुली जिप्सी और दूसरे जिप्सी के बीच मे 40 मीटर की दूरी थी।

शबनम जंगल से बाहर निकलकर हमारे रोड पर ठीक हमारी जिप्सी के करीब 15 मीटर पीछे आ गई। यही नहीं, वह मस्त चाल से हमारी जिप्सी की ओर बढ़ने लगी। जिप्सी खुली हुई थी। हम उसकी एक छलांग की जद में थे। गाइड ने यह कहकर और डरा दिया कि शबनम को अभी शिकार नहीं मिला है और उसका पेट खाली है। हम दोनों भाई दम साधे उसे देख रहे थे। मैं फोटो खींच रहा था और भैया वीडियो बना रहे थे। इस बीच एक दो बार शबनम से मेरी आंखें मिलीं, पर उसने मनुष्य को ओछा समझकर कोई भाव नहीं दिया और

अपनी धुन में बढ़ती रही।

खतरा भांपकर ड्राइवर ने धीरे-धीरे गाड़ी आगे बढ़ाई। मैं उसे कैमरे से शूट करता रहा, वीडियो भी बनाता रहा और भैया तो उसकी वीडियो बनाने में खोए हुए थे। करीब 10 मीटर तक शबनम बाघिन हमारे पीछे सधी हुई चाल से चलती रही। फिर हमें अनदेखा कर घास की ओर उतर गई और झील में पानी पीने चली गई। पानी पीकर वह तैरकर दूसरे किनारे शिकार करने चली गई।

उसके जाते ही बाकी टूरिस्टों ने हमें घेर लिया। सब मेरे कैमरे की फोटो देखकर आहें भरने लगे। लोगों को हमारे भाग्य से जलन हो रही थी कि हमें शबनम का फ्रंट व्यू मिला। उन्हें हम दोनों भाई क्या बताते कि फोटो खींचते समय परलोक सिधारने का खयाल भी हमारे दिल में आ रहा था।

हमारा टूर खत्म हुआ। सुबह के 10 बजे हम जंगल से बाहर निकले। मैंने आंखें भरकर ताडोबा के जंगल को देखा। मन कर रहा था कि वहीं रह जाऊं, पर यह संभव नहीं था, इसलिए लौट पड़ा।

कभी मौका मिले, तो यहां जरूर आइए। वन की रानियों को उनके इलाके में उनके राजा, राजकुमारों या राजकुमारियों के साथ देखने का दृश्य अलौकिक होता है।

अम्मी का साथ

"बेटा अनवर, उठ जा, बच्चे! मैंने तेरे लिए दलिया बना दिया है। दस बजे स्कूल जाना है, बेटा! उठ जा, नौ बज गए हैं।" अनवर के अब्बा ने उसे हिलाते हुए पुकारा।

अनवर ने आंखें मलीं और फिर मड़मड़ाते हुए बोला, "अब्बू, बहुत नींद आ रही है।"

"मुझे भी काम पर जाना है, बेटा।" अब्बू ने कहा।

वह झट से उठकर बैठ गया। अब्बू के गले में हाथ डाल दिए, कहा, "अम्मी चली गईं न अब्बू?"

"तेरी अम्मी अल्लाह को प्यारी हुई। तुझे ले गया था ना, उससे मिलाने। उस पास वाली मस्जिद की कब्र में ही तो सो रही है वह।" अब्बू की आवाज में दर्द था।

अनवर उदास हो गया। झोंपड़ी में छोटी-सी खिड़की थी, उसे पता ही नहीं चलता कि दिन कब निकला। अंदर दीवार के पीछे छोटा-सा बाथरूम था। अब्बू ने कहा, "जा, तैयार होकर जल्दी आ जा।"

वह तैयार होकर आया, तो अब्बू दोनों के लिए दलिया ले आए, "लो, अब हम दलिया खाएंगे। बराबर वाली दुलारी चाची तुझे खाने का डिब्बा बनाकर दे देंगी। वही लेकर स्कूल चले जाना।"

"अब्बा, और आप क्या

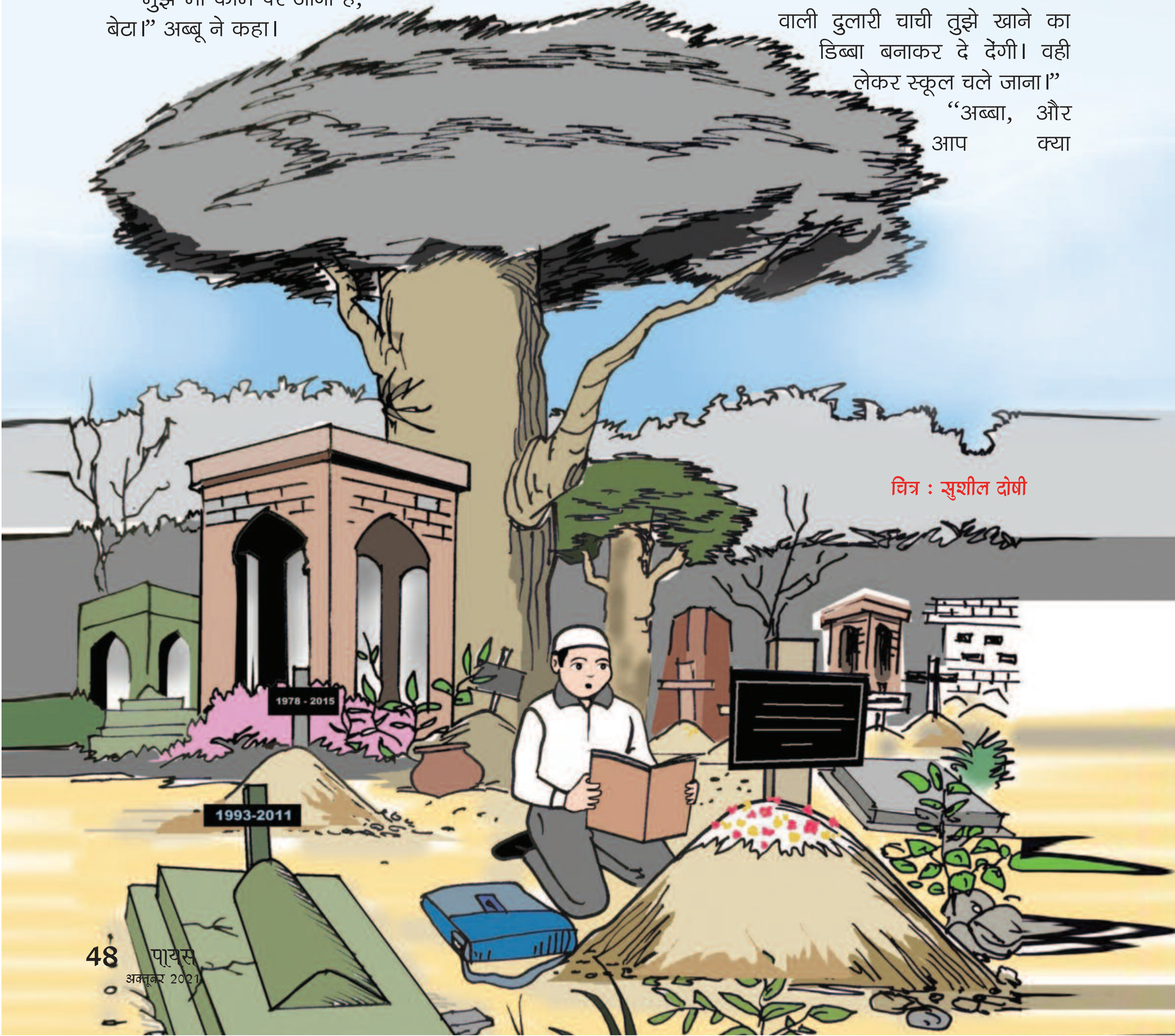

चित्र : सुशील दोषी

खाएंगे?" अनवर बोला।

"मैं कैंटीन में खा लूंगा। मेरी चिंता ना कर!" अब्बू कहकर निकल गए।

अनवर को अम्मी की बहुत याद आई। थोड़ी देर बाद वह भी स्कूल के लिए बाहर निकला। बराबर वाली चाची खाने का डिब्बा ले आईं। उसके बैग में रखते हुए बोली, "आधी छुट्टी में खा लेना बेटा, अच्छा?"

"हां चाची!" उसने घर की चाबी चाची को सौंपी। कंधे पर बैग डाल कर स्कूल के लिए चल पड़ा। स्कूल-यूनीफार्म के उसके पास दो ही जोड़े थे। वही पूरे हफ्ते पहनता। रविवार को ही वे धुलते थे।

अनवर की अम्मी तीन वर्ष पहले डेंगू के बुखार में चल बसी थी। तब वह पांच साल का था। उसे तो बस सबने यही बताया था कि उसकी अम्मी को अल्लाह ने अपने घर बुला लिया। आज के बाद वह पास की मस्जिद वाली एक कब्र में सो रहेगी।" कितने दिन तक वह सहमा-सहमा सा घूमता रहा था।

उसके अब्बू एक प्राइवेट फर्नीचर के शो-रूम में दिहाड़ी पर बढ़ई का काम करते थे। अनवर को उन्होंने पास के ही एक अच्छे स्कूल में दाखिल करवा दिया था। वह अब वह दूसरी कक्षा में था। अब्बू तो नौवीं पास थे और अम्मी बारहवीं। वही उसे घर में पढ़ा देती थीं। वह होतीं, तो होम-वर्क रोज हो जाता। अब कितनी डांट पड़ती थी स्कूल में उसे।

एक सर ने कहा था, "तुम्हारी मां तुम्हें कुछ नहीं सिखाती? स्कूल में ऐसे ही आ जाते हो, बिखरे-बिखरे से? होमवर्क भी नहीं करते ठीक से। फेल होना है क्या?"

यह सुनकर उसका मुंह लाल हो गया था। आंखों में पानी तैर आया था। उस दिन वह स्कूल से सीधा कब्रगाह चला गया। अम्मी की कब्र के पास जाकर अपना बस्ता एक ओर फेंका और रो पड़ा। कब्र की तरफ मुंह करके वह गुस्से में बोला, "चल अम्मी, अब उठ जा। कितने दिन तक सोएगी? क्या करूं, तेरे बिना। रोज मुझे स्कूल में सर डांटते हैं। चल, उठ ना!" उसकी आंखों से आंसू बहकर गले तक आ गए थे।

कुछ पलों के बाद उसे लगा जैसे कब्र के अंदर से आवाज आई, "बेटा, तेरे सर तेरे भले के लिए डांटते हैं। तू रोज यहीं आ जाया कर। मेरा नाम लेकर पढ़। तुझे सब आ जाएगा। चुप हो जा, मैं नहीं आ सकती बेटा।"

उसने आज्ञाकारी बेटे की तरह भोलेपन से 'हां' में सिर हिला दिया।

उसके बाद, उसके कदम रोज स्कूल से कब्रगाह की ओर बढ़ जाते। वहां पहुंचकर वह अपने बस्ते से कापी-पेंसिल निकालता। मां से सवाल करता, और खुद जवाब देकर अपना काम पूरा करके ही घर जाता।

अब्बू हैरान थे कि आजकल वह कैसे रोज सुबह जल्दी उठ जाता है! और खुद नहा-धो लेता है, सिर में तेल लगाकर बाल भी बना लेता है। वह देख रहे थे कि पढ़ने में भी उसका मन लगने लगा था।

चाची ने एक दिन अब्बा को बताया कि वह आजकल काफी देर से घर आता है। अब्बा ने उससे पूछा, "अनवर, आजकल तुझे स्कूल से आने में इतनी देर क्यों हो जाती है, बेटा?"

उसने उन्हें भोलेपन से सब कुछ बता दिया। सुनकर अब्बू रो पड़े। उसे गोद में बिठा लिया। बोले, "हां, सच बेटा, मैं देख रहा हूं कि तुम अपने काम खुद कर लेते हो। देख, ऐसे ही बने रहना। इसी तरह मेहनत करते रहना। देखना, तुम्हारे टीचर तुम्हें कितना प्यार देंगे।"

'हां, अब्बू, अम्मी भी यही कहती है। उन्होंने मुझे सब सिखाया है। वही मेरा होमवर्क करा देती हैं।"

उसकी बातें सुनकर अब्बू और भी भावुक हो गए। उन्होंने उसके कंधे थपथपाए और बोले, "हां बेटा, तू हमेशा उसका कहना मानना।"

ऐसे ही पूरा साल बीता। वार्षिक परीक्षा खत्म हुई। रिजल्ट का दिन भी आ गया। वह कक्षा में अव्वल आया था। वहां के सब अध्यापकों से उसे खूब शाबासी मिली।

सर ने कहा, "अनवर, अब तो तुम बहुत अच्छे बच्चे बन गए हो। साफ भी रहते हो और पढ़ाई में भी आगे। कैसे किया तुमने? आगे भी ऐसे ही बने रहना, बेटा, शाबास!"

उसने सर को अम्मी की कब्र पर जाकर पढ़ने की सब बातें बता दीं। उसका भोलापन और मां के प्रति उसकी आस्था, दोनों बातें उन्हें छू गई थीं। उसे कक्षा में झिड़कने का उन्हें अफसोस हुआ था। लेकिन उन्हें कहां पता था कि उसकी अम्मी का इंतकाल हो चुका था।

सर ने अनवर के सिर पर हाथ रखा और गले लगा लिया। उसकी खुशी का ठिकाना न था। ✪

अपने लेखक को जानिए

मंजुरानी जैन : साहित्यकार पिता की छत्रछाया में बचपन से ही पढ़ने-लिखने में विशेष रुचि रही। मुंबई के आचार्य मराठे कॉलेज ऑफ आर्ट्स, कॉमर्स और साइंस में पुस्तकालयाध्यक्ष रहीं। अब लेखन में व्यस्त। 'पराग', 'धर्मयुग' आदि में कहानियां, संस्मरण, लेख प्रकाशित। 'मेरी प्रतिनिधि बाल-कहानियां' उनका पहला कहानी-संग्रह है।

ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट विश्वकप

क्रिकेट का खेल जब शुरू हुआ, तो कई टेस्ट मैच ऐसे खेले गए, जिनमें फैसला होने तक खेल जारी रखने पर सहमति थी। फिर ऐसा समय आया, जब लोग पांच दिन के टेस्ट से ऊबने लगे और मैदान से गायब होने लगे। ऐसे में क्रिकेट को रोचक बनाने के लिए 1971 में एक दिन के मैच शुरू हुए। पर समय के साथ लोग इससे भी कुछ ऊबने लगे, तो कुछ लोगों ने फटाफट क्रिकेट को नया रूप दिया और इसे नाम दिया गया 'ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट' अर्थात बीस-बीस ओवर के मैच।

क्रिकेट के हर संस्करण के साथ इंग्लैंड जरूर जुड़ा है। इस बार भी पहला ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट मैच कराने का श्रेय इंग्लैंड को ही मिला। इंग्लैंड और वेल्स क्रिकेट बोर्ड के प्रयासों से 13 जून 2003 को हैंपशायर और ससेक्स के बीच पहला ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट मैच रोजबाउल में खेला गया। इसे हैंपशायर ने पांच रन से जीता।

खास बात यह है कि पुरुषों से पहले महिलाओं ने ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट का अंतर्राष्ट्रीय मैच खेल लिया। 5 अगस्त 2004 को एक मैच में न्यूजीलैंड की महिलाओं ने इंग्लैंड की महिलाओं को हराया।

इसकी लोकप्रियता को देखकर 17 अगस्त 2005 को एकदिवसीय क्रिकेट के विश्व चैंपियन ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के बीच पहला अंतर्राष्ट्रीय ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट मैच ऑकलैंड (न्यूजीलैंड) में खेला गया। इसमें न्यूजीलैंड को 44 रन से हराकर ऑस्ट्रेलिया ने जीत हासिल की। खास बात यह है कि पहला टेस्ट मैच और एकदिवसीय क्रिकेट मैच खेलने व जीतने का श्रेय भी ऑस्ट्रेलिया को ही है। इसके लोकप्रियता को देखकर इसे आई.सी.सी. ने अपने हाथ में ले लिया।

पहली बार ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट मैचों की विश्व चैंपियनशिप का आयोजन दक्षिण अफ्रीका में हुआ। 11 से 24 सितंबर 2007 तक हुई इस प्रतियोगिता में दस टेस्ट खेलने वाले देशों (भारत, पाकिस्तान, वेस्टइंडीज, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका, जिंबाब्वे और बांग्लादेश) के अलावा दो एसोशिएट देश आयरलैंड और केन्या की टीमों ने भाग लिया।

चार-चार टीमों के चार ग्रुप बने। प्रत्येक ग्रुप से दो-दो टीमें सुपर एट में पहुंची। फिर उनमें मुकाबला हुआ और टॉप की चार टीमें भारत, पाकिस्तान, न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया सेमीफाइनल में पहुंची।

कहां आयोजन होगा

संयुक्त अरब अमीरात के तीन शहर अबूधाबी, शारजाह और दुबई के अलावा ओमान के मस्कट में

कब से कब तक

17 अक्तूबर से 14 नवंबर तक

क्वालिफाइंग राउंड	: 17 से 22 अक्तूबर
सुपर 12	: 23 अक्तूबर से 8 नवंबर
सेमीफाइनल	: 10 नवंबर को अबुधाबी और 11 नवंबर को दुबई में
फाइनल	: 14 नवंबर दुबई में

सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया को हराकर भारत फाइनल में पहुंचा। उधर न्यूजीलैंड को हराकर पाकिस्तान पहले ही फाइनल में पहुंच चुका था।

24 सितंबर को ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट के फाइनल में भारत और पाकिस्तान आमने-सामने थे। भारत ने पहले बल्लेबाजी की और 5 विकेट पर 157 रन ही बना पाया। पाकिस्तान की टीम अंतिम ओवर में जीत की दावेदार था, पर अंत में भारत 5 रन से जीतने में सफल रहा। इस तरह भारत प्रथम विश्वकप का विजेता बना।

तब से अब तक कुल 6 विश्वकप हुए हैं। भारत के अलावा पाकिस्तान, इंग्लैंड, श्रीलंका और वेस्ट इंडीज की टीम चैंपियन बनने में सफल रही। वेस्ट इंडीज एकमात्र टीम है, जो दो बार चैंपियन बनी।

आखिरी ट्वेंटी-ट्वेंटी क्रिकेट विश्व चैंपियनशिप 2016 में भारत में हुआ था। उसके बाद 2020 में ऑस्ट्रेलिया में अगला विश्वकप होना था। पर कोविड के कारण इसे स्थगित कर दिया गया था। उसके बाद 2021 का यह ट्वेंटी-ट्वेंटी विश्व चैंपियनशिप भारत में प्रस्तावित था। परंतु कोरोना की दूसरी लहर के कारण इसे भारत से हटाकर खाड़ी के देशों में आयोजित किया जा रहा है, हालांकि इसका आयोजक भारत ही कहलाएगा।

इस बार टूर्नामेंट में कुल 16 टीमें हैं। इनमें से टॉप की आठ टीमें पहले ही सुपर 12में पहुंच चुकी हैं। ये हैं भारत, पाकिस्तान, वेस्टइंडीज, इंग्लैंड, ऑस्ट्रेलिया, अफगानिस्तान, न्यूजीलैंड, और दक्षिण अफ्रीका।

बाकी आठ टीमें बांग्लादेश, श्रीलंका, नीदरलैंड, पापुआ न्यू गिनी, आयरलैंड, स्कॉटलैंड, नामीबिया और ओमान क्वालिफाइंग मैच खेलेंगे और इनमें से टॉप की चार टीमें सुपर 12 में पहुंचेंगी फिर असली मुकाबला शुरू होगा।

इस बार संयुक्त अरब अमीरात के तीन शहरों के अलावा ओमान के मस्कट शहर में भी इसका आयोजन हो रहा है।

कुछ खास रेकार्ड्स

एक इनिंग्स में सर्वाधिक रन : 6 विकेट पर 260 पर रन (श्रीलंका)
एक इनिंग्स में सबसे कम रन : 39 (नीदरलैंड्स)

सबसे ज्यादा शतक
दो
क्रिस गेल (वेस्टइंडीज)

सबसे ज्यादा रन
1026
महेला जयवर्धने (श्रीलंका)

सबसे ज्यादा विकेट
39
शाहिद आफरीदी (पाकिस्तान)

सबसे सफल विकेटकीपर
(32 कैच और स्टम्पिंग)
महेंद्र सिंह धोनी

देर आए दुरूस्त आए

रोज की तरह आज भी नमन ने होमवर्क नहीं किया। टीचर के पूछने पर नमन ने कहा, "मैम, मम्मी की तबीयत ठीक नहीं थी, इसलिए मैं होमवर्क नहीं कर पाया।"

"स्टैंड अप नमन, अब क्या हुआ मम्मी को।" टीचर ने कहा।

नमन ने खड़े होकर कहा, "मैम पैर फिसलने के कारण मम्मी सीढ़ी से गिर गई थी।"

"ओह, आपके घर में कोई और करने वाला नहीं है? आपकी पढ़ाई सफर कर रही है...नमन! हर रोज आपका कोई ना कोई बहाना होता है। ऐसे कैसे चलेगा...बोलो?"

"मैम, आप ही बताइए? पापा तो टूर पर गए हुए हैं, मैं कर भी क्या सकता हूं?"

"क्या मतलब?"

टीचर को नमन का जवाब कुछ ठीक नहीं लगा। वह बोलीं, "आप पढ़ाई के लिए सीरियस नहीं हो, मेरे पास डायरी लेकर आओ।"

टीचर मैम ने डायरी पर शिकायत लिख दी।

नमन मन ही मन खुश हो गया, 'चलो बहाना अच्छा था, जान बच गई। डायरी घर पर देखता-पढ़ता ही कौन है।'

नमन पढ़ाई में कभी सीरियस नहीं रहा। हर रोज कोई न कोई बहाना बनाकर, टीचर मैम को इमोशनली ब्लैक मेल करता। डांट नहीं पड़ने पर मन ही मन खुश होता।

सिद्धार्थ नमन का पड़ोसी था। वह जानता था, नमन झूठ बोल रहा है, आंटी तो सिढ़ियों से गिरी ही नहीं।

चित्र : सुशील दोषी

वह हर रोज कोई न कोई बहाना बना कर टीचर मैम से झूठ बोलता है। सिद्धार्थ मन में सोचने लगा, 'बच्चों को संवारने में टीचर की बहुत बड़ी भूमिका होती है। नमन तो अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहा है।'

सिद्धार्थ से रहा नहीं गया। वह टीचर मैम की बहुत इज्जत करता था। वह सोचने लगा, 'यह तो अपने शिक्षक को धोखा देना है, शिक्षक ही तो हमें जीवन का सबक सिखाते हैं।' उसने टीचर मैम के पास जाकर कहा, "मैम नमन झूठ बोल रहा है। आंटी तो सीढ़ी से गिरी ही नहीं। मैं तो आज ही उनसे मिला था, वह बिल्कुल सही और स्वस्थ हैं।"

मैम ने नमन को अपने पास बुलाकर कहा, "मैं यह क्या सुन रही हूं? बोलो! सिद्धार्थ ने जो बताया, क्या वह गलत कह रहा है?"

नमन सिर झुकाए खड़ा रहा, उसने मैम की बात का जवाब नहीं दिया और सिद्धार्थ को टेढ़ी नजर से देखा, जैसे कह रहा हो, तुझे तो मैं देख लूंगा।

"मैं आप ही से बात कर रही हूं। नमन...बोलो, अगर पढ़ने में मन नहीं लगता, तो आपका स्कूल से नाम काट देती हूं। यह ठीक रहेगा? तुम्हें अच्छा लगेगा?"

"अभी तक तो मैंने प्यार से समझाया था। लगता है, सख्ती करनी पड़ेगी। आपके साथ। मैं तुम्हारे पापा से मिलना चाहती हूं। उनसे कहना कल आकर मुझ से बात करें।"

"मैम, मैं पढ़कर क्या करूंगा? अल्टीमेटली, मुझे पापा का बिजनस ही तो सम्हालना है।" नमन ने कहा।

तो फिर मैं आपका स्कूल से नाम काट देती हूं क्योंकि समय बर्बाद करने स्कूल आते हो। बिना पढ़े-लिखे बिजनस संभालोगे, उसके लिए भी पढ़ाई बहुत जरूरी है।"

टीचर ने आगे कहा, "अभी तो तुम्हारी उम्र पढ़ने की है। लगता है, आपके मम्मी-पापा आप पर ध्यान नहीं देते।"

"मैम, पापा अधिकतर दूर पर रहते हैं, और मम्मी घर के कामों में व्यस्त रहती हैं।"

"तो आप टीचर से झूठ बोलोगे, गुरु का सम्मान करना सीखो। मैं आपके अच्छे के लिए समझा रही हूं। अपनी प्रोब्लम मुझसे शेयर करनी थी, फिर मैं देखती।"

"अच्छे व्यक्ति की पहचान उसके संस्कार होते हैं, अभी तो तुम बच्चे हो , हर बच्चे में संस्कार बचपन से ही आते हैं। गुरु के बिना शिष्य का कोई अस्तित्व नहीं होता।"

"भारतीय इतिहास पर अगर नजर डालोगे, तो जानोगे, गुरु मार्ग दर्शक होता है।"

टीचर ने बच्चों की तरफ मुखातिब होकर कहा,"बच्चों प्रथम गुरु माता -पिता और दूसरे गुरु कौन होते हैं, बताओ?"

"हमारे शिक्षक!"

"सुना...नमन! शिष्यों की जिंदगी में अहम भूमिका निभाते हैं गुरु!

"बच्चों, बताओ शिक्षक दिवस क्यों मनाते हैं?" टीचर ने पूछा।

सब बच्चे एक साथ बोले, "शिक्षक हमारे मार्गदर्शक होते हैं, शिक्षकों को सम्मान देने के लिए शिक्षक दिवस मनाया जाता है। शिक्षक हमें स्कूली शिक्षा देकर हमारे ज्ञान को आगे बढ़ाते हैं, हमें अच्छी-बुरी बातों का ज्ञान कराते हैं और शिक्षक का दिया ज्ञान, जीवन भर हमारे साथ रहता है।"

"सुना नमन आपने, अब आगे से कोई भी हरकत ऐसी ना हो। मैं हर रोज, होमवर्क देखना चाहूंगी, अगर होमवर्क नहीं किया, तो स्कूल भी नहीं आना...समझे!"

टीचर ने क्लास में सब बच्चों से कहा, "कल सब बच्चे शिक्षक दिवस पर कुछ विशेष लिख कर लाएंगे।"

सब ने एक साथ कहा, "यस मैम।"

"और हां नमन, मैं तुमसे भी कह रही हूं। और सबसे पहले मैं तुम्हारी कॉपी चैक करूंगी, ठीक है!"

"यस मैम!"

अगले दिन सब बच्चे मैम का दिया होमवर्क करके लाए, लेकिन मैम यह देखकर चकित रह गई,कि सबसे पहले नमन ने अपनी कॉपी, मैम की टेबल पर रखी।

मैम ने भी पहले उसी की कॉपी चैक की।

नमन ने लिखा था, "मैम, आपने जो मुझे अटैंशन दी उसके लिए मैं थैंक्यू नहीं कहूंगा। आपका मेरे लिए चिंतित होना, यह प्यार मुझे जीवन भर के लिए आपका बनाता है। टीचर्स डे की ढेरों बधाई।"

मैम यह देखकर खुश हो गई और कहा,"देर आए , दुरुस्त आए।"

टीचर मैम ने, नमन के लिए,सब बच्चों से क्लैपिंग के लिए कहा। ✪

अपने लेखक को जानिए

मधु गोयल : पिछले 15 सालों से लेखन कार्य में निरंतर सक्रिय। अब तक लगभग 200 कहानियां, कविताएं व लेख (बच्चों और बड़ों की) निरंतर देश की प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित।

पतंग के खेल में

मोनू के पापा दफ्तर से लौटे तो उन्होंने आते ही मोनू को आवाज दी, परंतु मोनू ने नहीं सुनी। मोनू की मां ने आकर बताया कि वह तो ऊपर छत पर पतंग उड़ा रहा है।

मोनू के पापा ने कहा,"मैंने तुम्हें कितनी बार समझाया है कि इसे दिन भर पतंग उड़ाने से रोका करो। सुबह-शाम बस छत पर पतंग उड़ाता रहता है यह। उसे नीचे बुलाओ।"

मोनू आया तो वह बोले, "देखो मोनू, अब तो तुम दिन भर पतंग उड़ाने लगे। थोड़ा पढ़ाई पर ध्यान दो। अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं में केवल सात दिन ही बाकी रह गए हैं।"

"लेकिन पापा मैं दिन भर पतंग कहां उड़ाता हूं। मैं तो बस अभी ऊपर गया था।" मोनू ने कहा।

"देखो, सुबह स्कूल जाने से पहले पतंग उड़ाते मिलते हो, तो शाम को स्कूल से लौटते ही ऊपर छत पर चले जाते हो। तुम्हें पतंग उड़ाने का शौक इतना भयंकर रूप से लग गया है कि तुम पढ़ाई को पूरा समय नहीं दे पा रहे हो।"

"लेकिन पापा, मैं सारा होमवर्क करके ले जाता हूं। कभी मेरी कोई शिकायत मिली आपको। मैं पढ़ा, तभी तो गत वर्ष प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुआ था।" मोनू बोला।

इस बार मोनू की मम्मी बीच में ही बोल पड़ीं, "आप सारे दिन बस इसके पीछे पड़े रहते हो। ऑफिस से आए नहीं कि मोनू कहां है। सारे बच्चे खेलते-कूदते हैं। क्या यह थोड़ी देर भी नहीं खेले ?"

"देखो तुम इतना लाड़-प्यार मत

चित्र : सुशील दोषी

दो कि यह बिगड़ने लगे। जरा सोचो सात दिन बाद अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं शुरू हो रही हैं। इस परीक्षा में अंक कम आए, तो क्या पूरे परीक्षा-परिणाम पर असर नहीं पड़ेगा। उस दिन यह स्वयं और खुद तुम पछताओगी।" उन्होंने कहा।

"आप चिंता मत करिए। यह पढ़ाई में इतना होशियार है कि नंबर कम आने का तो प्रश्न ही नहीं उठता।" मोनू की मां बोलीं।

"तो ठीक है, जो चाहो वह करो। मैं तो आज के बाद इससे कुछ कहने से रहा। मैं खेलना बुरा नहीं बताता परंतु दिनभर जो बच्चा खेलता ही रहेगा, भला वह पढ़ाई को क्या समय दे पाएगा।" वह कहकर चुप हो गए।

मोनू की मां ने उससे कहा, "जाओ बेटा, खेलो।"

मोनू भागकर छत पर चला गया और पतंग उड़ाने लगा।

अर्द्धवार्षिक परीक्षाएं शुरू हो गईं। परंतु मोनू को तो पतंगबाजी का शौक, लत के रूप में लग गया था। इससे वह पढ़ाई पर पूरी तरह ध्यान नहीं दे पाता। परीक्षा के बाद अंक तालिका दी गई, तो वह सन्न रह गया। उसकी आंखें खुली की खुली रह गईं। उसके कक्षा में सबसे कम अंक आए थे।

उत्तीर्ण तो वह सभी विषयों में हो गया था, परंतु अंक सबसे कम थे। उसकी हिम्मत नहीं हुई कि वह कक्षा के दूसरे छात्रों से आंख मिला सके। कुछ छात्र ऐसे भी थे, जो उसके कम नंबर आने से मजाक कर रहे थे।

अब उसे याद आया कि पापा उसे पतंग उड़ाने से क्यों रोक रहे थे? पतंग के खेल में इतना डूब गया कि वह पढ़ाई से दूर हो गया।

मोनू स्कूल से घर की ओर चला तो जैसे उसके पांव बेदम थे। घर आकर वह चुपचाप पतंग पर लेट गया। उसकी मां को मोनू के आने का पता चला, तो वह उसके पास आकर बोली, "क्यों, बेटा लेट क्यों गए, जाओ थोड़ी देर खेल आओ।"

मोनू को लगा कि मां भी जैसे उसका मजाक उड़ा रही हैं। वह कुछ नहीं बोला। मां ने फिर कहा, "क्यों उदास से पड़े हो, तबीयत तो ठीक है न? सच बताओ क्या बात है?"

मोनू, मां की बात सुनकर रो पड़ा। उसने रोते हुए बस्ते में से अपनी अंक तालिका निकाल कर थमा दी। मोनू की मां अंक तालिका देखते ही सकते में आ गईं। वह बोलीं, "यह क्या हुआ मोनू?"

"हां मम्मी।" यह कहकर वह लिपटकर जोरों से सुबकने लगा। मां उसे दिलासा देने लगीं।

तभी मोनू के पापा भी आ गए। वे मोनू को इतने जोरों से रोता देखकर सहम गए। उन्होंने उसे कभी इतने जोरों से रोते नहीं देखा था। वह वहां आकर बोले, "क्यों क्या हुआ मोनू की मम्मी?"

डरते-डरते आंख झुकाए ही मोनू की मम्मी ने उन्हें अंक तालिका पकड़ा दी। मोनू के इतने कम नंबर देखकर उन्हें एक बार तो झटका लगा। परंतु उन्होंने इस बात को प्रकट नहीं किया। वह बहुत ही सहज रूप में बोले, "अरे बस इसी बात पर रोने लगे। क्या हुआ अब पढ़ोगे, तो यह कमी तो पूरी हो जाएगी।"

इस बार मोनू ने मम्मी को छोड़ दिया और वह पापा से लिपटकर रोते हुए बोला, "नहीं पापा, मैंने आपका कहना नहीं माना।"

"रोओ मत मोनू। तुम तो समझदार हो, कितनी समझदारी की बातें करते हो। चलो, चुप हो जाओ। तुम इस बात को महसूस कर रहे हो, बस यही तुम्हारा सबसे बड़ा प्रायश्चित है।" उन्होंने कहा।

'लेकिन आपका कहा मानता, तो इतने कम नंबर नहीं आते।'

"कोई बात नहीं बेटा। सुबह का भूला शाम को घर लौट आता है, तो वह भूला नहीं माना जाता। तुम्हारी आंखें समय पर ही खुल गई हैं। अभी वार्षिक परीक्षाएं होंगी, तुम उसमें ज्यादा अंक ले आना। चलो उठो, हम साथ बैठकर खाएंगे।"

मोनू के पापा उसे खाने की मेज पर ले आए। मोनू की मम्मी ने चाय के साथ पकौड़ियां तल दीं। सब साथ-साथ खाने लगे। परंतु मोनू ने तो मन में संकल्प ले लिया था कि वह अब पतंग नहीं उड़ाएगा तथा जमकर पढ़ाई करेगा। खेलना चाहिए परंतु जितना जरूरी हो उतना ही।

वार्षिक परीक्षाएं हुईं और परीक्षा परिणाम आया, तो उसके मम्मी-पापा की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। मोनू पहले की तरह प्रथम श्रेणी से ही उत्तीर्ण हो गया था।

मोनू के पापा बाजार से पतंग-डोर ले आए और बोले, "जाओ मोनू, अब उड़ाओ जमकर पतंग। मैं खेलने से कब मना करता हूं।"

मोनू की मम्मी ने उसे गोद में उठाकर चूम लिया। घर खुशियों से भर गया। ✪

अपने लेखक को जानिए

पूरन सरमा : पांच दशकों से हिंदी और राजस्थानी में लेखन। व्यंग्य के लिए अनेक बार पुरस्कृत और सम्मानित। राजस्थान साहित्य अकादमी के 'कन्हैयालाल सहल पुरस्कार' से सम्मानित। अनेक रचनाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद। बाल साहित्य की 20 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन।

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो-

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है, दीप्ति मित्तल ने

अपनी हिन्दी और राइटिंग स्किल्स को तराशें, पायस से जुड़कर, कॉल करें : 7982014609

वन्या चनाना

नाम : वन्या चनाना
उम्र : 14 वर्ष
कक्षा : 10, स्कूल : एल्कोन इंटरनेशनल, मयूर विहार, दिल्ली

प्रथम पुरस्कार

पूर्वांशी ध्यानी

नाम : पूर्वांशी ध्यानी
उम्र : 12
कक्षा : 8
स्कूल : रा इ का धुमाकोट
गढ़वाल, उत्तराखंड

अयाना ओमर

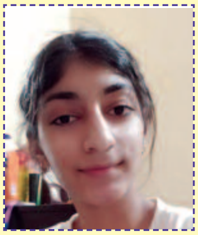

नाम : आंचल
उम्र :13
कक्षा : 8,
अलमाईटी पब्लिक स्कूल
हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश

नाम :अयाना ओमर
उम्र :7
कक्षा : 2,
के.डी.एम. इंटरनेशनल स्कूल

आंचल

नाम : लिली यादव
उम्र : 7, कक्षा :3
स्कूल एटोमिक एनर्जी सेंट्रल स्कूल नं. 3, रावट भाटा, राजस्थान

नाम : हुमैद अहमद
उम्र : 4 वर्ष
कक्षा : नर्सरी
स्कूल : एम.टी. नेशनल पब्लिक स्कूल, लखनऊ

नाम : अंतरिक्ष पचौरी, उम्र : 9, कक्षा : 6, स्कूल : इंटरनेशनल स्कूल ऑफ जिनेवा, स्विट्जरलैंड

स्विट्ज़रलैंड से पायस के पाठक अंतरिक्ष की चिट्ठी आई है

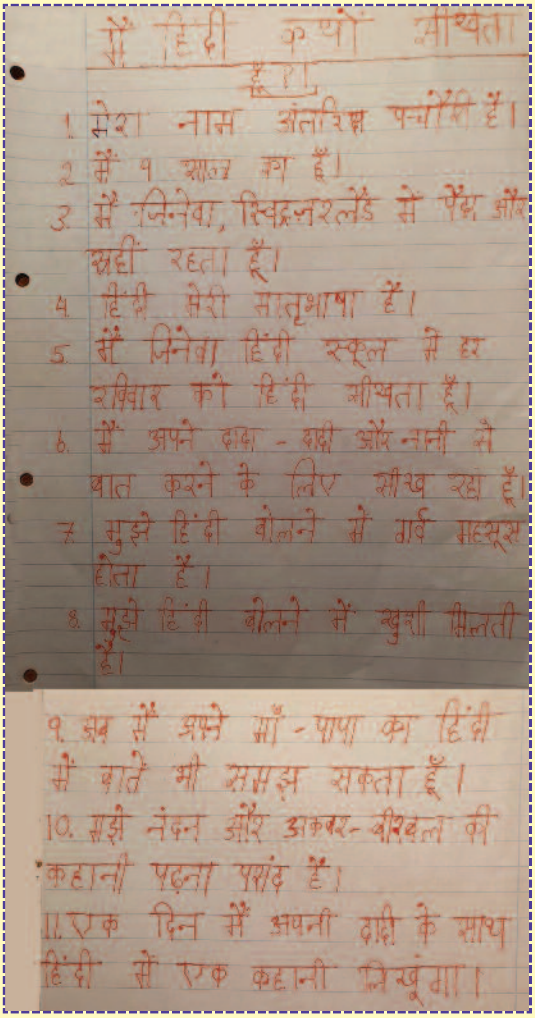
मैं हिंदी क्यों सीखता हूं।
1 मेरा नाम अंतरिक्ष पचौरी हैं।
2 मैं 9 साल का हूँ।
3 मैं जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड में पैदा और यहीं रहता हूँ।
4 हिंदी मेरी मातृभाषा हैं।
5 मैं जिनेवा हिंदी स्कूल में हर रविवार को हिंदी सीखता हूँ।
6 मैं अपने दादा - दादी और नानी से बात करने के लिए सीख रहा हूँ।
7 मुझे हिंदी बोलने में गर्व महसूस होता हैं।
8 मुझे हिंदी बोलने में खुशी मिलती हैं।
9 अब मैं अपने माँ - पापा का हिंदी में बातें भी समझ सकता हूँ।
10 मुझे नंदन और अकबर - बीरबल की कहानी पढ़ना पसंद हैं।
11 एक दिन मैं अपनी दादी के साथ हिंदी में एक कहानी लिखूंगा।

अंतरिक्ष स्विट्जरलैंड में रहते हैं। जन्म भी वहीं हुआ। पर दिल व परिवार पूरी तरह भारतीय है। यूरोप में रहने व भविष्य के लिए वहां रहकर वह कई भाषाएं 9 वर्ष की अल्पायु में सीख चुके हैं।

परंतु हिंदी से उनका पुराना नाता है। घर में माता-पिता हिंदी ही बोलते हैं। अंतरिक्ष की दादी उन पर कहानियां लिखकर उन्हें भेजती हैं, और अंतरिक्ष उन्हें चाव से पढ़ता है।

हिंदी दिवस पर अंतरिक्ष ने पायस को चिट्ठी भेजी।

हिंदी के प्रति लगाव दिखाया।

आप भी पढ़े-

मैं हिंदी क्यों सीखता हूं?

1. मेरा नाम अंतरिक्ष पचौरी है।
2. मैं 9 साल का हूं।
3. मैं जिनेवा, स्विट्जरलैंड में पैदा और यहीं रहता हूं।
4. हिंदी मेरी मातृभाषा है।
5. मैं जिनेवा हिंदी स्कूल में हर रविवार को हिंदी सीखता हूं।
6. मैं अपने दादा-दादी और नानी से बात करने के लिए सीख रहा हूं।
7. मुझे हिंदी बोलने में गर्व महसूस होता है।
8. मुझे हिंदी बोलने में ख़ुशी मिलती है।
9. अब मैं अपने मां-पापा का हिंदी में बातें भी समझ सकता हूं।
10. मुझे नंदन और अकबर-बीरबल की कहानी पढ़ना पसंद है।
11. एक दिन मैं अपनी दादी के साथ हिंदी में एक कहानी लिखूंगा।

द्वितीय पुरस्कार

चिड़ियों की सोसाइटी

शाम का वक्त था। सभी चाय पी रहे थे तभी फेसबुक पर 'पायस' पत्रिका आई। उसमें एक छोटे-से घर का सुंदर-सा चित्र बना हुआ था।

सिंटू को वह बहुत रोचक लगा। उसने पढ़ा, तो वहां लिखा था 'चिड़िया के लिए घर'। उसमें चिड़िया का घर बनाने की विधि लिखी थी। सिंटू ने घर बनाना सीख लिया।

उसने अगले दिन चिड़िया का एक छोटा-सा घर बनाया और उसे रंगकर अपनी सोसाइटी के पार्क में लगा दिया। पार्क में बहुत सारी चिड़ियों के घोंसले थे। पर उसके बनाए इतने सुंदर से घर में कोई भी चिड़िया रहने नहीं आई।

उसने ये बात अपने पापा राजेश को बताई। उन्होंने सिंटू को बताया कि चिड़िया पार्क जैसी जगहों में साथ रहना ज्यादा पसंद करती हैं। पार्क में सुबह-शाम लोग टहलने निकलते हैं, इसलिए चिड़ियों को ऐसी जगहों पर लगता है कि वे महफूज नहीं है।

सिंटू समझ गया कि पार्क में चिड़िया इसीलिए ऊंचे-ऊंचे पेड़ों पर रहती हैं। उसने अपना घर वहां से हटा लिया। उसने महीने भर में चिड़ियों के कई सारे बड़े-बड़े घर बना लिए। उनमें कुछ घर तीन मंजिला थे और कुछ घर बहुत बड़े-बड़े थे ताकि तोते, कबूतर जैसे पक्षी भी आ सकें।

उसने कुछ छोटे-छोटे घर भी बनाए जिनमें गौरैया, मैना जैसे पक्षी आ सकते थे। और तो और, उसने ऐसे घर भी बनाएं, जो लम्बे और चौड़े थे ताकि उनमें गिलहरी जैसे छोटे-छोटे प्राणी भी आ सकें। उसने उन सभी घरों पर अच्छी तरह टेप चिपका दिया ताकि वे वाटर प्रूफ हो जाएं।

सिंटू ने एक बड़ा सा प्लाई बोर्ड लिया और उस पर उन सब घरों को चिपका दिया। दिखने में ऐसा लगने लगा जैसे कोई छोटी सोसाइटी हो। लेकिन घरों के बीच में अब भी काफी जगह खाली थी।

वह कुछ देर खुली हवा खाने के लिए बालकनी में गया। तभी उसका ध्यान पार्क पर गया। उसने सोचा छोटी-सी सोसाइटी के बीच में जो खाली जगह रह गई है वह वहां एक पार्क भी बना सकता है। वह तुरंत अंदर गया और कई सारी छोटी-छोटी दीवारें बनानी शुरू कर दीं। उसने उस जगह ले जाकर सब दीवारों को बीच में चिपकाया।

नाम : वरेण्य
आयु : 10 वर्ष
कक्षा : 5,
नारायणी इंटरनेशनल स्कूल,
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश

अब सोसाइटी के बीच में एक सुंदर-सा पार्क बन गया था। उसने उसमें अपने बनाए घरों को रख दिया। पार्क में थोड़ी-सी मिट्टी डाल दी। उस मिट्टी में घास, मेथी, धनिया के पौधे भी रोप दिए। उसने देखा, बहुत तेज गरमी पड़ रही है। इसलिए उसने पार्क के एक कोने में मिट्टी के बर्तन में पानी रख दिया, साथ में ही दाना भी दाल दिया।

अब केवल उसमें रंग भरना ही बाकी रह गया था। उसने सोचा कि वह अब रंग कल भरेगा। सिंटू अपने दोस्तों के साथ खेलने चला गया।

अगले दिन रविवार था। नाश्ता करके सिंटू और उसके पापा छोटी सोसाइटी में रंग भरने लग गए। शाम तक सोसाइटी में रंग भर गया।

एक हफ्ते में छोटी सोसाइटी के सब घर अलग-अलग प्रकार के पक्षियों से भर गए। सिंटू को देख कर सोसाइटी के कई लोगों ने चिड़ियों के रहने के लिए अलग-अलग प्रकार के घर बनाए।

सोसाइटी के सभी लोगों ने जो घर बनाए, उन घरों में भी बहुत सारे पक्षी आ गए। पूरी सोसाइटी में चिड़ियों की चीं-चुर्र गूंजने लगी। लोगों ने उसे चिड़ियों वाली सोसाइटी कहना शुरू कर दिया।

स्पेशल टैलेंट

जंगल में

मैं स्कूल की गरमियों की छुट्टी में अपने नाना के घर उनके गांव गया। एक दिन अपने बड़े मामा के साथ मैं वहां के छोटे से जंगल में गया। वहां चींटियो के बड़े-बड़े घर थे। वह मुझसे ऐसे लगते थे जैसे चींटियों के राज महल।

मामा ने बताया कि इस इसे चीटियों की बांबी भी कहते हैं। हम लोग दिनभर टहलते रहे। दोपहर के समय अचानक कुछ आवाज सुनाई दी। हमें एक बड़ा सा हाथी दिखा जो पेड़ से पत्ते तोड़कर खा रहा था। साथ में छोटा सा हाथी का एक बच्चा भी था। उसका वहां कोई साथी नहीं था, इसलिए वह चुपचाप और शांत बैठा था।

मामा ने कहा कि अब हमें जल्दी से वापस चलना चाहिए क्योंकि यदि हाथी ने बांबी तोड़ दी तो चींटियों के कारण भागते हुए वे हमारे पीछे पड़ जाएंगे।

जंगल से बाहर निकलकर हमने कुछ बबूल की टहनियां दातुन बनाने के लिए तोड़ी और वापस आ गए।

नाम : अंकित विश्वकर्मा
उम्र : 10, कक्षा : 5,
स्कूल : प्राथमिक विद्यालय, धुसाह-1, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

गणपति बप्पा

तृतीय पुरस्कार

नाम : भूमि सिंह
उम्र : 5, कक्षा :1
स्कूल : एलकॉन इंटरनेशनल, मयूर विहार , दिल्ली

पुस्तक परिचय

पुस्तक : कहानी का जादू
रचनाकार : विमला नगला
प्रकाशक : राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति, संस्कृति भवन, एनएच-11, श्रीडूंगरगढ़- 331803 (बीकानेर) राजस्थान
पृष्ठ संख्या- 68
मूल्य : 150

कहानी का जादू बिखेरता बालकहानी संग्रह

कहानियां सभी को भाती है। बचपन में सुनी कई कहानियां हमेशा याद रहती है। इनमें कथा होती है। रहस्य होता है। रोमांच होता है। जिज्ञासा का भाव होता है। आगे क्या होगा? इसकी उत्सुकता अंत तक बनी रहती है।

यदि दादी-नानी कहानी सुनाएं, तो आनंद कई गुना बढ़ जाता है। उनके कहानी सुनाने का अंदाज निराला व सबसे अलग होता है। वे आंखें मटकाती है। हाथ से इशारा करती है। डरावना दृश्य हो तो चेहरा डरावना बनाती है। यानी हाव-भाव के संग कहानी सुनाती चली जाती है। इस कारण दादी-नानी से कहानी सुनने का सबसे अलग मजा होता है।

'कहानी का जादू' विमला नागला की हिंदी में पहला बाल कहानी संग्रह है। इस कहानी संग्रह में बच्चों के लिए 11 कहानी है। शीर्षक कहानी 'कहानी का जादू', बड़े सहज व सरल ढंग से कहानी का बच्चों पर असर प्रदर्शित करने में सक्षम है।

संग्रहित कहानियों के अधिकांश शीर्षक संदेशात्मक हैं। इन्हें पढ़ते ही कहानी के उद्देश्य का पता चल जाता है। 'अनमोल उपहार' दिव्यु को दिए गए उपहार की कहानी है। 'खुशियों का खजाना' सोना को कैसे मिलता है? यह सरल व सहज तरीके से कहानी व्यक्त करती है। 'मनु का संदेश' बहुत प्यारा है। उसी से कहानी के 'अनमोल का मोल' पता चलता है। सारी कहानियां एक से बढ़कर एक हैं।

प्रस्तुत कहानी संग्रह का आवरण बहुत ही चित्ताकर्षक है। त्रुटि रहित व आकर्षक साज-सज्जा युक्त बाल कहानी संग्रह बच्चों के लिए उपयोगी है। कहानीकार का प्रयास सार्थक और प्रेरणादायक है। इसे बच्चे अवश्य पसंद करेंगे।

समीक्षक : ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

पुस्तक : कहानियों का पिटारा
लेखिका : डॉ. अलका अग्रवाल
प्रकाशक : साहित्यागार, जयपुर
मूल्य : 225 रुपए

विविध विधाओं में एक दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखने वाली डॉ. अलका ने श्रेष्ठ बाल-साहित्य भी रचा है। 'ऐसा था नानी का बचपन' (उपन्यास) और 'कहानियों का पिटारा' (कहानी-संग्रह) उनकी सद्यप्रकाशित बाल साहित्य कृतियां हैं।

'कहानियों का पिटारा' में 21 विविध विषयक कहानियां सम्मिलित हैं। अलका जी बच्चों को किसी काल्पनिक मिठास की दुनिया में ही नहीं भेजती हैं, बल्कि उनकी कहानियों में आने वाली उम्र की अपेक्षित सतर्कता भी बाल मानस को चौकन्ना रखती है।

'इनके जैसा कोई नहीं' कहानी में अजय की शरारत से मैडम के पैर की हड्डी टूट जाती है। सुमन मैडम उसके पापा के दोस्त की बेटी निकल आती है। पश्चात्ताप से भरा अजय जब अपनी गलती स्वीकार करता है, तो उसके स्वभाव में परिवर्तन आ जाता है। इस तरह यह 'सुबह का भूला शाम को घर आ गया' मुहावरे को सार्थक करती कहानी है।

जूही अपनी मां का जन्मदिन मना कर उन्हें आश्चर्यचकित कर देती है। 'मां का जन्मदिन' कहानी में।

'खेल का मैदान' कहानी में सड़क पर क्रिकेट खेलने वाले संजय का कार से एक्सीडेंट होने पर पर क्या होता, पढ़कर मजा आएगा। 'प्रसाद के पेड़' धर्म और आस्था की आड़ में गलत इरादे से यात्रियों को बस में बेसुध कर उनका सामान ले जाने लगे, तब नेहा अपनी समझदारी और चतुराई से उन्हें पुलिस से पकड़वाने में सफल हो जाती है।

कुल मिलाकर संग्रह की सभी कहानियां उद्देश्यपरक व मनोरंजन से भरपूर हैं। ये कहानियां केवल हवाई किले नहीं बनाती, बल्कि बच्चों को उन जमीनी सच्चाइयों से सामना करने का साहस पैदा करती हैं, कहानी में मुहावरों का समावेश अनायास ही हुआ है, जिससे भाषा समृद्ध हुई है,

समीक्षक : डॉ. शील कौशिक

पुस्तक : कार की सवारी
लेखिका : अलका प्रमोद
प्रकाशक : बोधि प्रकाशन जयपुर
प्रकाशन वर्ष : 2021
मूल्य : 100, पृष्ठ : 36

कार की सवारी में मनभावन विज्ञान कथाएं

बच्चे कहानियों के जरिए बहुत कुछ सीखते हैं। कहानियां उनकी कल्पना शक्ति का विकास करती हैं, वहीं उनके दृष्टिकोण में वैज्ञानिकता एवं तार्किकता का समावेश भी कहानियों के जरिए ही होता है। आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान में कार्य-कारण संबंध बहुत महत्वपूर्ण होता है। ऐसे में यदि विज्ञान के महत्वपूर्ण सिद्धांतों को कहानी में बुनकर प्रस्तुत किया जाए, तो बच्चे सहज ही विज्ञान की ओर आकर्षित होंगे।

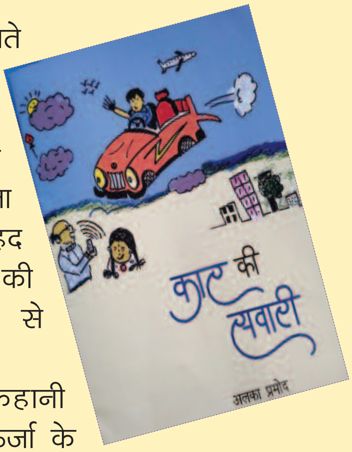

इसी दृष्टिकोण को अपनाते हुए लेखिका अलका प्रमोद जी ने एक किताब लिखी है 'कार की सवारी।' किताब का शीर्षक जिज्ञासा जगाता है। इसका मुखपृष्ठ भी बेहद आकर्षक है। इस किताब की पांचों विज्ञान कथाएं एक से बढ़कर एक हैं।

किताब की पहली कहानी 'कमाल की खोज' सौर ऊर्जा के इस्तेमाल में निहित अपार संभावनाओं को उजागर करती है। दूसरी कहानी 'मेरे प्यारे दादाजी' अपने बुजुर्गों के प्रति बच्चों की चिंता को व्यक्त करती है। इसमें यह बताया गया है कि विज्ञान के सिद्धांतों का प्रयोग करके बहुत सी मुश्किलों का हल घर में ही निकाला जा सकता है। इससे बच्चों का समय भी अच्छी तरह गुजरेगा और वे कुछ सार्थक सृजन भी कर पाएंगे। 'रोबोट की दुनिया' कहानी बहुत मजेदार कहानी है। आजकल के बच्चों को रोबोट की परिकल्पना में बहुत आनंद आता है। 'नहीं करूंगा युद्ध' कहानी परमाणु युद्ध के दुष्प्रभावों को उजागर करती है।

किताब की अंतिम कहानी 'कार की सवारी' ऐसी कार की परिकल्पना पर आधारित है, जो ना सिर्फ सड़क पर चलती है बल्कि आसमान में उड़ती भी है।

यह पुस्तक निःसंदेह बच्चों को पसंद आएगी क्योंकि विज्ञान की तकनीकी शब्दावली से कहानियों को बोझिल न बनाते हुए अत्यंत सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है। इस वृहद आकार की पुस्तक में अक्षरों का आकार भी सामान्य से बड़ा है

समीक्षक : डॉ. अलका जैन 'आराधना'

पुस्तक : दो बहादुर लड़के
लेखक : हेमंत यादव 'शशि'
प्रकाशक : अपोलो प्रकाशन, जयपुर
प्रकाशन वर्ष : 2021
मूल्य : 200

हेमंत यादव जी वरिष्ठ बाल लेखक हैं। करीब चार दशक से वह बाल कहानियां लिख रहे हैं, परंतु किताब के रूप में सामने रखने का यह उनका पहला प्रयास है।

इस पुस्तक में 16 बाल कहानियां हैं। इन बाल कहानियों में शायद पुरानी के साथ नई कहानियां भी हैं। कहानियां छोटी-छोटी, मगर मजेदार हैं और हर कहानी में मुख्य रूप से बात उभरकर आती है कि लेखक बच्चों तक कोई ना कोई संदेश पहुंचाना चाहता है। केवल मनोरंजन करना उनका उद्देश्य नहीं है। वह चाहते हैं कि बच्चे बहादुर बनें, समय के हिसाब से फैसले लें और तत्परता दिखाना सीखें।

पहली कहानी 'लिटिल चैंप' पशु-पक्षियों पर आधारित है और आजकल के बच्चों के लिए रियलिटी शो से प्रभावित होकर लिखी गई है। इससे उन्होंने बच्चों तक संदेश पहुंचाया है कि हार जीत को छोड़कर अपनी प्रतिभा को निखारने पर ही ध्यान देना चाहिए। शीर्षक कहानी 'दो बहादुर लड़के' ऐसे बच्चों पर आधारित है, जो गांव में पशु चोर ग्रुप के आतंकी चोरों को पकड़ते हैं और मुखिया के हवाले कर देते हैं। 'ईमानदारी' कहानी बच्चों को यह सिखाती है कि हमेशा अपने ईमान को आगे रखो और किसी गरीब को दुख मत पहुंचाओ। 'स्वाभिमानी युवक' राजा-रानी के जमाने की कहानी है जिसमें एक युवक अपने स्वाभिमान के लिए राजा के सामने भी खरी-खरी बातें कहने से नहीं चूकता। 'बचपन' कहानी टॉम एंड जेरी की याद दिलाती है तो तो 'शाबाश हीरो' कहानी बच्चे को किसी भी रूप में घबराने से ऊपर आने की संदेश देती है।

इस तरह सारी कहानियां एक से बढ़कर एक हैं और मनोरंजन के साथ-साथ बच्चों को कुछ ना कुछ सिखाती हैं। हेमंत जी की भाषा बहुत सरल और सहज है, जो बच्चे बड़ी आसानी से समझ सकते हैं। किताब की छपाई अच्छी है, फोंट बड़े हैं जिससे पढ़ने में दिक्कत नहीं होती।

समीक्षक : अनिल जायसवाल

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ–साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं––

✦ संरक्षक बनकर ✦ मासिक अनुदान देकर ✦ यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर ✦ विज्ञापन देकर ✦ हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर ✦ किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें––

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**